सूर्योदय 6:19 सूर्यास्त 6:35

आज का तापमान

शिमला	08.4 न्यू	16.4 अधि
धर्मशाला	07.2 न्यू	22.0 अधि

बाजार

सेंसेक्स	74,068
निफ्टी	22,912
सोना 1,39,000	चांदी 2,20,000

www.anantgyaan.in

अनंत ज्ञान

आरएनआई नं. HPHIN/25/A0284 | कांगड़ा | बुधवार, 25 मार्च 2026 | 12 चैत्र, विक्रमी संवत 2083 | वर्ष 3, अंक 85, कुल पृष्ठ 14 | मूल्य : 5 रुपए | डाक पंजीकरण संख्या : HP/DO/DEHRA/01/2026-2028 follow us on: 8894521702

चैत्र नवरात्र

सप्तम स्वरूप मां कालरात्रि

मां कालरात्रि दुष्टों का नाश करने वाली देवी हैं। दानव, दैत्य, राक्षस, भूत, प्रेत आदि इनके स्मरण मात्र से भयभीत हो जाते हैं। इनका रंग काला एवं बाल बिखरे हुए हैं। इनके तीन नेत्र एवं चार भुजाएं हैं। गर्दभ इनका वाहन है और ये दाहिने हाथों में तलवार तथा नरमुद्रा एवं बाएं हाथ में ज्वाला तथा अभय मुद्रा धारण करती हैं। ऊपर से भयानक, परंतु अंतराल में स्नेह का भंडार हैं। इनके गले में विद्युत जैसी छटा देने वाली सफेद माला सुशोभित रहती है। मां कालरात्रि का स्वरूप भयानक है, लेकिन वे भक्तों को शुभ फल देती हैं। भयानक स्वरूप होने के बावजूद शुभ फल देने वाली मां कालरात्रि को इसी गुण के कारण 'शुभंकरी' भी कहा जाता है। यह देवी जीवन में आने वाली सभी ग्रह-बाधाओं को दूर करती हैं। सृष्टि संचालन और सृष्टि संयोजन इन्हीं मां काली की कृपा का फल है। जिन वस्तुओं और प्राणियों से जीव दूर भागता है, वे मां काली को प्रिय हैं। इनकी पूजा-अर्चना करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है और दुश्मनों का नाश होता है। इनकी पूजा में जागरण का विशेष महत्व बताया गया है।

मंत्र : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

13 साल के दर्द के बाद हिमाचल का बेटा हरीश राणा इच्छामृत्यु को प्राप्त

दिल्ली एम्स में ली अंतिम सांस, दर्द से मिली मुक्ति
कांगड़ा के जयसिंहपुर के पलेटा गांव के थे हरीश

एजेंसी, नई दिल्ली

पिछले 13 साल से कॉमा में पड़े हिमाचल के हरीश राणा का दिल्ली एम्स में निधन हो गया है। सुप्रीम कोर्ट से इच्छामृत्यु की इजाजत मिलने के बाद हरीश राणा को बीते रविवार को दिल्ली के एम्स में शिफ्ट किया गया था, जहां डॉक्टरों की निगरानी में उनकी इच्छामृत्यु की प्रक्रिया पूरी की गई। करीब 13 साल पहले हरीश चंडीगढ़ में अपने पीजी के चौथे फ्लोर से गिर गए थे, जिसके बाद से ही वह कॉमा में थे। उनके ठीक होने की उम्मीदें टूटने के बाद परिवार ने हरीश के लिए सुप्रीम कोर्ट से इच्छामृत्यु मांगी थी और आखिरकार उन्हें 13 एमसाल के दर्द से मुक्ति मिल गई।

हरीश राणा का अंतिम संस्कार दिल्ली में होगा या गाजियाबाद में, इस संबंध में अभी परिवार की तरफ से कोई जानकारी नहीं दी गई है। हरीश का परिवार मूल से रूप से हिमाचल प्रदेश का रहने वाला है, लेकिन बाद में उनके पिता परिवार को लेकर दिल्ली आ गए थे। हरीश के इलाज के लिए उनके पिता को दिल्ली का अपना घर बेचना पड़ा और पूरा परिवार गाजियाबाद में एक छोटे से फ्लैट में आकर रहने लगा था।

हरीश इच्छामृत्यु पाने वाले पहले व्यक्ति

भारत में इच्छामृत्यु पाने वाले हरीश राणा पहले व्यक्ति थे। हरीश उस समय पंजाब यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे, जब यह दर्दनाक हादसा हुआ। वह चंडीगढ़ स्थित अपने पीजी में फोन पर अपनी बहन से बातें कर रहे थे कि अचानक चौथे फ्लोर से नीच गिर गए। हादसे में उनकी कमर और सिर में गहरी चोटें आईं और वह कॉमा में चले गए। परिवार ने उनके इलाज के लिए सबकुछ किया, लेकिन हरीश फिर से खड़े ना हो सके।

फाइल फोटो

सबसे माफी मांगते हुए, सबको माफ करते हुए गए हरीश

सुप्रीम कोर्ट ने उनके पिता की अर्जी पर सुनवाई करते हुए इच्छामृत्यु की इजाजत दी थी। कोर्ट ने अपने फैसले में दिल्ली के एम्स को निर्देश दिया कि हरीश के लाइफ सपोर्ट को एक सुनियोजित तरीके से हटाया जाए, ताकि उनकी गरिमापूर्ण मृत्यु हो सके। एम्स में शिफ्ट किए जाने से पहले एक ब्रह्म कुमारी कोमल ने उनका तिलक किया और कहा कि सबको माफ करते हुए और सबसे माफी मांगते हुए सो जाओ।

मातम में डूबा पैतृक गांव पलेटा

जयसिंहपुर। कांगड़ा जिला के जयसिंहपुर की सरी पंचायत के छोटे से गांव पलेटा में आज जैसे ही हरीश राणा के निधन की खबर मिली तो गांववासी मातम में डूब गए। हर ओर खामोशी का मंजर था। हरीश राणा के पिता अशोक राणा ने 1989 में अपना पैतृक गांव छोड़कर दिल्ली की ओर रुख किया था, ताकि बच्चों का भविष्य बेहतर बन सके। मां निर्मला देवी ने हर सपना संजोकर रखा था और तीन भाई-बहनों में सबसे बड़े हरीश परिवार की सबसे बड़ी उम्मीद थे, लेकिन आज यह परिवार पूरी तरह से टूट चुका है। बेटे को बेशक असहनीय दर्द से मुक्ति मिल गई हो, लेकिन उसके जाने का गम मां-बाप को हमेशा सालता रहेगा।

स्क्रैप पॉलिसी लाएगी सुक्खू सरकार

सरकारी कार्यालयों, स्कूलों और थानों में बेकार पड़ा सामान हटाया जाएगा

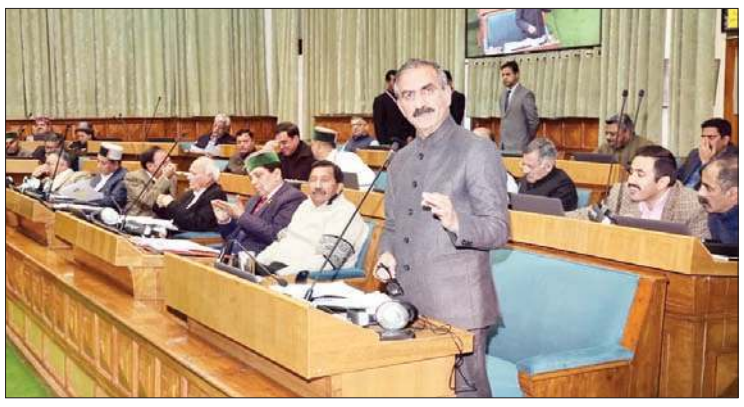

सदन में स्क्रैप पॉलिसी के बारे में जानकारी देते सीएम सुक्खू। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य के विभिन्न विभागों और सरकारी कार्यालयों में वर्षों से पड़े कबाड़ (स्क्रैप) को ठिकाने लगाने के लिए जल्द नई स्क्रैप पॉलिसी लाने की तैयारी कर रही है। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने मंगलवार को विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान कहा कि इस मुद्दे पर अगली कैबिनेट बैठक में चर्चा की जाएगी और कबाड़ के निपटारे के लिए स्पष्ट नियम बनाकर नीतिगत फैसला लिया जाएगा, ताकि हर साल व्यवस्थित तरीके से स्क्रैप को हटाया जा सके।

विधानसभा में विधायक केवल सिंह पठानिया के सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के अलग-अलग विभागों में करोड़ों रुपए का कबाड़ लंबे समय से पड़ा है। इसे हटाने के लिए सभी विभागों के लिए एक समान नियम बनाए जाएंगे, जिससे स्क्रैप का पारदर्शी और व्यवस्थित तरीके से निपटान हो सके।

इस दौरान लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने भी कहा कि स्क्रैप का मुद्दा केवल एक विभाग तक सीमित नहीं है बल्कि यह सभी विभागों से जुड़ा हुआ विषय है। उन्होंने बताया कि लोक निर्माण विभाग के स्क्रैप को ठिकाने लगाने के लिए भी अलग से नीति बनाई जाएगी और अधिकारियों को समयबद्ध तरीके से इस पर काम करने के निर्देश दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि नीति बनाते समय यह भी ध्यान रखा जाएगा कि स्क्रैप के निपटारे से पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे।

जल जीवन मिशन के 1227 करोड़ रुपए केंद्र के पास लंबित : डिप्टी सीएम

उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने विधानसभा में जानकारी दी कि जल जीवन मिशन के तहत केंद्र सरकार के पास राज्य के 1227 करोड़ रुपए लंबित हैं। उन्होंने कहा कि इस राशि को जारी करवाने के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही है और जैसे ही केंद्र से पैसा मिलेगा, मिशन के रुके हुए कामों को पूरा किया जाएगा। उन्होंने विपक्ष से भी आग्रह किया कि इस राशि को जल्द जारी करवाने में सहयोग करें। उपमुख्यमंत्री ने विधायक बलबीर सिंह वर्मा के उस आरोप को भी खारिज किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि विपक्ष के विधायकों के क्षेत्रों में योजनाओं पर पैसा खर्च नहीं हो रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जल जीवन मिशन की राशि योजना-वार जारी होती है और इसे सत्ता पक्ष या विपक्ष के आधार पर खर्च नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि संबंधित क्षेत्रों की योजनाओं को पूरा करने के लिए सरकार पूरी कोशिश करेगी और इसके लिए विधायक मुख्यमंत्री से भी मिल सकते हैं, क्योंकि वित्त विभाग भी मुख्यमंत्री के पास है। विधानसभा में विधायक रणधीर शर्मा ने सुझाव दिया कि विपक्ष के विधायकों के क्षेत्रों की योजनाओं की डीपीआर तैयार कर उन्हें नाबार्ड भेजा जाए, ताकि उनके लिए बजट का प्रावधान हो सके। इस दौरान उपमुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि पिछली भाजपा सरकार के कार्यकाल में जल जीवन मिशन की राशि से करीब 28 करोड़ रुपए की लागत से रेस्ट हाउस बनाए गए थे। उन्होंने कहा कि अब केंद्र सरकार इस पर सवाल उठा रही है और उस राशि को वापस मांग रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भविष्य में जल जीवन मिशन की राशि से रेस्ट हाउस नहीं बनाए जाएंगे और जहां जरूरत होगी, वहां अन्य स्रोतों से रेस्ट हाउस बनाए जाएंगे।

महिला अफसर सेना में स्थायी कमीशन की हकदार : सुप्रीम कोर्ट

एजेंसी, नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना में शॉर्ट सर्विस कमीशन (एसएससी) की महिला अफसरों को पूरी पेंशन देने का आदेश दिया। जिन मामलों में महिला अफसर परमानेंट कमीशन (पीसी) नहीं मिलने के कारण पहले ही सेवा छोड़ चुकी थीं, उन्हें एकमुश्त राहत देते हुए 20 साल की सेवा पूरी मानकर पेंशन और अन्य लाभ देने का फैसला सुनाया।

कोर्ट ने कहा कि सशस्त्र बलों के भीतर मौजूद सिस्टमिक भेदभाद के कारण महिला अफसरों को परमानेंट कमीशन से वंचित किया गया। महिलाओं को परमानेंट कमीशन न देना उनकी योग्यता की कमी नहीं, बल्कि व्यवस्था में मौजूद भेदभाव का नतीजा था। पूरा मामला एसएससी के तहत नियुक्त महिला अफसरों की याचिकाओं से जुड़ा था, जिन्होंने पीसी देने की मांग की थी। एसएससी के तहत नियुक्त अफसर का कार्यकाल 10 साल का होता है, जिसे 4 साल तक बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद योग्यता के आधार पर परमानेंट कमीशन दिया जाता है।

परमानेंट कमीशन नहीं मिलने पर उन्हें सेवा छोड़नी होती है। इसके खिलाफ महिला अफसरों ने पहले आर्म्ड फोर्स ट्रिब्यूनल का रुख किया था और पीसी से वंचित किए जाने को चुनौती दी थी। बाद में मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, जहां चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस उज्जल भुइयां और जस्टिस एन. कोटिस्वर सिंह की बेंच ने कई याचिकाओं को एक साथ सुना। (अनंत ज्ञान)

हिंदू, सिख और बौद्ध के अलावा अन्य धर्म अपनाने वालों को नहीं मिलेगा एससी का दर्जा : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एससी-एसटी एक्ट को लेकर मंगलवार को एक बड़ा फैसला सुनाया। अदालत ने फैसले में कहा कि जो व्यक्ति हिंदू धर्म, सिख धर्म या बौद्ध धर्म के अलावा किसी अन्य धर्म को अपनाता है तो उसे अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं माना जा सकता। कोर्ट ने कहा कि किसी अन्य धर्म अपनाने पर अनुसूचित जाति का दर्जा तुरंत और पूरी तरह से खत्म हो जाता है। जस्टिस पीके मिश्रा और जस्टिस एनवी अंजारिया की पीठ ने फैसला सुनाया कि किसी अन्य धर्म में धर्मांतरण करने से अनुसूचित जाति का दर्जा समाप्त हो जाता है। 1950 के संविधान आदेश के तहत निर्धारित धर्मों के बाहर जाने पर अनुसूचित जाति का दर्जा स्वतः समाप्त माना जाएगा। (अनंत ज्ञान)

न्यूज शॉर्ट्स

27 मार्च को स्पाइस जेट का सफर होगा महंगा

अनंत ज्ञान, गगल। कांगड़ा एयरपोर्ट से दिल्ली एयरपोर्ट तक का सफर 27 मार्च को चार गुना महंगा होगा, क्योंकि 27 मार्च को केवल दो ही स्पाइसजेट के विमान अपने सेवाएं देंगे। जिसके चलते स्पाइसजेट का सुबह का विमान सुबह सात बजकर 55 मिनट पर टेक ऑफ करेगा और 9 बजकर 20 मिनट पर दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंड करेगा और किराया होगा 24171 रुपए। वहीं, दूसरा स्पाइसजेट का विमान 11 बजकर 50 मिनट पर टेक ऑफ करेगा और एक बजकर बीस मिनट पर दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंड करेगा। जिसका किराया मात्र 22674 रुपए होगा। इस दिन केवल दो ही विमान अपनी सेवाएं देंगे।

नीतीश कुमार चुने जेडीयू के निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष

एजेंसी, पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को एक बार फिर जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्विरोध चुना गया है। यह चौथी बार है जब उन्होंने पार्टी की कमान संभाली है। इससे पहले वे 2016 और 2018 में अध्यक्ष रह चुके हैं। संगठनात्मक बदलावों के बाद 2023 में भी उन्होंने नेतृत्व संभाला था और अब 2026 में फिर से उनकी ताजपोशी हुई है, जिससे पार्टी पर उनकी मजबूत पकड़ स्पष्ट होती है। (अनंत ज्ञान)

जोमैटो के बाद स्वीगी ने बढ़ाई प्लेटफार्म फीस

एजेंसी, नई दिल्ली। ऑनलाइन फूड ऑर्डर करने वालों के लिए अब खर्च बढ़ने वाला है। जोमैटो के बाद स्विगी ने भी अपनी प्लेटफॉर्म फीस में करीब 17 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर दी है। पिछले सात महीनों में यह चौथी बार है जब कंपनी ने फीस बढ़ाई है। इससे ग्राहकों को हर ऑर्डर पर अतिरिक्त भुगतान करना होगा, जिससे कुल बिल पहले से ज्यादा आएगा और फूड डिलीवरी सेवाएं महंगी हो जाएंगी। (अनंत ज्ञान)

अंदर के पन्नों पर पढ़ें

- आलू की खेती में एआई से होगी क्रांति -पेज 2
- सदन में विज्ञापन खर्च को लेकर तीखी बहस -पेज 3
- टमक की थाप के साथ राज्यस्तरीय लिदबड़ मेला शुरू -पेज 5
- लोगों में सोलर एनर्जी की ओर बढ़ने लगा रुझान -पेज 10
- 15 हजार करोड़ में बिकी राजस्थान रॉयल्स -पेज 14

खुलासा : शादी से इनकार पर प्रेमी ने यशिका की गला दबाकर की थी हत्या

अनंत ज्ञान फॉलोअप

अनंत ज्ञान, सोलन। सोलन जिले में बीते सप्ताह एक युवक और युवती की लाशें मिलने के मामले का पोस्टमार्टम में खुलासा हुआ है। ज्ञात रहे कि परवाणू पुलिस थाना के तहत भोजनगर गांव समीप करालघाट के जंगल में दो लाशें मिली थी। जांच और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सामने आया है कि युवक ने ही पहले युवती की गला दबाकर हत्या की और फिर खुद की भी जान ले ली थी। शिमला के आईजीएमसी अस्पताल की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में खुलासा हुआ है।

बताया जा रहा है कि आरोपी युवक-युवती पर शादी के लिए दबाव डाल रहा था, लेकिन युवती शादी नहीं करना चाहती थी। 16 मार्च को युवक ने युवती को मिलने के लिए बुलाया और फिर दोनों जंगल में पहुंचे। युवक-युवती जंगल में पहुंचे और फिर दोनों में शादी को लेकर बहस हुई। जब लड़की नहीं मानी तो उसकी युवक ने हत्या कर दी और फिर खुद पेड़ से लटक गया।

मौके के पास से गुजर रहे एक वाहन चालक ने दोनों शव देखे थे। चालक करालघाट देवता के मंदिर गया था और फिर लौटते वक्त लाशें देखी। मौके पर डीएसपी परवाणु अनिल शर्मा और भोजनगर पुलिस चौकी की टीम मौके पर पहुंची थ।. मृतक युवक की पहचान कर्ण (22) निवासी खील को मोड़ (पडगयानी) और युवती की पहचान यशिका लामा (20) निवासी नेपाल के रूप में हुई थी। युवती मौजूदा समय में गौतम बुद्ध विहार देउंघाट में रहती थी।

हिमाचल में 8 आईएएस सहित 17 अधिकारियों के तबादले

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। हिमाचल प्रदेश सरकार ने पंचायत चुनाव से ठीक पहले मंगलवार शाम बड़े स्तर पर प्रशासनिक फेरबदल करते हुए 8 भारतीय प्रशासनिक सेवा, एक भारतीय वन सेवा और 8 हिमाचल प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के तबादले और नई नियुक्तियों के आदेश जारी किए हैं।

इस व्यापक बदलाव को प्रशासनिक कसावट और चुनावी व्यवस्था को सुचारु बनाने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। मुख्य सचिव संजय गुप्ता द्वारा जारी आदेशों के तहत कई जिलों और विभागों में नई जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं, जिससे शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली में तेजी आने की उम्मीद है। इस फेरबदल के तहत भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी संदीप कुमार को कांगड़ा का संभागीय आयुक्त नियुक्त किया गया है, जबकि दुनी चंद राणा को हिमाचल प्रदेश विपणन निगम का प्रबंध निदेशक बनाया गया है। राम कुमार गौतम को कृषि विपणन बोर्ड का प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया है। वहीं, गुंजीत सिंह चीमा को मनाली का उपमंडलाधिकारी बनाया गया है। इसके अलावा मनमोहन सिंह को उपायुक्त कार्यालय चंबा में सहायक आयुक्त, कृष्ण कुमार शर्मा को सरकाघाट में उपमंडलाधिकारी (नागरिक) और रमन कुमार शर्मा को कफोटा (सिरमौर) में उपमंडलाधिकारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

प्रशासनिक फेरबदल के इस दौर में नागरिक आपूर्ति, पर्यावरण और सहकारी क्षेत्र में भी अहम बदलाव किए गए हैं। श्रवण कुमार को हिमाचल प्रदेश राज्य नागरिक आपूर्ति निगम का कार्यकारी निदेशक बनाया गया है, जबकि विनय सिंह को राज्य सहकारी बैंक का प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया है। भारतीय वन सेवा अधिकारी पुष्पेंद्र राणा को पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का निदेशक बनाया गया है। इसके अलावा कई अन्य अधिकारियों को विभिन्न जिलों में नई जिम्मेदारियां देकर प्रशासनिक ढांचे को और मजबूत करने का प्रयास किया गया है।

सीसीटीवी कैमरों से वीडियो फुटेज जा रहे थे पाकिस्तान, होगी जांच

एजेंसी, नई दिल्ली। दिल्ली से सटे गाजियाबाद में पाकिस्तान से जुड़े जासूसी रैकेट के खुलासे के बाद सीसीटीवी सिस्टम की सुरक्षा पर सवाल उठे हैं। जांच में सामने आया कि संवेदनशील जगहों पर लगाए गए कैमरों का लाइव फुटेज सीमा पार पाकिस्तान भेजा जा रहा था। इसके बाद केंद्र सरकार ने देशभर में सीसीटीवी नेटवर्क की जांच का फैसला लिया है। सूत्रों के मुताबिक, गृह मंत्रालय ने आईबी और दूसरी एजेंसियों के साथ मिलकर देशभर के सीसीटीवी नेटवर्क का ऑडिट शुरू करने की तैयारी में है।

◆ अप्रैल से बिकेंगे सिर्फ हैकिंगप्रूफ कैमरे

वहीं, एक अप्रैल से सिर्फ हैकिंगप्रूफ कैमरे ही बिकेंगे, जो सरकारी सुरक्षा जांच (एसटीक्यूसी सर्टिफिकेशन) पास करेंगे। भारत में 80% कैमरे चीन के हैं, जिनसे डेटा चोरी का खतरा बना रहता है। फिलहाल 7 कंपनियों के 53 मॉडल ही ऐसे हैं, जिन्हें सर्टिफाइड और सुरक्षित माना गया है। (अनंत ज्ञान)

ट्रंप ने ईरान पर हमले के लिए रक्षामंत्री को ठहराया दोषी

एजेंसी, वॉशिंगटन

ईरान के साथ अमेरिका और इजरायल अब जंग के 25वें दिन में प्रवेश कर चुके हैं। मगर ट्रंप के युद्ध रोकने के ऐलान के बावजूद दोनों पक्षों की ओर से हमले जारी हैं। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर हमला करने के लिए अपने रक्षामंत्री पीट हेगसेथ को ही दोषी बता दिया है।

एक प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए ट्रंप ने अपने बगल बैठे रक्षामंत्री पीट हेगसेथ की ओर इशारा करते हुए कहा कि अपने ही बोला था 'चलो कर देते हैं।' ट्रंप ने जब यह बात कही तो हेगसेथ की हवाइयां उड़ गईं, वह सिर्फ अपने राष्ट्रपति को मुंह ताकते रह गए।

विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार अमेरिका-इजरायल-ईरान युद्ध में मुख्य किरदार भले ही राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हैं, लेकिन उनके पीछे खड़े सबसे आक्रामक समर्थक उनके रक्षा सचिव पीट हेगसेथ हैं। इस महीने एएफपी ने उन्हें 'ट्रंप का अटैक डॉग' कहा था। फॉक्स न्यूज के पूर्व होस्ट और डेकोरेटेड सैनिक हेगसेथ खुद को 'अपरिभाषित युद्धों' का विरोधी बताते हैं, लेकिन मार्च की शुरुआत में जब आलोचकों ने इस युद्ध को 'अस्पष्ट' और 'खुला हुआ' बताया, तो उन्होंने उन पर जमकर हमला बोला। (अनंत ज्ञान)

उपलब्धि : सीआरआई कसौली की स्वदेशी टीडी वैक्सीन से मातृ एवं नवजात टिटनेस उन्मूलन को मिलेगी मजबूती

स्वदेशी टिटनेस व डिप्थीरिया वैक्सीन अब इंट्रा-मस्कुलर इंजेक्शन में उपलब्ध

अनंत ज्ञान

आर मोहन चौहान, सोलन। देश के केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सीआरआई) कसौली की तरफ से विकसित स्वदेशी टिटनेस और डिप्थीरिया (टीडी) वैक्सीन अब इंट्रा-मस्कुलर इंजेक्शन के रूप में उपलब्ध होगी, यानी यह वैक्सीन कंधे या हिप में लगाई जा सकेगी, जिससे लोगों को सुविधा मिलेगी। इसके दाम किफायती है और यह प्रदेश सरकार द्वारा खरीदकर सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) में शामिल की जाएगी।

अनंत ज्ञान स्पैशल

वैक्सीन की विशेषताएं और लाभ पहले टिटनेस और डिप्थीरिया के लिए अलग-अलग टीके लगते थे, लेकिन अब एक ही इंजेक्शन दोनों बीमारियों से सुरक्षा देगा। वैक्सीन की डोज मात्रा बढ़ाई गई है, जिससे गर्भवती महिलाओं और वयस्कों को भी लगाया जा सकेगा। अप्रैल 2026 तक 55 लाख डोज तैयार हो जाएंगी, जो अस्पतालों में आसानी से उपलब्ध होंगी।

सीआरआई कसौली के वैज्ञानिकों ने 2016 से शोध शुरू किया। हालांकि, कोविड काल में बाधाएं आईं। केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला (सीडीएल) ने इसकी गुणवत्ता की पुष्टि की और विपणन लाइसेंस प्राप्त हुआ। हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने इसे औपचारिक रूप से लॉन्च किया था।

इंट्रा-मस्कुलर इंजेक्शन मांसपेशियों में दवा देने की विधि है, जो कंधे, जांघ या हिप में लगाया जाता है। यह तरीका दवा के तेज अवशोषण के लिए प्रभावी है। यूआईपी में शामिल होने से मातृ एवं नवजात टिटनेस उन्मूलन को मजबूती मिलेगी।

क्या कहते हैं सीआरआई के सहायक निदेशक

इस वैक्सीन का लक्ष्य टिटनेस के साथ डिप्थीरिया से सुरक्षा बढ़ाना है। डॉ. यशवंत कुमार, सीआरआई के सहायक निदेशक ने पुष्टि की कि अप्रैल तक आपूर्ति सुनिश्चित होगी। इससे टीकाकरण अभियान अधिक समावेशी बनेगा।

अस्पतालों में होगी उपलब्ध

स्वदेशी वैक्सीन आसानी से अस्पतालों में उपलब्ध हो जाएगी और यूआईपी के तहत लगवाने में भी आसानी होगी। खास बात ये है कि संस्थान की ओर से वैक्सीन के लिए विपणन प्राधिकरण और निर्माण एवं बिक्री के लिए लाइसेंस प्राप्त किया। इसके बाद ही संस्थान की ओर से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया। यही नहीं टिटनेस और डिप्थीरिया (टीडी) की गुणवत्ता और विश्वसनीयता की जांच के बाद केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला (सीडीएल) कसौली ने भी हरी झंडी दे दी है।

माता दुर्गा मंदिर हाटकोटी में उमड़ा आस्था का सैलाब

कात्यायनी माता के पूजन के साथ श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा के चरणों में झुकाया शीश

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। प्रदेश की राजधानी शिमला से दूर स्थित प्रसिद्ध माता हाटकोटी मंदिर में नवरात्रों के पावन अवसर पर इन दिनों भक्ति और आस्था का अद्भुत माहौल देखने को मिल रहा है। मौसम साफ रहने से मंदिर परिसर व आसपास का इलाका श्रद्धालुओं की भारी भीड़ से गुलजार हो उठा है। दूर-दराज़ क्षेत्रों से भक्तजन मां महिषासुर मर्दिनी के दिव्य स्वरूप के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं और पूरा वातावरण जयकारों व भजनों से गूंज रहा है।

नवरात्र के इस पावन पर्व में आज छठा दिन मां कात्यायनी को समर्पित रहा, जहां श्रद्धालुओं ने विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना कर मां का आशीर्वाद प्राप्त किया। मान्यता है कि मां कात्यायनी शक्ति और साहस की प्रतीक हैं, जो अपने भक्तों के कष्टों का नाश कर उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करती हैं। मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा और भक्ति गीतों व कीर्तन से माहौल पूरी तरह श्रद्धामय बन गया। भक्तजन मां के दरबार में अपनी मुरादें लेकर पहुंचे और मन ही मन अपनी इच्छाओं की पूर्ति की कामना करते नजर आए।

माता दुर्गा के दरबार में माथा टेकते श्रद्धालु। अनंत ज्ञान

माता हाटकोटी मंदिर में हर वर्ष की तरह इस बार भी नवरात्रों के दौरान भारी रौनक देखने को मिल रही है। पहाड़ों की वादियों के बीच बसे इस पवित्र धाम में पहुंचकर श्रद्धालु एक अलग ही सुकून और रूहानी एहसास कर रहे हैं। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की चहल-पहल और भक्तिभाव से ओत-प्रोत माहौल हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

मंदिर समिति की ओर से जानकारी दी गई है कि नवरात्रों के दौरान हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंच रहे हैं और सभी के लिए उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। भक्तजन मां के दरबार में आकर अपनी मन्नतें मांग रहे हैं और यहां से एक नई उम्मीद और दुआओं के साथ लौट रहे हैं।

इस दौरान मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की आस्था का आलम ऐसा रहा कि हर ओर भक्ति का नूर और मां की रहमत का एहसास साफ झलक रहा था। कीर्तन, भजन और जयकारों के बीच श्रद्धालु खुद को मां की भक्ति में खोते नजर आए, और हाटकोटी धाम का नज़ारा सचमुच देखते ही बन रहा था।

प्रदेश के हजारों गांवों को कवर कर टीबी मुक्त बनाने की मुहिम शुरू: डॉ. शांडिल

100 दिवसीय अभियान (2.0) का शुभारंभ, राज्य सरकार मिशन मोड में जुटी

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। विश्व क्षय रोग दिवस के अवसर पर राज्य में टीबी मुक्त भारत अभियान (2.0) के तहत राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ कर्नल धनीराम शांडिल ने प्रदेश की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि टीबी उन्मूलन के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार मिशन मोड में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि केंद्रित रणनीति और ज़मीनी स्तर पर सशक्त क्रियान्वयन के माध्यम से इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की जा रही है।

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश में टीबी के मामलों में अब स्थिरता आई है और धीरे-धीरे गिरावट का क्रम भी शुरू हो चुका है। उन्होंने कहा कि दिसंबर 2024 में शुरू किए गए अभियान के पहले चरण में प्रदेश ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए लगभग 14.9 लाख अतिसंवेदनशील लोगों की पहचान कर उनकी जांच सुनिश्चित की और शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया। इनमें से 46 प्रतिशत लोगों की एक्स-रे जांच की

गई, जो राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोत्तम प्रदर्शन माना गया।

उन्होंने टीबी मुक्त ग्राम पंचायत पहल की सफलता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्ष 2023 में 731, वर्ष 2024 में 823 और वर्ष 2025 में 1052 ग्राम पंचायतों को टीबी मुक्त घोषित किया गया है। इनमें से 233 पंचायतों को सिल्वर और 125 को गोल्ड अवार्ड के लिए चयनित किया जाना प्रदेश की बड़ी उपलब्धि है।

अभियान (2.0) के तहत प्रदेश के 5176 उच्च जोखिम वाले गांवों और शहरी वार्डों को कवर किया जाएगा। इस दौरान पुरानी बीमारियों से ग्रसित व्यक्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोगों की एआई आधारित पोर्टेबल एक्स-रे मशीनों से जांच की जाएगी। इसके साथ ही मोबाइल यूनिट और आयुष्मान आरोग्य शिविरों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जाएगा। इस अवसर पर स्थानीय विधायक हरीश जनारटा मैं भी अपने विचार प्रकट प्रकट किए।

विभिन्न संस्थाएं और टीबी चैंपियन सम्मानित

मिशन निदेशक एनएचएम प्रदीप ठाकुर ने अभियान को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इसका दूसरा चरण टीबी उन्मूलन में मील का पत्थर साबित होगा। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं और टीबी चैंपियन को सम्मानित किया गया, वहीं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

न्यूज ब्रीफ

3,500 करोड़ की कटौती चिंताजनक: महाजन

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला। राज्यसभा सांसद हर्ष महाजन ने राज्य सरकार के बजट पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि यह बजट हिमाचल को आर्थिक अस्थिरता की ओर ले जाने वाला है। उन्होंने कहा कि पिछले बजट की तुलना में करीब 3,500 करोड़ की कटौती चिंताजनक है और यह दर्शाता है कि सरकार के पास संसाधनों की भारी कमी है, जबकि दूसरी ओर बड़े-बड़े वादों की झड़ी लगाई जा रही है। शिमला से जारी बयान के अनुसार हर्ष महाजन ने बताया कि बजट का अधिकांश हिस्सा वेतन, पेंशन, ब्याज और कर्ज अदायगी में खर्च हो जाएगा, जिससे विकास कार्यों के लिए मात्र 20 प्रतिशत धन ही शेष बचेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि यही हाल रहा तो प्रदेश वित्तीय आपातकाल जैसी स्थिति में पहुंच सकता है, क्योंकि बढ़ता कर्ज और घटते संसाधन सरकार की वित्तीय प्रबंधन क्षमता पर गंभीर सवाल खड़े कर रहे हैं।

ऑनलाइन सुरक्षा को मजबूत करने की पहल

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला। डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं शासन विभाग ने जानकारी दी है कि भारत सरकार के इलैक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 के तहत गैर-सहमति से साझा की जाने वाली अंतरंग सामग्री के प्रसार को रोकने के लिए मानक प्रक्रिया जारी की है। यह कदम ऑनलाइन माध्यमों पर बढ़ते दुरुपयोग को रोकने और लोगों की निजता की रक्षा के उद्देश्य से उठाया गया है। जानकारी के अनुसार, ऐसी सामग्री में किसी व्यक्ति के निजी अंगों को दर्शाने वाली तस्वीरें, आंशिक या पूर्ण नग्नता, यौन क्रियाओं से जुड़ी सामग्री तथा बदली या छेड़छाड़ की गई तस्वीरें शामिल होती हैं। इस तरह की सामग्री व्यक्ति की गरिमा और गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन करती है, जिसे रोकने के लिए सरकार ने स्पष्ट दिशा-निर्देश तय किए हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर भी शिकायत दर्ज करने की सुविधा उपलब्ध है, जबकि त्वरित सहायता के लिए 1930 हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किए सम्मानित

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला। शिमला के गेयटी थिएटर में विश्व टीबी दिवस के अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वर्ल्ड टीबी डे एवं नशा मुक्त हिमाचल अभियान के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्कूली छात्र-छात्राओं और नर्सिंग कॉलेज के प्रशिक्षुओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य टीबी जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना रहा। अधिकारियों ने कहा कि सामूहिक प्रयासों से ही टीबी मुक्त समाज और स्वस्थ हिमाचल का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

रामपुर एचपीएस में कबड्डी टूर्नामेंट शुरू

अनंत ज्ञान, रामपुर बुशहर। रामपुर जलविद्युत स्टेशन में एसजेवीएन द्वारा आयोजित 25वें अंतर-सीपीएसयू कबड्डी टूर्नामेंट का शुभारंभ हुआ, जिसमें विभिन्न केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों की टीमें भाग ले रही हैं। उद्घाटन अवसर पर एसजेवीएन के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक भूपेंद्र गुप्ता सहित वरिष्ठ अधिकारियों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए खेलों के माध्यम से टीम भावना और कार्य दक्षता को बढ़ाने पर बल दिया। कार्यक्रम में गणेश वंदना, पहाड़ी नाटी और टीमों की मार्च-पास्ट ने हिमाचली संस्कृति की झलक पेश की। टूर्नामेंट के पहले दिन चार मुकाबले खेले गए, जिनमें एसजेवीएन, एनएचपीसी, पीजीसीआईएल और बीबीएमबी ने जीत दर्ज की। तीन दिवसीय यह प्रतियोगिता 26 मार्च तक चलेगी, जिसमें विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों की टीमें खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं।

शिविर में 53 यूनिट रक्त किया एकत्रित

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की विश्वविद्यालय इकाई द्वारा शहीदी दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान कुल 53 यूनिट रक्त एकत्रित कर शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ शहीदों के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अधिवक्ता डिकन ठाकुर और विशिष्ट अतिथि अश्वनी ठाकुर ने युवाओं को समाज सेवा और राष्ट्रहित में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

राज्यपाल से लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों ने की भेंट

भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता व दक्षता पर चर्चा

राज्यपाल के साथ राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व अन्य सदस्य। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। राज्यपाल कविंद्र गुप्ता से मंगलवार को लोकभवन में हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर सहित आयोग के अन्य सदस्यों ने शिष्टाचार भेंट की।

इस दौरान अध्यक्ष ने राज्यपाल को आयोग की वर्तमान गतिविधियों और पहलों से अवगत करवाते हुए परीक्षाओं के संचालन, भर्ती प्रक्रियाओं तथा विभिन्न सरकारी सेवाओं के लिए अभ्यर्थियों के चयन में पारदर्शिता, दक्षता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। बैठक में आयोग के कार्य संचालन से जुड़े विभिन्न प्रशासनिक और संस्थागत विषयों पर भी विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। राज्यपाल ने भर्ती प्रक्रिया में सुगमता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में आयोग की भूमिका की सराहना करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी आधारित आधुनिक प्रणालियों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष और विश्वसनीय भर्ती प्रणाली न केवल शासन में जन विश्वास को सुदृढ़ करती है बल्कि राज्य के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस अवसर पर आयोग के सदस्य कर्नल राजेश कुमार शर्मा, डॉ. पवनेश शर्मा, प्रो. ममता मोक्टा, राखिल काहलों, सचिव निवेदिता नेगी तथा अतिरिक्त सचिव छवि नांटा उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त रियल एस्टेट नियामक प्राधिकरण के अध्यक्ष आर.डी. धीमान ने भी राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट की।

जय श्रीराम के उद्घोष से गूंजा शिमला शहर

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला। शिमला में राम नवमी उत्सव के तहत सूद सभा द्वारा आयोजित भव्य शोभा यात्रा और प्रभात फेरी ने पूरे शहर को भक्तिमय माहौल में सराबोर कर दिया। सुबह के समय 'जय श्रीराम' के गूंजते उद्घोषों के बीच श्रद्धालु भक्ति में लीन नजर आए और वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठा। यह शोभा यात्रा राम मंदिर गंज बाजार से शुरू होकर गुरुद्वारा साहिब, लोअर बाजार और मॉल रोड होते हुए निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु, विद्यार्थी, सामाजिक संस्थाएं और भजन मंडलियां शामिल हुईं। कार्यक्रम की अध्यक्षता सूद सभा के अध्यक्ष राजीव सूद ने की, जबकि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर राजीव सूद ने कहा कि राम नवमी का यह पर्व इस वर्ष विशेष संयोग लेकर आया है, जो श्रीराम मंदिर निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक तिथि से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि नवरात्र के प्रथम दिन से ही उत्सव की शुरुआत कर दी गई थी और इन दिनों राम मंदिर में राम कथा एवं मूल पाठ का आयोजन निरंतर चल रहा है। 26 मार्च को मंदिर में यज्ञ और भंडारे का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सभी श्रद्धालुओं को आमंत्रित किया गया है।

पीएम मोदी से मिले जयराम, प्रदेश की आर्थिक हालत पर जताई चिंता

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। नई दिल्ली में पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार भेंट कर उन्हें जनसेवा में ऐतिहासिक उपलब्धियों के लिए बधाई दी। इस दौरान उन्होंने हिमाचल प्रदेश से जुड़े विभिन्न अहम मुद्दों को प्रधानमंत्री के समक्ष विस्तार से रखा और राज्य के हितों से संबंधित विषयों पर सार्थक चर्चा की। जयराम ठाकुर ने प्रधानमंत्री के नेतृत्व को देश के लिए प्रेरणास्रोत बताते हुए प्रदेश के विकास में सहयोग की अपेक्षा भी व्यक्त की।

प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए जयराम ठाकुर ने प्रदेश की मौजूदा आर्थिक स्थिति पर गंभीर चिंता जताई और सुक्खू सरकार पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल इस समय गहरे आर्थिक संकट से गुजर रहा है और सरकार के निर्णय हालात को और बिगाड़ रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के वेतन में कटौती और स्थगन को 'वित्तीय आपातकाल' जैसा संकेत बताते हुए कहा कि यह प्रदेश की कमजोर होती आर्थिक रीढ़ का स्पष्ट प्रमाण है।

नेता प्रतिपक्ष ने पेट्रोल-डीजल पर सेस लगाने और बाहरी वाहनों पर एंट्री टैक्स बढ़ाने के फैसलों को जनविरोधी और अव्यावहारिक करार दिया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि पड़ोसी राज्यों ने भी जवाबी कदम उठाए तो इसका सीधा असर हिमाचल के पर्यटन और आम जनता पर पड़ेगा। उन्होंने कहा कि विपक्ष प्रदेश को इस संकट से उबारने के लिए रचनात्मक सहयोग देने को तैयार है, लेकिन सरकार को जनहित में ठोस और व्यवहारिक फैसले लेने होंगे।

पैरा मिलिट्री वेलफेयर बोर्ड गठन पर सीएम का आभार

ऐतिहासिक फैसले से पैरा मिलिट्री कर्मियों व वीर नारियों को मिलेगा लाभ

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। हिमाचल प्रदेश राज्य एक्स-पैरा मिलिट्री कॉर्डिनेशन एंड वेलफेयर एसोसिएशन ने बजट 2026-27 में पैरा मिलिट्री वेलफेयर बोर्ड के गठन की घोषणा को ऐतिहासिक करार देते हुए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू का आभार व्यक्त किया है। मंगलवार को एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल ने शिमला में मुख्यमंत्री से भेंट कर उन्हें सम्मानित किया और इस महत्वपूर्ण निर्णय के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि लंबे समय से लंबित यह मांग पूरी होने से पैरा मिलिट्री बलों के कर्मियों, वीर नारियों तथा उनके परिवारों को सीधा लाभ मिलेगा।

प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि यह निर्णय मुख्यमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व और पैरा मिलिट्री समुदाय के प्रति उनकी संवेदनशील सोच को दर्शाता है। इस पहल से न केवल प्रभावित परिवारों में नई उम्मीद जगी है, बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को भी बल

सीएम सुखविंद्र सुक्खू का आभार जताते हुए। अनंत ज्ञान

मिलेगा। एसोसिएशन ने इस मुद्दे को प्रभावी ढंग से उठाने और इसे साकार रूप देने में उप-मुख्य सचेतक केवल सिंह पठानिया की भूमिका की सराहना करते हुए अन्य विधायकों के सहयोग के लिए भी आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश सरकार पूर्व सैनिकों और पैरा मिलिट्री कर्मियों के कल्याण के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध है और उनके हितों की रक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि वेलफेयर बोर्ड का गठन राज्य में पैरा मिलिट्री समुदाय के कल्याण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

आर्मी ट्रेनिंग कमांड अलंकरण समारोह 2026 में उत्कृष्टता का सम्मान

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सैन्य कर्मी नवाजे

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। शिमला स्थित डैन्फे ऑडिटोरियम में मंगलवार को आर्मी ट्रेनिंग कमांड का अलंकरण समारोह 2026 गरिमामय वातावरण में आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र शर्मा ने की।

समारोह में प्रशिक्षण वर्ष 2025-26 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रशिक्षण संस्थानों और सैन्य कर्मियों को सम्मानित किया गया। चार श्रेणी 'ए' के प्रमुख प्रशिक्षण संस्थानों सहित कई संबद्ध इकाइयों को यूनिट प्रशस्ति प्रदान की गई, जबकि वित्तीय प्रबंधन, डिजिटाइजेशन और ऑटोमेशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले संस्थानों को भी विशेष पुरस्कारों से नवाजा गया।

इसके अलावा तकनीकी नवाचार के लिए चयनित प्रतिभागियों को 11 तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार और 16 कर्मियों को विशिष्ट सेवा के लिए स्पॉट प्रशंसा पत्र प्रदान किए

सैन्य कर्मी को सम्मानित करते हुए आर्मी कमांडर। अनंत ज्ञान

गए। समारोह को संबोधित करते हुए आर्मी कमांडर ने कहा कि पुरस्कार विजेता संगठन की उपलब्धियों की धुरी हैं और उनकी प्रतिबद्धता सेना के भविष्य को दिशा दे रही है।

उन्होंने 'परिवर्तन के दशक' के अंतर्गत संचालित पहलों का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक युद्ध में ड्रोन तकनीक अब अनिवार्य बन चुकी है और अब तक 50 हजार से अधिक कर्मियों को इसका प्रशिक्षण दिया जा चुका है। उन्होंने वर्ष 2030 तक 33 विशिष्ट तकनीकों के लिए 15 संस्थानों को विशेषज्ञता केंद्र के रूप में विकसित करने, प्रशिक्षण प्रणाली में व्यापक सुधार और ऑनलाइन परीक्षाओं के विस्तार जैसे कदमों की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने संयुक्तता, आत्मनिर्भरता और नवाचार के माध्यम से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर सीखने और नई तकनीकों को अपनाने का आह्वान किया।

अघोषित बिजली कटौती से कोटखाई में हाहाकार, बागवान व व्यापारी बेहाल

अनंत ज्ञान

- बार-बार गुल हो रही बिजली से जनजीवन अस्त-व्यस्त
- स्प्रे कार्य ठप होने से बागवान परेशान
- प्रशासन से त्वरित समाधान की मांग

ब्यूरो, शिमला। कोटखाई, गुम्मा और बाघी क्षेत्र में लगातार हो रही अघोषित बिजली कटौती ने आम जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। बिना किसी पूर्व सूचना के बार-बार बिजली गुल होने से लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। घरों से लेकर कार्यालयों तक कार्य बाधित हो रहे हैं, जिससे क्षेत्र में रोष का माहौल बना हुआ है।

इस समस्या का सबसे अधिक असर बागवानों और व्यापारियों पर पड़ रहा है। बागवानों का कहना है कि समय पर स्प्रे न होने से फसलों को नुकसान होने का खतरा बढ़ गया है, वहीं कोटखाई और गुम्मा बाजार के व्यापारी भी कारोबार प्रभावित होने से चिंतित हैं। तहसील मुख्यालय में भी बिजली संकट के चलते दूर-दराज से आए लोगों को बिना काम करवाए लौटना पड़ रहा है।

स्थानीय लोगों में अशोक जस्टा, सुनील चौहान, विशाल भीकटा, राजीब डोटका, ज्ञान ठाकुर, प्रदीप भोलटा, रितेश चौहान, अजय हिमटा, रजनीश चौहान, बिट्टू राजटा, राजपाल और श्याम जस्टा ने प्रशासन और सरकार पर अनदेखी का आरोप लगाया है।

स्थानीय लोगों ने कहा कि जनता मूलभूत सुविधाओं के लिए जूझ रही है, लेकिन जिम्मेदार प्रतिनिधि इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। लोगों ने मांग की है कि अघोषित बिजली कटौती पर तुरंत रोक लगाई जाए और बिजली व्यवस्था को जल्द सुचारू बनाया जाए, ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके।

तकनीक किसानों को बीमारियों पर समय पर मिलेगा नियंत्रण व करोड़ों की होगी बचत

आलू की खेती में एआई से होगी क्रांति

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। आलू की खेती में आधुनिक तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के समावेश ने कृषि क्षेत्र को नई दिशा दी है। अब किसानों को फसल में आने वाली बीमारियों का समय रहते पता लगने लगा है, जिससे नुकसान कम हो रहा है और उत्पादन में स्थिरता आई है। नई तकनीकों के कारण पारंपरिक तरीकों पर निर्भरता घटने के साथ-साथ खेती अधिक सटीक और लाभकारी बनती जा रही है।

जानकारी के अनुसार केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में किए जा रहे शोध और नवाचारों के चलते रोग प्रबंधन में बड़ी सफलता मिली है। एआई आधारित टूल्स के माध्यम से फसल की तस्वीरों का विश्लेषण कर बीमारियों की पहचान संभव हो पाई है। इससे उपचार समय पर किया जा रहा है और फसल को

एआई आधारित तकनीकों की जानकारी देते हुए। अनंत ज्ञान

बड़े नुकसान से बचाया जा रहा है, जिससे सालाना करोड़ों रुपए की बचत सुनिश्चित हो रही है।

खेती में ड्रोन तकनीक के उपयोग से छिड़काव कार्य तेज और प्रभावी हुआ है। इससे न केवल मानव श्रम में कमी आई है बल्कि कीटनाशकों और उर्वरकों का संतुलित उपयोग भी संभव हुआ है। आधुनिक कृषि यंत्रों और वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग से उत्पादन लागत घटने के साथ-साथ किसानों की आय में सुधार देखने को मिल रहा है।

संस्थान द्वारा विकसित आलू की उन्नत किस्में विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनाई जा रही हैं। बता दे कि देशभर के किसानों तक इन किस्मों और तकनीकों को पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे कृषि क्षेत्र में नवाचार का लाभ व्यापक स्तर पर मिल सके। फसल चक्र, संतुलित उर्वरक उपयोग और आधुनिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देकर खेती को अधिक टिकाऊ बनाया जा रहा है।

एआई तकनीक से 800 करोड़ तक की संभावित बचत

संस्थान के निदेशक डॉ. ब्रजेश सिंह के अनुसार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से न केवल बीमारियों की समय रहते पहचान संभव हुई है बल्कि उनके प्रभावी प्रबंधन से उपचार लागत में भी भारी कमी आई है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक के माध्यम से बीमारियों से निपटने में लगने वाले लगभग 800 करोड़ रुपये तक की बचत संभव हो रही है, जो कृषि क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

पेट्रोल-डीजल पर बढ़े टैक्स से मची महंगाई की मार: डॉ. राजीव बिंदल

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि प्रदेश की जनता को महंगाई की चक्की में पीसा जा रहा है। 2022 में बड़े-बड़े वादों और गारंटियों के साथ सत्ता में आई कांग्रेस ने अब जनता पर लगातार आर्थिक बोझ डालना शुरू कर दिया है। डीजल पर पहले 10.40 प्रति लीटर टैक्स लगाने के बाद अब इसे बढ़ाकर 15.40 करना सीधे तौर पर आम आदमी की जेब पर हमला है, जिसका असर हर वर्ग—किसान, बागवान, मजदूर और व्यापारी—पर पड़ रहा है।

उन्होंने शिमला में आयोजित पत्रकार वार्ता में कहा कि पेट्रोल-डीजल महंगे होने से परिवहन लागत बढ़ेगी, जिससे बस, टैक्सी और ट्रक किराए में वृद्धि होगी और इसका सीधा असर कृषि, बागवानी और रोजमर्रा की जरूरतों पर पड़ेगा। बागवानी उत्पादों की ढुलाई महंगी होने से किसानों की आमदनी प्रभावित होगी, वहीं पर्यटन उद्योग पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। डॉ. बिंदल ने दावा किया कि पिछले 40 महीनों में कांग्रेस सरकार ने लगभग 4,000 करोड़ टैक्स के रूप में जनता से वसूले हैं और अब नए टैक्स के जरिए 2,000 करोड़ और निकालने की तैयारी है।

बिंदल ने आरोप लगाया कि सरकार ने बिजली, पानी, राशन, स्टांप ड्यूटी और सीमेंट की कीमतों में भारी बढ़ोतरी कर आम लोगों की कमर तोड़ दी है। उन्होंने कहा कि स्टांप ड्यूटी में 500 प्रतिशत तक वृद्धि और सीमेंट के दामों में बढ़ोतरी ने आम आदमी के लिए जीवन और कठिन बना दिया है। बजट को लेकर उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह कागजी और दिशाहीन है, जिसमें न तो राज्य की कोई स्पष्ट नीति नजर आती है और न ही विकास की ठोस योजना। उन्होंने चेतावनी दी कि पड़ोसी राज्यों की तुलना में महंगे ईंधन से तस्करी और माफिया तंत्र को बढ़ावा मिल सकता है। भाजपा इन जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेगी।

सदन में विज्ञापन खर्च को लेकर तीखी बहस

सीयू कैंपस और विज्ञापन खर्च पर आमने-सामने आए सीएम सुखविंद्र सुक्खू व सुधीर शर्मा

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में उस समय माहौल बेहद गरम हो गया जब सीयू धर्मशाला कैंपस निर्माण और विज्ञापन खर्च को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने-सामने आ गए। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने स्वयं खड़े होकर विपक्ष के आरोपों का जवाब दिया, जबकि भाजपा विधायक सुधीर शर्मा ने सरकार की कार्यप्रणाली और प्राथमिकताओं पर तीखे सवाल दागे। सदन में सवाल-जवाब के दौरान कई बार तीखी नोकझोंक भी देखने को मिली, जिससे पूरे सत्र का केंद्र यही मुद्दा बन गया।

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू विधानसभा में अपनी बात रखते हुए। अनंत ज्ञान

मुख्यमंत्री सुक्खू ने स्पष्ट कहा कि उनकी सरकार ने हर खर्च और निर्णय तथ्यों के आधार पर लिया है और विपक्ष द्वारा लगाए जा रहे आरोप भ्रामक हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान सरकार ने तीन वर्षों में विज्ञापनों पर लगभग 22.87 करोड़ रुपये खर्च किए हैं, जो पूर्व सरकार की तुलना में कम है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश के संसाधनों का उपयोग पारदर्शिता के साथ किया जा रहा है और किसी भी प्रकार की अनावश्यक फिजूलखर्ची नहीं होने दी जाएगी।

वहीं विपक्ष की ओर से सुधीर शर्मा ने सरकार को घेरते हुए कहा कि यदि यही राशि धर्मशाला में केंद्रीय विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैंपस के निर्माण के लिए दी जाती, तो काम शुरू हो सकता था। उन्होंने सरकार पर प्राथमिकताओं में कमी और विकास कार्यों की अनदेखी का आरोप लगाया। इस पर मुख्यमंत्री ने जवाब देते हुए कहा कि केंद्र से संबंधित मामलों में समन्वय आवश्यक है और राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारियों को पूरी गंभीरता से निभा रही है।

सत्र के दौरान सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में संभावित व्यवस्थागत बदलाव और होर्डिंग्स के लिए निर्धारित स्थान तय करने का मुद्दा भी उठा। मुख्यमंत्री ने संकेत दिए कि आने वाले समय में इस विभाग में सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे, ताकि प्रचार-प्रसार की व्यवस्था अधिक पारदर्शी और सुव्यवस्थित बन सके। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीतिक दलों द्वारा अनियंत्रित होर्डिंग लगाने की प्रवृत्ति पर भी नियंत्रण लाने के लिए ठोस नीति पर विचार किया जा रहा है।

44 परियोजनाओं को ग्रिड से जोड़ने की तैयारी चरणबद्ध तरीके से होगी सौर ऊर्जा से संचालित

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में राज्य सरकार ने ऊर्जा और जल प्रबंधन को लेकर एक अहम और दूरगामी पहल का खाका प्रस्तुत किया है। उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने सदन में जानकारी देते हुए बताया कि अब प्रदेश की पेयजल और सिंचाई योजनाओं को चरणबद्ध तरीके से सौर ऊर्जा से संचालित किया जाएगा, जिससे न केवल बिजली पर निर्भरता घटेगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी मजबूती मिलेगी। यह पहल ऐसे समय में लाई गई है जब बढ़ते बिजली खर्च और ऊर्जा संकट को लेकर राज्य सरकार स्थायी समाधान की दिशा में ठोस कदम उठा रही है।

मुकेश अग्निहोत्री बोले- आने वाले समय में होगा योजना का विस्तार

उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने आश्वस्त किया कि आने वाले समय में इस योजना का विस्तार किया जाएगा और दुर्गम क्षेत्रों की योजनाओं को भी इसमें शामिल किया जाएगा, ताकि हर क्षेत्र तक सस्ती और विश्वसनीय जल आपूर्ति पहुंच सके।

उनके अनुसार प्रदेश में कुल 44 योजनाओं को सौर ऊर्जा आधारित प्रणाली से जोड़ने की योजना तैयार की गई है। इन योजनाओं के तहत उत्पादित बिजली को हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड के ग्रिड में भी डाला जाएगा, जिससे अतिरिक्त ऊर्जा का बेहतर उपयोग संभव हो सकेगा। जल शक्ति विभाग और हिम ऊर्जा विभाग के संयुक्त प्रयास से इन परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि इससे विभाग के बिजली बिलों में भारी कमी आएगी और योजनाओं की संचालन लागत भी घटेगी।

इस दिशा में सिरमौर जिले के पांवटा साहिब क्षेत्र में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर काम शुरू कर दिया गया है, जहां 10 पंचायतों के 21 गांवों में 260 हैंडपंपों को सौर ऊर्जा से संचालित किया जा रहा है। इन हैंडपंपों के माध्यम से जल को आधुनिक भंडारण टैंकों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों को नियमित और सुरक्षित पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित हो रही है। प्रत्येक हैंडपंप से लगभग 30 से 40 लोगों को लाभ मिलने की उम्मीद है, जिससे यह योजना ग्रामीण जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

मुकेश अग्निहोत्री ने जानकारी दी कि सौर ऊर्जा आधारित यह मॉडल भविष्य में पूरे प्रदेश के लिए गेमचेंजर साबित हो सकता है। इससे जहां एक ओर बिजली की खपत में कमी आएगी, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लक्ष्यों को भी बल मिलेगा।

पंचायत चुनाव के नियमों में बड़ा बदलाव

दो कार्यकाल तक आरक्षित सीट अब होगी अनारक्षित

अनंत ज्ञान

- ग्राम पंचायत से जिला परिषद अध्यक्ष तक लागू होगा नियम

ब्यूरो, शिमला। प्रदेश सरकार ने पंचायत चुनाव से जुड़े नियमों में अहम संशोधन करते हुए आरक्षण व्यवस्था में बड़ा बदलाव किया है। नए प्रावधान के तहत यदि किसी पंचायत सीट या पद को लगातार दो कार्यकाल तक एक ही आरक्षित श्रेणी के लिए सुरक्षित रखा गया है, तो आगामी चुनाव में उसे अनारक्षित माना जाएगा। सरकार का कहना है कि यह कदम लोकतांत्रिक भागीदारी को व्यापक बनाने और अधिक से अधिक वर्गों को प्रतिनिधित्व का अवसर देने की दिशा में उठाया गया है।

यह संशोधन ग्राम पंचायत सदस्य, प्रधान, पंचायत समिति अध्यक्ष और जिला परिषद अध्यक्ष जैसे सभी प्रमुख पदों पर लागू होगा। पंचायत राज विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, आरक्षण रोस्टर में लंबे समय से बनी असंतुलन की स्थिति को सुधारने के लिए यह निर्णय लिया गया है, ताकि किसी एक वर्ग के लिए सीट लगातार आरक्षित रहने से अन्य वर्गों के अवसर प्रभावित न हों।

सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि इस बदलाव के बावजूद कुल आरक्षण प्रतिशत और संवैधानिक सीमा को पूरी तरह बरकरार रखा जाएगा। यदि किसी सीट को अनारक्षित करने से निर्धारित आरक्षण प्रतिशत प्रभावित होता है, तो यह नियम लागू नहीं होगा। हाल ही में जारी ड्राफ्ट नियमों पर आम जनता से सुझाव मांगे गए थे, लेकिन निर्धारित समय में कोई आपत्ति नहीं मिलने के बाद इसे अंतिम रूप दे दिया गया है।

सदन की कार्यवाही के दौरान चर्चा का संचालन करते विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया। अनंत ज्ञान

प्रदेश सरकार ने नए पट्टा नियम किए लागू

सामान्य सीमा 40 साल और हिमुडा को मिली 80 साल की विशेष छूट

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। हिमाचल प्रदेश सरकार ने भूमि पट्टा नियमों में महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए हिमाचल प्रदेश पट्टा (संशोधन) नियम 2026 लागू कर दिए हैं। राजस्व विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार अब सामान्य परिस्थितियों में राज्य सरकार किसी भी सरकारी भूमि को 40 वर्ष से अधिक अवधि के लिए पट्टे पर नहीं देगी। सरकार का मानना है कि यह कदम प्रशासनिक पारदर्शिता को मजबूत करने और भूमि उपयोग में संतुलन स्थापित करने की दिशा में अहम साबित होगा। इससे अनियंत्रित और अत्यधिक लंबी अवधि के पट्टों पर रोक लगेगी तथा सरकारी भूमि के प्रभावी प्रबंधन को बढ़ावा मिलेगा।

नए नियमों के तहत शहरी विकास को ध्यान में रखते हुए हिमुडा (हिमाचल प्रदेश हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट अथॉरिटी) को विशेष छूट प्रदान की गई है। संशोधित प्रावधानों के अनुसार हिमुडा अब आवासीय एवं शहरी विकास परियोजनाओं के लिए अधिकतम 80 वर्ष तक भूमि पट्टे पर ले सकेगा। सरकार का कहना है कि इस निर्णय से दीर्घकालिक विकास परियोजनाओं को स्थिरता मिलेगी और योजनाबद्ध तरीके से शहरीकरण को गति मिलेगी, जिससे प्रदेश में आधुनिक बुनियादी ढांचे का विस्तार संभव होगा।

सरकार ने यह भी स्पष्ट किया कि नियमों में संशोधन से पहले आम जनता से सुझाव और आपत्तियां आमंत्रित की गई थीं, लेकिन निर्धारित समयावधि के दौरान कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई। इसके बाद राजपत्र में प्रकाशन के साथ ही संशोधित नियमों को लागू कर दिया गया। यह निर्णय भविष्य में भूमि आवंटन प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित, पारदर्शी और जनहितकारी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

हिमाचल में शिक्षकों के हजारों पद स्वीकृत

बजट सत्र के दौरान शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने दी जानकारी

अनंत ज्ञान

- राज्य में 4447 शारीरिक व 4511 कला शिक्षक पद स्वीकृत
- 2318 शारीरिक व 1322 कला पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी
- खाली पदों को भरने की कवायद तेज
- स्कूलों के पुनर्गठन के चलते कई पद पूल में, सरकार ने संतुलन पर दिया जोर

ब्यूरो, शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में बजट सत्र के दौरान मंगलवार को शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को लेकर विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि राज्य में कला शिक्षकों के 4511 और शारीरिक शिक्षकों के 4447 पद स्वीकृत हैं। इनमें से कला शिक्षकों के 1322 और शारीरिक शिक्षकों के 2318 पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी है। सरकार का फोकस इन पदों को भरकर स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने पर है।

मंत्री ने स्पष्ट किया कि स्कूलों के विलय और कम छात्र संख्या के कारण कई पदों को पूल में रखा गया है, ताकि जरूरत के अनुसार संसाधनों का बेहतर उपयोग किया जा सके। इस प्रक्रिया के तहत कला शिक्षकों के 1098 और शारीरिक शिक्षकों के 1256 पदों को समायोजन के लिए रखा गया है। वहीं, शुद्ध रिक्त पदों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर भरा जा रहा है। शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने जानकारी दी कि सरकार ने पिछले कुछ समय में भर्ती प्रक्रिया को गति दी है। दिसंबर 2022 से जनवरी 2026 तक कला शिक्षकों के 481 पद तथा शारीरिक शिक्षकों के 3 पद अनुबंध व ट्रेनी आधार पर भरे जा चुके हैं। इसके अलावा कला के 23 और शारीरिक के 870 पदों को भरने की प्रक्रिया जारी है, जिससे शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों की उपलब्धता लगातार बढ़ रही है।

विधानसभा की कार्यवाही के दौरान यह विषय सामने आने पर रोहित ठाकुर ने सरकार की तरफ से स्पष्ट किया कि शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए चरणबद्ध तरीके से सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। संसाधनों के संतुलित उपयोग और भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से आने वाले समय में स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था को और बेहतर बनाने की दिशा में काम जारी रहेगा।

स्वास्थ्य, सड़क और वित्तीय संकट पर गरमाया माहौल

ग्रामीण विकास बजट पर विपक्ष का हमला, सरकार ने बताया मजबूती का रोडमैप व आंकड़ों से वार-पलटवार

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में मंगलवार को चर्चा का माहौल पूरी तरह गरमाया रहा, जहां एक ओर सरकार ने सीमित संसाधनों के बीच संतुलित और जनहितकारी बजट का दावा किया, वहीं विपक्ष ने इसे विकास विरोधी बताते हुए कई गंभीर सवाल उठाए। प्रश्नकाल के बाद शुरू हुई बजट अनुमानों पर चर्चा में ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य, सड़कों और वित्तीय स्थिति को लेकर तीखी बहस देखने को मिली।

इससे पहले मुख्यमंत्री सुक्खू ने पर्यटन, धार्मिक स्थलों के विकास और यातायात व्यवस्था को लेकर कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि गर्मियों के सीजन में पर्यटकों को जाम से राहत देने के लिए विशेष इंतजाम किए जाएंगे और शक्तिपीठों के विकास के लिए मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है।

विकास कार्य ठप पड़ने की आशंका : जनकराज

भाजपा विधायक डॉ. जनकराज ने बजट को विकास रोकने वाला बताते हुए कहा कि प्रदेश में अब सड़कों, बिजली और बुनियादी ढांचे के काम ठप पड़ जाएंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि ग्रामीण विकास के बजट में कटौती की गई है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों पर सीधा असर पड़ेगा।

बजट से ग्रामीण व्यवस्था होगी मजबूत : विवेक

कांग्रेस विधायक विवेक शर्मा ने बजट का बचाव करते हुए कहा कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने वाला दस्तावेज है। सरकार ने किसानों और पशुपालकों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा देने का प्रयास किया है। विवेक शर्मा ने दावा किया कि बजट में हर वर्ग का ध्यान रखा गया है और प्रदेश में संतुलित विकास की दिशा तय की गई है।

सड़कों के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं : विनोद

भाजपा विधायक विनोद कुमार ने लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के बजट को लेकर सरकार को घेरते हुए कहा कि सड़कों के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं किया गया है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि केंद्र से बड़ी राशि लाने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर सड़कें सुधारने के लिए बजट शून्य नजर आता है।

विपरीत हालात में भी बेहतरीन बजट : मोहनलाल

कांग्रेस विधायक मोहनलाल ब्राक्टा ने भी बजट को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में पेश किया गया उत्कृष्ट प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि वित्तीय संकट और प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद मुख्यमंत्री ने ऐसा बजट प्रस्तुत किया है, जिसकी विपक्ष ने कल्पना भी नहीं की थी।

विधायक निधि कटौती से जनता प्रभावित : राणा

भाजपा विधायक प्रकाश राणा ने विधायक निधि में कटौती और कर्मचारियों के वेतन पर असर को लेकर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों के लिए यह निधि महत्वपूर्ण होती है और इसमें कमी आने से आम जनता प्रभावित होगी। उन्होंने सरकार से अपील की कि योजनाएं बनाते समय जनहित को प्राथमिकता दी जाए।

सीमित संसाधनों में बेहतर बजट : संजय अवस्थी

कांग्रेस विधायक संजय अवस्थी ने केंद्र सरकार द्वारा आरडीजी में कटौती को बजट आकार घटने का मुख्य कारण बताया। उन्होंने कहा कि प्रदेश ने पिछले वर्षों में कई आपदाएं झेली हैं, लेकिन सीमित संसाधनों में भी बेहतर बजट प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि हिमाचल की अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय औसत से बेहतर रहने का अनुमान है।

घमासान सदन में विपक्ष ने उठाए सरकार की आर्थिक नीतियों पर सवाल, वित्तीय नीति पर तीखी बहस

विधायक निधि में कटौती पर बजट सत्र में हंगामा

अनंत ज्ञान

सत्यदेव भारद्वाज, शिमला। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में बजट सत्र के छठे दिन सदन का माहौल उस समय गरमा गया जब विधायक क्षेत्र विकास निधि में कटौती का मुद्दा प्रमुखता से उभरा। चर्चा के दौरान विभिन्न दलों के विधायकों ने अपने-अपने तर्क रखते हुए सरकार की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठाए। खास तौर पर यह बात सामने आई कि प्रदेश की वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए उठाए जा रहे कदमों में जनहित की योजनाओं पर असर नहीं पड़ना चाहिए। इसी संदर्भ में यह आवाज बुलंद हुई कि यदि आवश्यक हो तो वेतन में कटौती की जा सकती है, लेकिन विधायक क्षेत्र विकास निधि को समाप्त या कम करना जनता के विकास कार्यों को बाधित करेगा।

बजट में दूरदर्शिता का अभाव : रणधीर शर्मा

बजट पर चर्चा करते हुए विपक्ष के विधायक रणधीर शर्मा ने सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि यह बजट केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से तैयार किया गया है और इसमें ठोस आर्थिक सुधारों की कमी साफ दिखाई देती है। उनके अनुसार सरकार ने न तो फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाने की स्पष्ट योजना दी है और न ही भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए कोई ठोस उपाय सामने रखा है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश की आर्थिक वृद्धि दर में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है और निवेश को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक प्रोत्साहन भी नहीं दिए जा रहे हैं। इस दौरान उन्होंने विशेष रूप से विधायक निधि में कटौती का विरोध करते हुए कहा कि यह सीधे तौर पर जनता के विकास कार्यों पर असर डालेगा।

संसाधनों की कमी, संतुलन की चुनौती : गौड़

वहीं सत्ता पक्ष के विधायक भुवनेश्वर गौड़ ने बजट का समर्थन करते हुए कहा कि केंद्र से राजस्व घाटा अनुदान बंद होने के कारण प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर दबाव बढ़ा है। उन्होंने माना कि ऐसे में सरकार को संतुलन बनाते हुए निर्णय लेने पड़ रहे हैं। गौड़ ने मुख्यमंत्री द्वारा वेतन में कटौती के निर्णय को सकारात्मक कदम बताते हुए कहा कि इससे एक अच्छा संदेश गया है। साथ ही उन्होंने यह भी चिंता जताई कि गैस सिलिंडर की कमी से पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और इसके लिए अलग कोटा निर्धारित करने की आवश्यकता है। उन्होंने सेब उत्पादकों की स्थिति पर भी चिंता व्यक्त की और कहा कि आयात शुल्क में कमी से स्थानीय बागवानों को नुकसान होगा।

पर्यटन सीजन के दौरान अतिरिक्त पुलिस बल किया जाएगा तैनात : सुखविंद्र सुक्खू

प्रश्नकाल के दौरान मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कई महत्वपूर्ण घोषणाएं भी कीं। उन्होंने बताया कि पर्यटन सीजन के दौरान ट्रैफिक जाम वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाएगा ताकि पर्यटकों को परेशानी न हो। इसके अलावा सरकार जल्द ही स्क्रैप नीति लागू करने जा रही है, जिसके तहत सरकारी दफ्तरों, स्कूलों और थानों में पुराने वाहनों और उपकरणों को व्यवस्थित तरीके से हटाया जाएगा। इसके साथ ही प्रदेश के प्रमुख शक्तिपीठों के विकास के लिए छह माह के भीतर मास्टर प्लान तैयार करने की बात भी कही गई, जिससे धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिल सके।

सरकार संसाधनों की कमी का हवाला दे रही और विधायक जनता के हित पर दे रहे जोर

पूरे दिन की कार्यवाही में यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि प्रदेश सरकार वित्तीय अनुशासन और विकास कार्यों के बीच संतुलन बनाने की चुनौती से जूझ रही है। विधायक निधि का मुद्दा इसी संतुलन का प्रतीक बनकर उभरा, जहां एक ओर सरकार संसाधनों की कमी का हवाला दे रही है, वहीं विपक्ष और कई विधायक इसे जनता के हितों से जोड़कर देख रहे हैं। आने वाले दिनों में इस विषय पर और तीखी बहस होने के संकेत मिल रहे हैं, जिससे बजट सत्र और अधिक रोचक और निर्णायक बन सकता है।

विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया ने छात्रों को समझाई संसदीय प्रणाली की बारीकियां

विधानसभा परिसर में विद्यार्थियों के साथ विस अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, शिमला। शिमला में ऑकलैंड हाउस स्कूल लक्कड़ बाजार तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के विधि विभाग के छात्र-छात्राओं ने विधान सभा सचिवालय पहुंचकर कार्यवाही को नजदीक से देखा और लोकतांत्रिक व्यवस्था की गहराई को समझा।

इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया से उनकी मुलाकात हुई, जहां उन्होंने विद्यार्थियों को संसदीय प्रणाली, लोकसभा, राज्यसभा और विधानसभा की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बड़े राज्यों में विधान परिषद का प्रावधान होता है, जबकि हिमाचल प्रदेश जैसे छोटे राज्य में यह व्यवस्था नहीं है।

विधानसभा अध्यक्ष ने छात्रों को लोकतंत्र की संरचना समझाते हुए कहा कि लोक सभा और विधानसभा लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर हैं, जहां जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि सरकार का गठन करते हैं और कानून निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं।

उन्होंने राज्य सभा के गठन, सदस्यों के चुनाव और कार्यकाल की जानकारी भी साझा की। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में संसदीय प्रणाली को लेकर अच्छी समझ विकसित हो रही है, जिसका उदाहरण बाल सत्र में उनकी सक्रिय भागीदारी से देखने को मिला। इस अवसर पर उप-मुख्य सचेतक केवल सिंह पठानियां भी मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

सोनम मिस और नितिन को मिस्टर फेयरवेल चुना

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला में टूर एंड ट्रैवल विभाग के तृतीय वर्ष छात्रों के लिए भव्य विदाई समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्राचार्य राकेश पठानिया ने विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। विभागाध्यक्ष अमित कटोच ने भावुक होकर प्रेरक संदेश दिया। सोनम और नितिन मिस/मिस्टर फेयरवेल चुने गए। अन्य विद्यार्थियों को विभिन्न उपाधियों और स्मृति चिन्हों से सम्मानित किया गया।

डीपीई अनिल राष्ट्रीय स्पर्धा में होंगे रेफरी

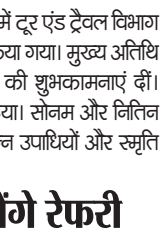

शिव गुलेरिया, अनंत ज्ञान, नगरोटा सूरियां। पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नगरोटा सूरियां में कार्यरत डीपीई अनिल कुमार का छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्तर खेलकूद प्रतियोगिता में रैफरी के रूप में चयन होना क्षेत्र के लिए गौरव की बात है। विद्यालय के प्रधानाचार्य हरभजन सिंह सोहल ने बताया कि अनिल 25 मार्च से 6 अप्रैल तक खेलो इंडिया ट्राइब गेम्ज में अपनी सेवाएं देंगे। पहले भी कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने उत्कृष्ट योगदान दिया है। स्टाफ और एसएमसी अध्यक्ष सतीश मैहरा ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दीं।

27 से पहले बिजली बिल करवाएं जमा

कपिल वासुदेवा, अनंत ज्ञान, नगरोटा बगवां। नगरोटा बगवां विद्युत उपमंडल के उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि जिनके विद्युत बिल का भुगतान पिछले 1 माह या अधिक समय से नहीं हुआ है, वे सभी लंबित बिल 27 मार्च से पहले भुगतान करें। एसडीओ ई.आर ईशानी भट्टू ने कहा कि भविष्य में बिल देय तिथि से पहले भुगतान करना आवश्यक है, अन्यथा विद्युत कनेक्शन अस्थायी रूप से काटा जाएगा। ऑनलाइन भुगतान में तकनीकी समस्या होने पर बिल कार्यालय के कैश काउंटर पर 10 से 3 बजे तक चुकाया जा सकता है। स्मार्ट मीटर वाले उपभोक्ताओं को बिल मोबाइल पर भेजा जाएगा; यदि संदेश नहीं आ रहा है, तो मोबाइल नंबर लिंक करवाएं।

महर्षि विद्या मंदिर स्कूल ने किया परिणाम घोषित

अनंत ज्ञान, गगल। महर्षि विद्या मंदिर पब्लिक स्कूल खटेड, धर्मशाला में जूनियर बच्चों के परिणाम मंगलवार को घोषित किए गए। प्रधानाचार्य अरुण कुमार शर्मा ने बताया कि पहले प्रांगण में गुरु पूजा की गई। नर्सरी, एलकेजी और यूकेजी के छात्रों के नामांकित परिणाम घोषित किए गए। पहली कक्षा में पारीक चौधरी ने प्रथम स्थान, आदिश और नविका ने दूसरा स्थान और अनाया ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। दूसरी कक्षा में नक्श प्रथम, नव्या चौधरी दूसरा और उत्कर्ष डोगरा तीसरा स्थान हासिल किया। अनाया, नविश और शिवम चौधरी को सराहना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

महिलाओं के अधिकारों पर डाला प्रकाश

अनंत ज्ञान, नगरोटा बगवां। राजीव गांधी राजकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, नगरोटा बगवां में जेंडर सेंसिटाइजेशन (लैंगिक संवेदनशीलता) विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला प्रख्यात सामाजिक संस्था जागोरी सोशल ग्रुप द्वारा संचालित की गई। विशेषज्ञ वक्ताओं ने लैंगिक समानता, आपसी सम्मान और महिलाओं के अधिकारों पर प्रकाश डाला। इंटरेक्टिव सत्रों में विद्यार्थियों ने विचार साझा किए। संस्थान के निदेशक दीपक कुमार और अन्य प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे। महाविद्यालय प्रशासन ने कार्यशाला की सराहना की और इसे विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए उपयोगी बताया।

पुलिस ने की उद्घोषित अपराधी महिला गिरफ्तार

अशोक ठाकुर, अनंत ज्ञान, इंदौरा। पुलिस जिला नूरपुर के कुलभूषण वर्मा के निर्देशानुसार कानून व्यवस्था सुदृढ़ करने और भगोड़े अपराधियों पर नकेल कसने के अभियान के तहत पीओ सेल ने कार्रवाई अमल में लाई। थाना डमटाल में एनआई एक्ट की धारा 138 के तहत वांछित अपराधी महिला अतिंदर कौर को भुंतर से गिरफ्तार किया गया। एएसपी धर्म चंद वर्मा ने बताया कि गिरफ्तारी की सूचना आरोपी के पति को दी गई और महिला को आगामी कानूनी कार्रवाई के लिए थाना डमटाल सुपुर्द कर दिया गया। अभियान लगातार जारी रहेगा।

शाहपुर में 31 को लगेगा लघु रोजगार मेला

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी अक्षय कुमार ने सूचित किया कि 31 मार्च को आईटीआई शाहपुर में लघु रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले में मैसर्ज हीरो मोटर कंपनी लुधियाना के 55 पद, मैसर्ज वीएमटी स्पिनिंग मिल्स बद्दी के 100 पद और मैसर्ज एमआईएएस इंडिया लिमिटेड हमीरपुर के 100 पुरुष पदों के लिए साक्षात्कार लिया जाएगा। चयनित उम्मीदवारों को 12,750 से 23,500 रुपए प्रतिमाह वेतन, कैंटीन और यातायात सुविधा दी जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी दो पासपोर्ट साइज फोटो, हिमाचली प्रमाण पत्र, मूल प्रमाण पत्र, बायोडाटा और अनुभव प्रमाणपत्र लेकर 31 मार्च को आईटीआई शाहपुर में उपस्थित हो सकते हैं।

पूर्व प्रधानाचार्य के निधन पर जताया शोक

अनंत ज्ञान, डाडासीबा। रक्कड़ क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई, जब बीडीसी अध्यक्ष रेणु जामला के ससुर एवं सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य सुखराम जामला (86) का निधन हो गया। वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे और सोमवार सुबह अपने निवास पर अंतिम सांस ली। सुखराम जामला ने शिक्षा विभाग में 29 वर्षों तक सेवाएं दी और अनुशासनप्रिय व कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में पहचाने गए। उनके निधन पर स्थानीय विधायक, पूर्व विधायक और क्षेत्रवासियों ने गहरा शोक व्यक्त किया।

दो साल में बढ़े री-चेकिंग और री-इवेल्यूएशन के आवेदन

पिछले साल सत्रह हजार ने किया था आवेदन, दसवीं में डयूल एग्जाम से कमी आने की संभावना

अनंत ज्ञान

राजेश कुमार, धर्मशाला। पिछले दो वर्ष से री-चेकिंग व री-इवेल्यूएशन करवाने वाले परीक्षार्थियों की संख्या में भारी इजाफा हुआ है। आलम यह है कि पिछले वर्ष दसवीं व बारहवीं के ऐसे 17 हजार परीक्षार्थियों ने बोर्ड के पास रिचेकिंग-रिवेल्यूएशन के लिए आवेदन किया था। इस बार शिक्षा बोर्ड की ओर से दसवीं के परीक्षार्थियों को डयूल एग्जाम की सुविधा प्रदान करने से ऐसे परीक्षार्थियों की संख्या में कमी आने की संभावना है।

गौरतलब है कि बोर्ड की दसवीं व बारहवीं की परीक्षा में कम अंक आने पर परीक्षार्थी री-चेकिंग या री-इवेल्यूएशन करवाते हैं, जिसके लिए शुल्क तय होता है। इसके बावजूद ऐसे परीक्षार्थियों की संख्या में पिछले तीन साल में भारी वृद्धि हुई है।

वर्ष 2023 की बात करें तो ऐसे परीक्षार्थियों की संख्या ढाई से तीन हजार थी, जबकि वर्ष 2024 में यह संख्या बढ़कर दस हजार, जबकि वर्ष 2025 में 17 हजार तक पहुंच गई थी। इस बार बोर्ड ने दसवीं के परीक्षार्थियों को दो विषयों में फेल या कम अंक आने पर जून में पुन: परीक्षा देने की सुविधा प्रदान की है, जिसके लिए शुल्क निर्धारित होगा। एक माह में परीक्षार्थी दो विषयों की तैयारी आसानी से करके अंक सुधार व अच्छे अंक प्राप्त करके पास हो सकते हैं। ऐसे में उम्मीद जताई जा रही है कि बोर्ड की ओर से दसवीं कक्षा के परीक्षार्थियों के लिए शुरू किए गए डयूल एग्जाम की सुविधा से री-चेकिंग या री-इवेल्यूएशन करवाने में दसवीं के परीक्षार्थियों की संख्या में कमी आएगी। उधर, हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के सचिव डॉ. मेजर विशाल शर्मा ने बताया कि पिछले तीन साल में री-चेकिंग या री-इवेल्यूएशन करवाने वाले परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ी है। वर्ष 2023 में ढाई से तीन हजार, जबकि वर्ष 2024 में 10 हजार और वर्ष 2025 में 17 हजार परीक्षार्थियों ने री-चेकिंग या री-इवेल्यूएशन के लिए आवेदन किया था।

तीस अप्रैल तक आएगा मैट्रिक-प्लस टू का रिजल्ट

2 अप्रैल से शुरू होगी उत्तरपुस्तिकाओं की चेकिंग,पहले चरण की शिफ्टिंग पूरी

अनंत ज्ञान

◆ स्कूल शिक्षा बोर्ड ने की तैयारी: डॉ. मेजर विशाल

ब्यूरो, धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश में चल रही दसवीं व 12वीं कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाओं की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन 2 अप्रैल से शुरू किया जाएगा। इसके लिए बोर्ड ने तैयारी कर ली है।

वहीं, दिसंबर माह में ही बोर्ड की ओर से दोनों कक्षाओं की डेटशीट जारी करने के साथ पूरा शेड्यूल तय कर लिया गया था, उसके तहत बोर्ड का प्रयास है कि 30 अप्रैल तक दसवीं व बारहवीं दोनों कक्षाओं का परीक्षा परिणाम भी घोषित कर दिया जाए। बोर्ड सचिव डॉ. मेजर विशाल शर्मा ने बताया कि बोर्ड परीक्षाओं उपरांत उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए बोर्ड ने तैयारी कर ली है। परीक्षा के बाद उत्तरपुस्तिकाओं को दो चरणों में प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों से शिफ्ट करवाया जाता है। पहले चरण की शिफ्टिंग हो चुकी है तथा इन उत्तरपुस्तिकाओं को मूल्यांकन के लिए बोर्ड के स्तर पर तैयार किया जा रहा है। 2 अप्रैल से उत्तरपुस्तिओं का मूल्यांकन कार्य बोर्ड द्वारा शुरू करवाया जाएगा, इसके लिए बोर्ड ने प्लानिंग कर ली है।

41 सेंटर्स में होगा उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन

बोर्ड सचिव ने बताया कि प्रदेशभर में अलग-अलग जगहों पर 41 स्थल मूल्यांकन केंद्र बनाए गए हैं। बोर्ड की ओर से इस बार मूल्यांकन के लिए शिक्षकों की ड्यूटी के लिए शिक्षा विभाग से आग्रह किया गया था, ड्यूटियां लगाई जा चुकी हैं और सूची बोर्ड के पास पहुंच चुकी है। बोर्ड का पूरा प्रयास है कि 30 अप्रैल तक मैट्रिक और जमा दो का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया जाए।

एकलव्य परीक्षा 29 को

बोर्ड सचिव ने बताया कि एकलव्य परीक्षा का आयोजन प्रदेशभर में 29 मार्च को किया जाएगा, जिसके लिए प्रदेशभर में दस परीक्षा केंद्र बनाए जाएंगे। प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में तीन एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल चंबा, लाहौल-स्पीति और किन्नौर में हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय की तरह ही एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल प्रदेश में केंद्रीय जनजातीय मामले मंत्रालय द्वारा स्थापित किए गए हैं, जो कि विशेष तरह के विद्यालय हैं।

नौ फीसदी ब्याज सहित 17.49 लाख मुआवजा देने के आदेश

अनंत ज्ञान

◆ उपभोक्ता आयोग ने दिए आदेश

◆ बीमा कंपनी को दावा खारिज करना पड़ा मंहगा 20 हजार ठोका हर्जाना

ब्यूरो, धर्मशाला। जिला उपभोक्ता आयोग चंबा ने एक महत्वपूर्ण फैसले में बीमा कंपनी द्वारा दावा खारिज किए जाने को गलत ठहराते हुए शिकायतकर्ता के पक्ष में निर्णय सुनाया है।

आयोग ने नेशनल इंश्योरेंस कंपनी को शिकायतकर्ता को 17 लाख 49 हजार 500 रुपए मुआवजा देने के साथ नौ प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित देने होंगे। साथ ही न्यायिक शुल्क के 10 हजार सहित 10 हजार मानसिक प्रताड़ना का हर्जाना भी देना होगा। उक्त फैसला आयोग के अध्यक्ष हेमांशु मिश्रा व सदस्य आरती ठाकुर की खंडपीठ ने सुनाया है।

मिली जानकारी के अनुसार, गांव घरोह निवासी मंगनी राम ने अपने डंपर (एचपी-73ए-7069) का बीमा नेशनल इंश्योरेंस कंपनी से कराया था। 3 फरवरी, 2023 को बीमा अवधि के दौरान वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे उसे भारी नुकसान हुआ। घटना के बाद पुलिस में एफआईआर दर्ज करवाई गई और बीमा कंपनी ने सर्वेयर के माध्यम से नुकसान का आकलन भी करवाया। हालांकि, बीमा कंपनी ने 20 नवंबर 2023 को यह कहते हुए क्लेम खारिज कर दिया कि दुर्घटना के समय चालक शराब के नशे में था। कंपनी ने इस दावे के समर्थन में आरएफएसएल रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें चालक के खून में अल्कोहल की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक बताई गई। शिकायतकर्ता ने इस निर्णय को चुनौती देते हुए आयोग में शिकायत दायर की। सुनवाई के दौरान आयोग ने पाया कि आरएफएसएल रिपोर्ट और बीमा कंपनी के दस्तावेजों में चालक के नाम को लेकर गंभीर विसंगतियां हैं। रिपोर्ट में विवेक ठाकुर का उल्लेख है, जबकि बीमा दस्तावेजों और ड्राइविंग लाइसेंस में चालक का नाम विवेक सिंह दर्ज है। इसके अलावा, यह स्पष्ट नहीं हो सका कि खून का नमूना वास्तव में किस व्यक्ति का लिया गया था। आयोग ने अपने आदेश में कहा कि केवल संदिग्ध रिपोर्ट के आधार पर क्लेम खारिज करना उचित नहीं है। बीमा कंपनी द्वारा पर्याप्त और स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए गए, जिससे यह साबित हो सके कि दुर्घटना के समय वास्तविक चालक नशे में था। इसके आधार पर आयोग ने शिकायतकर्ता उपभोक्ता के पक्ष में उक्त फैसला सुनाया है।

जसवीर सिंह रंधावा ने उत्तीर्ण की नवोदय परीक्षा

अनंत ज्ञान, कांगड़ा। राजकीय प्राथमिक पाठशाला झुरडू पठियार, शिक्षा खंड कांगड़ा के छात्र जसवीर सिंह रंधावा ने नवोदय विद्यालय की परीक्षा में 90 अंक प्राप्त करके परीक्षा में सफलता हासिल की। जसवीर का नवोदय विद्यालय की परीक्षा में ओवरऑल रैंक 17 रहा, जो उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन को दर्शाता है। इसके अलावा, छात्र ने सैनिक स्कूल सुजानपुर टीहरा की परीक्षा भी उत्तीर्ण की, जो उसकी मेहनत और लगन को और भी प्रमाणित करता है।

जसवीर ने अपनी सफलता का श्रेय पिता अमित कुमार और माता चंद्रेश कुमारी को दिया, जिनकी कठिन मेहनत और मार्गदर्शन ने उसे यह सफलता दिलाने में मदद की। जसवीर का यह संघर्ष और सफलता अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, और यह दर्शाता है कि कठिन मेहनत और सही मार्गदर्शन से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

रेल सेवा शुरू न होने पर फूटने लगा जनता का गुस्सा: बलदेव

जितेंद्र कौशल, अनंत ज्ञान, बैजनाथ। पठानकोट-जोगिंद्रनगर रेललाइन पर अब तक रेल सुविधा शुरू न होने पर जनता का गुस्सा फूटने लगा है। स्वाभिमान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बलदेव राज सूद ने कहा कि पठानकोट-जोगिंद्रनगर रेल चलाने के लिए रेलवे विभाग की ओर से कई बार ट्राइल किया जा चुका है तथा हर बार रेल ट्रैक को सही पाया गया। इसके बावजूद विभाग द्वारा ट्रेन न चलाने के कारण जनता का रोष स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि गत चार से अधिक वर्षों से पठानकोट-जोगिंद्रनगर रेल सेवाएं ठप होने से जहां क्षेत्र के लाखों लोगों को असुविधा हो रही है। वहीं, इलाके का पर्यटन, होटल व्यवसाय,टैक्सी व्यवसाय तथा रोजगार देने वाले उद्यमियों को बड़ी क्षति पहुंची है।

उन्होंने कहा कि अंग्रेजी शासन द्वारा 1925 से 1928 तक मात्र 3 वर्षों में पठानकोट से जोगिंद्रनगर तक लगभग 160 किलोमीटर रेल लाइन तैयार कर दी थी, जबकि उन दिनों इतनी आधुनिक तकनीक विकसित नहीं थी, परंतु भारत सरकार द्वारा केवल चक्की का पुल निर्माण के लिए चार वर्ष से अधिक समय लगा दिया और इस प्रक्रिया में जनता के कोष से कई हज़ार करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं। इसके बावजूद रेल यात्रा शुरू न करना सरासर गलत तथा जनविरोधी है। उन्होंने कहा कि स्वाभिमान पार्टी कांगड़ा घाटी रेलवे संघर्ष समिति के नवनियुक्त अध्यक्ष पीसी विश्वकर्मा तथा संयोजक राजेश नंदपुरी तथा इलाके की जनता के साथ हर स्थिति में खड़ी रहेगी। बलदेव राज सूद ने पठानकोट स्थित कांगड़ा घाटी रेलवे जंक्शन को डल्हौजी रोड़ शिफ्ट करने के रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू के प्रस्ताव को जन विरोधी करार दिया।

मंडी में 'आप' का शक्ति प्रदर्शन हिमाचल की सियासत में बड़े बदलाव की ओर कदम : भंडारी

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता कल्याण सिंह ने मंडी में आयोजित विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन की सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि 22 मार्च का दिन हिमाचल की राजनीति के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ साबित होगा। उन्होंने कहा कि मंडी जिले में उमड़ा जनसैलाब इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि देवभूमि की जनता अब भाजपा और कांग्रेस की बारी-बारी वाली नूरा-कुश्ती से ऊब चुकी है। भंडारी ने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि इस अभूतपूर्व जनसमर्थन ने भाजपा की नींद उड़ा दी है। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर की हालिया प्रतिक्रिया उनकी राजनीतिक असुरक्षा को दर्शाती है। दूसरी ओर कांग्रेस इस उभरती जनलहर के सामने पूरी तरह निशब्द है। उनकी चुप्पी उनकी कमजोरी और स्वीकारोक्ति है कि वे जनता का विश्वास खो चुके हैं। पार्टी प्रवक्ता ने दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं पंजाब प्रभारी मनीष सिसोदिया के संबोधन का हवाला देते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी आगामी विधानसभा चुनावों में पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरेगी। सिसोदिया का यह संकल्प कि वे फरवरी 2027 से स्वयं हिमाचल में डेरा डालेंगे, पार्टी की गंभीरता और जीत के अटूट विश्वास को दर्शाता है। जिस तरह उन्होंने पंजाब में पारंपरिक राजनीति की जड़ों को हिलाया, वही इतिहास अब हिमाचल में दोहराया जाएगा।

नशा तस्कर दंपती तीन माह के लिए निरुद्ध

◆ पति-पत्नी दोनों पर दर्ज हैं नशे के चार-चार मामले

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, धर्मशाला। लंबे समय से नशा तस्करी में संलिप्त दंपती के खिलाफ जिला कांगड़ा पुलिस ने कड़ी कारवाई की है। जानकारी के अनुसार 34 वर्षीय आरोपी सागर निवासी पडेर, पालमपुर तथा ज्योति पत्नी सागर निवासी तहसील पालमपुर के खिलाफ पुलिस थाना पालमपुर में एनडीपीएस एक्ट 1985 के अंतर्गत मादक पदार्थों की अवैध तस्करी से संबंधित चार-चार मामले पंजीकृत हैं।

इन मामलों में उनके कब्जे से चिट्टा व चरस की बरामदगी की गई थी। बार-बार गिरफ्तारी एवं जमानत पर रिहा होने के बावजूद दोनों आरोपी द्वारा नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी की गतिविधियां जारी रखने के तथ्य सामने आए थे। पुलिस एवं अन्य खुफिया रिपोर्टों से यह स्पष्ट हुआ कि यह दोनों कुख्यात तस्कर क्षेत्र में नशीले पदार्थों की आपूर्ति और वितरण में सक्रिय रूप से संलिप्त है, जिससे विशेषकर युवाओं के स्वास्थ्य एवं समाज की शांति व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उसकी गतिविधियों को रोकना सार्वजनिक हित एवं जन-सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक पाया गया।

जिला पुलिस द्वारा दोनों आदतन तस्करों आरोपी सागर व ज्योति के खिलाफ पिट एनडीपीएस एक्ट1988 के अंतर्गत निवारक हिरासत के संबंध में 2 जनवरी 2026 को एक प्रस्ताव उच्चाधिकारियों के माध्यम से सक्षम प्राधिकारी को भेजा गया था, जिसको मंजूरी मिलने के बाद ये कारवाई की गई है। इन मुकदमों के आधार पर, सक्षम प्राधिकारी द्वारा पिट एनडीपीएस एक्ट 1988 की धारा 3(1) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए,दोनों आदतन तस्करों को तीन माह की अवधि के लिए जिला जेल कांगड़ा स्थित धर्मशाला में निरुद्ध किए जाने के आदेश पारित किए गए हैं। दोनों आरोपियों को मंगलवार को गिरफ्तार कर निवारक हिरासत में भेज दिया गया है।

पुलिस टीम के साथ हिरासत में लिए पति और पत्नी। अनंत ज्ञान

नशे के खिलाफ शून्य सहनशीलता नीति: एसपी

एसपी कांगड़ा अशोक रत्न ने मामले की पुष्टि करते हुए कहा कि जिला कांगड़ा पुलिस मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध शून्य सहनशीलता नीति के तहत कठोर कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में आगे भी सख्त कदम उठाए जाते रहेंगे।

281 ग्राम चरस सहित दो युवक किए गिरफ्तार

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। जिला कांगड़ा पुलिस की विशेष टीम ने गश्त के दौरान 35 वर्षीय मनोज कुमार निवासी ठारा, तहसील बैजनाथ व 37 वर्षीय सुशील निवासी मंधोल, तहसील बैजनाथ के कब्जे से 281 ग्राम चरस बरामद की है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को मौके पर गिरफ्तार कर लिया गया और इनके विरुद्ध पुलिस थाना बैजनाथ में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। सोमवार रात को जब जिला कांगड़ा पुलिस की विशेष टीम गश्त पर थी तो गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि मनाली से चंबा वाया पठानकोट बस में दो युवक बैठे हैं, जिन्होंने भारी मात्रा में चरस छिपा कर रखी है, जिसे यह दोनों बेचने की फिराक में हैं। जिला कांगड़ा पुलिस की विशेष टीम ने नियमानुसार त्वरित कार्रवाई करते हुए उक्त दोनों आरोपियों को 281 ग्राम चरस के साथ धर दबोचा। मामले की पुष्टि करते हुए एसपी कांगड़ा अशोक रत्न ने बताया कि जिला कांगड़ा पुलिस का नशे के विरुद्ध यह अभियान भविष्य में भी निरंतर जारी रहेगा। नशे और अन्य अवैध कारोबार में लिप्त किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। आमजन से अपील है कि नशे के सौदागरों की सूचना तुरंत पुलिस को दें-आपकी पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी ।

बजट पूरी तरह खोखला, प्रदेश के युवाओं के साथ अन्याय: शाश्वत

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के हाल ही में प्रस्तुत बजट पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश महामंत्री शाश्वत कपूर ने कहा कि यह बजट प्रदेश के युवाओं के साथ एक बड़ा अन्याय है। उन्होंने कहा कि सरकार ने बजट में योजनाओं की लंबी सूची तो पेश की है, लेकिन जब बात रोजगार की आती है, तो यह बजट पूरी तरह खोखला नजर आता है।

शाश्वत कपूर ने कहा कि सरकार के युवाओं से किए गए वादों के अनुसार, इस बजट में युवा चौथे साल में 4 लाख नौकरियों की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन सरकार द्वारा उन्हें सिर्फ 500 कैंपस इंटरव्यू, 1000 युवाओं को विदेश भेजने और 500 ई-टैक्सी जैसी सीमित घोषणाएं ही दी गई हैं। यह प्रदेश के लाखों बेरोजगार युवाओं के साथ मजाक है। उन्होंने कहा कि आज हिमाचल का पढ़ा-लिखा युवा बेरोजगारी के कारण मजबूरी में प्रदेश से बाहर पलायन कर रहा है, जो कि सरकार की नीतिगत विफलता को दर्शाता है। शाश्वत ने आरोप लगाया कि सरकार युवाओं को रोजगार देने की बजाय उन्हें स्वरोजगार के नाम पर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ रही है। उन्होंने कहा कि हर युवा उद्यमी नहीं बन सकता और सरकार का कर्तव्य है कि वह बड़े स्तर पर उद्योग स्थापित कर स्थायी रोजगार उपलब्ध कराए।

उन्होंने यह भी कहा कि बजट में न तो आईटी सेक्टर के विकास का कोई स्पष्ट रोडमैप है और न ही बड़े निवेश को आकर्षित करने की ठोस रणनीति दिखाई देती है। ऐसे में प्रदेश के युवाओं के लिए भविष्य की कोई स्पष्ट दिशा नजर नहीं आती। शाश्वत कपूर ने कहा कि हिमाचल का युवा अब जाग चुका है और केवल घोषणाओं से संतुष्ट नहीं होगा।

आगाज टीबी रोग को लेकर भयमुक्त वातावरण बनाने के लिए जागरुकता बढ़ाने का आह्वान

जिले में 'टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0' का शुभारंभ

◆ टीबी से मौतों में कमी और नए मामलों की रोकथाम पर जोर

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, धर्मशाला। विश्व क्षयरोग दिवस पर कांगड़ा जिले में 'टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0' की शुरुआत की गई। इसके साथ ही जिले में टीबी उन्मूलन को नई गति देने का संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से स्वास्थ्य विभाग, जिला प्रशासन, विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों और अधिक मीडिया कर्मियों की भागीदारी रही।

इस अवसर पर निक्षय मित्रों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने टीबी मरीजों को पोषण और सामाजिक सहयोग प्रदान कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अधिकारियों ने बताया कि इन प्रयासों से न केवल मरीजों के इलाज में निरंतरता बनी है, बल्कि टीबी से जुड़े सामाजिक कलंक को कम करने में भी मदद मिली है। सीएमओ डॉ विवेक करोल ने कहा कि 'टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0' के अंतर्गत सेंट्रल टीबी डिवीजन द्वारा 969 उच्च जोखिम गांवो की पहचान की गई है, जिसमें 345257 उच्च जोखिम आबादी की पहचान करके स्क्रीनिंग की जा चुकी है जिनमें से 153259 लोगो के एक्स-रे किए जा चुके हैं । सीएमओ ने कहा कि 'टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0' के तहत अब लापता मामलों की पहचान, टीबी से होने वाली मौतों में कमी और नए मामलों की रोकथाम पर विशेष जोर दिया जाएगा।इसके लिए बुजुर्गों, कुपोषित लोगों, मधुमेह रोगियों, धूम्रपान करने वालों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की नियमित जांच की जाएगी। साथ ही, टीबी प्रिवेंटिव ट्रीटमेंट का दायरा बढ़ाकर संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने बताया कि टीबी के प्रमुख लक्षणों में लगातार खांसी (किसी भी अवधि की), बलगम में खून आना, बुखार, रात में पसीना आना, वजन कम होना, भूख न लगना, सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ, कमजोरी व थकान तथा गर्दन या

निक्षय मित्रों को सम्मानित किया। अनंत ज्ञान

टीबी के प्रति जागरूकता फैलाए मीडिया: डॉ. सूद

जिला क्षयरोग कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आरके सूद ने कार्यशाला के दौरान पत्रकारों से अपील की गई कि वे टीबी के प्रति जागरूकता फैलाने, इससे जुड़े कलंक को समाप्त करने और लक्षण वाले लोगों को जांच के लिए प्रेरित करने में सक्रिय भूमिका निभाएं। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि टीबी उन्मूलन केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज के हर वर्ग की भागीदारी जरूरी है।

गंगा नदी के संरक्षण बारे जागरूक करने को गंगा प्रहरी कैडर गठित

अनंत ज्ञान

◆ केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री ने सांसद इंदु को दी जानकारी

◆ कहा-पिछले तीन वर्ष में जागरुकता अभियानों पर 17.68 करोड़ रुपए खर्च

ब्यूरो, धर्मशाला। गंगा नदी के संरक्षण और स्वच्छता के लिए स्थानीय समुदाय और युवा वर्ग को जोड़ने के लिए नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के तहत गंगा प्रहरी कैडर गठित किया है, ताकि आम जनमानस को गंगा नदी के संरक्षण और स्वच्छता के लिए जागरूक किया जाए, ताकि इस मिशन में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। यह जानकारी केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री राज भूषण चौधरी ने राज्यसभा सांसद इंदु गोस्वामी को सदन में दी।

उन्होंने बताया कि इस मिशन के तहत विभिन्न जागरुकता अभियान चलाए गए हैं और पिछले तीन सालों में इन जागरुकता अभियानों पर कुल 17.68 करोड़ रुपए खर्च किये गए हैं। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के तत्वावधान में गंगा नदी के संरक्षण और स्वच्छता के लिए स्थानीय समुदाय और युवा वर्ग को जोड़ने के लिए गंगा नदी के तटों पर गंगा उत्सव स्वच्छता पखवाड़ा घाट पर योग विश्व पर्यावरण दिवस और स्वच्छता अभियान आयोजित किए गए हैं। उन्होंने सांसद इंदु गोस्वामी को बताया कि इस उद्देश्य के लिए नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंग ने सीमा सुरक्षाबल के साथ समवन्य से देवप्रयाग से गंगा सागर तक आल वीमेन रीवर राफ्टिंग का आयोजन किया। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा ने गंगा नदी के जीर्णोद्वार में बच्चों और छात्रों को जोड़ने के लिए विभिन्न विश्विद्यालयों, कॉलेजों, प्रशिक्षण संस्थानों और सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट के साथ भागीदारी शुरू की है। गंगा नदी के जीर्णोद्धार में स्थानीय मुद्दों को प्रभावी ढंग से निपटने के लिए देश के उन 139 जिलों में जिला गंगा समितियों का गठन किया गया है, जहां से गंगा नदी गुजरती है।

न्यूज ब्रीफ

100 मीटर दौड़ में तमन्ना और अभिनव प्रथम

कोहली, अनंत ज्ञान, शाहपुर। द्रोणाचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया। मुख्य अतिथि एएसपी बीर बहादुर ने कार्यक्रम की शुरुआत की और युवाओं को नशे से दूर रहकर खेलों में सक्रिय भाग लेने का संदेश दिया। 100 मीटर दौड़ (बालिका) में तमन्ना ने प्रथम, जबकि बालक वर्ग में अभिनव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर दौड़ (बालक वर्ग) में विकास ने प्रथम, जबकि (बालिका वर्ग) में अमिशा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर में बालक में विकास प्रथम रहे। शॉट पुट में कनिष्क व लड़कियों के वर्ग प्रीति प्रथम रही। हाई जंप नितिन व लड़कियों में प्रथम अमीषा रही। समापन पर विजेताओं को सम्मानित किया गया।

महाराणा प्रताप स्कूल में वर्कशॉप का आयोजन

अनंत ज्ञान, शाहपुर। महाराणा प्रताप पब्लिक विद्यालय सिहुंवा (शाहपुर) में मंगलवार को अध्यापक प्रशिक्षण वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में ईसीसी की फाउंडर रितुला सिंह ने शिक्षकों को इफेक्टिव कम्युनिकेशन और मैनेजमेंट ऑफ सोसियोइमोशनल स्किल्स के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने शिक्षा के प्रभावी तरीकों और बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। स्कूल की प्रधानाचार्या शालिनी राणा ने भी शिक्षकों को बच्चों की शिक्षा से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन दिया, ताकि सिखाने और सीखने की प्रक्रिया को और मजबूत बनाया जा सके। इस अवसर पर सभी अध्यापक उपस्थित थे।

बगलामुखी जाप व सामूहिक यज्ञ 18 मई से

अनंत ज्ञान, जयसिंहपुर। जयसिंहपुर उपमंडल के शांतल स्थित मंदिर में श्रीमद्भागवत महापुराण कथा, माता बगलामुखी जाप और सामूहिक यज्ञ का आयोजन 18 मई से 24 मई तक किया जाएगा। इस आयोजन की सफलता के लिए मंदिर के प्रधान सेवक महंत कृष्णापुरी जी महाराज की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई, जिसमें आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की गई। महंत कृष्णापुरी ने बताया कि 18 मई को सुबह 6 से 9 बजे तक कलश यात्रा निकाली जाएगी, और 10 बजे से मंडल पूजन होगा। इसके बाद श्रीमद भागवत महापुराण कथा का आयोजन साढ़े 12 बजे से किया जाएगा, जिसमें आचार्य पंडित अनुराग कृष्ण शास्त्री कथा का व्याख्यान करेंगे। बैठक में पपलाह, बंदाहू, गंदड़ बरड़ाम और सकोह पंचायतों के सेवक उपस्थित रहे।

बाबा भौडी सिद्ध पीठ में वार्षिक भंडारा 5 अप्रैल को

अनंत ज्ञान, जयसिंहपुर। जयसिंहपुर उपमंडल के तहत सुआं पंचायत में प्रसिद्ध प्राचीन बाबा भौडी सिद्ध पीठ में 59वां वार्षिक कार्यक्रम व भंडारे का आयोजन किया जाएगा। 4 अप्रैल को शाम को झंडा रस्म भजन संध्या रात्री भोज एवं 5 अप्रैल को यज्ञ व गायक कुमार विक्की बाबा चौकी का गुणगान करेंगे। बाबा भौडी सिद्ध विकास सभा ने सभी भक्तजन से ज्यादा से ज्यादा संख्या में सम्मिलित होकर वार्षिक कार्यक्रम व बाबा का प्रसाद जरूर ग्रहण करें।

कोटासनी माता मंदिर में शांति हवन का आयोजन

अनंत ज्ञान, धर्मशाला। नव दुर्गा युवा मंडल ने मंगलवार को सौकणी दा कोट पंचायत स्थित प्राचीन एतिहासिक कोटासनी माता मंदिर में शांति हवन का आयोजन किया। युवा मंडल के प्रधान रविंद्र कुमार ने बताया कि शांति हवन के बाद कीर्तन कर मां की महिमा का गुणगान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में युवा मंडल के पदाधिकारियों व सदस्यों में रोहन, दीया, चांदनी, नरेश कुमार, संजीव व संदीप सहित अन्यों ने अपना सहयोग दिया।

60 पदों के लिए 28 को होगा साक्षात्कार

अनंत ज्ञान, पालमपुर। जिला रोजगार अधिकारी अक्षय कुमार ने जानकारी दी कि जिला कांगड़ा के रोजगार कार्यालय धर्मशाला द्वारा फुजियामा सोलर लिमिटेड और एमटी ऑटोक्राफ्ट लिमिटेड, परवाणू में प्रोडक्शन और प्रोडक्शन ऑपरेटर (केवल पुरुष) के कुल 60 पदों के लिए भर्ती की जा रही है। इन पदों के लिए शैक्षणिक योग्यता 10वीं, 12वीं या आईटीआई (फिटर, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, एमएमवी) निर्धारित की गई है। इच्छुक उम्मीदवार 28 मार्च 2026 को सुबह 11 बजे उप-रोजगार कार्यालय पालमपुर में साक्षात्कार के लिए उपस्थित हो सकते हैं। चयनित उम्मीदवारों को 13,500 रुपये प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

क्षयरोग के लक्षण और बचाव की दी जानकारी

ऊषा जरियाल, अनंत ज्ञान, जवाली। कांता कॉलेज ऑफ एजुकेशन, चलबाड़ा में मंगलवार को विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को क्षयरोग के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम में प्राचार्य, शिक्षकगण और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। इसमें क्षयरोग के लक्षण, कारण, बचाव और उपचार के बारे में जानकारी दी गई। वक्ता ने बताया कि यह एक संक्रामक बीमारी है, जो फेफड़ों को प्रभावित करती है, लेकिन समय पर जांच और उपचार से इसे ठीक किया जा सकता है। विद्यार्थियों ने नारे लगाए, जैसे 'टीबी हारेगा, देश जीतेगा,' और समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया।

धर्मशाला कॉलेज में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला के रेड रिबन क्लब द्वारा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने कॉलेज परिसर में मानव श्रृंखला बनाकर और आकर्षक कैंडल, रंगोली के माध्यम से यस वी कैन एंड टीबी का संदेश प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में टीबी उन्मूलन के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए रेड रिबन का प्रतीकात्मक डिजाइन भी तैयार किया गया। डॉ. नीरज कौशल ने विद्यार्थियों को टीबी के लक्षण, बचाव और उपचार के बारे में जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्य प्रो. राकेश पठानिया ने इस पहल की सराहना की, जो सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है।

टमक की थाप के साथ राज्यस्तरीय लिदबड़ मेला शुरू

डीआईजी सौम्या ने किया मेले का शुभारंभ; मां नारदा शारदा मंदिर में की पूजा, शोभायात्रा भी निकाली

अनंत ज्ञान

कपिल वासुदेवा, नगरोटा बगवां। माता नारदा शारदा को समर्पित नगरोटा के ऐतिहासिक राज्यस्तरीय लिदबड़ मेले का शुभारंभ शोभायात्रा और टमक की थाप के साथ किया गया। मेले का शुभारंभ पुलिस उप महानिरीक्षक उतरी जोन धर्मशाला सौम्या सांबशिवन ने किया।

इस मौके पर एसडीएम नगरोटा मुनीश शर्मा, मेला कमेटी के तमाम सदस्य और नगरोटा वासी मौजूद रहे। सभी ने सर्वप्रथम मां नारदा शारदा के मंदिर में माथा टेका और झंडा रस्म की पूजा-अर्चना की। टमक की थाप के साथ मेले का शुभारंभ हो गया। डीआईजी और एसडीएम नगरोटा ने पौराणिक वाद्य यंत्र टमक बजाने का आनंद लिया। शोभायात्रा मंदिर से नगरोटा के पौराणिक बजरंगबली मंदिर में पहुंची, जहां आशीर्वाद लिया। इसके उपरांत शोभायात्रा नगरोटा के ऐतिहासिक लिदबड़ ग्राउंड पहुंची। उन्होंने कुश्ती के मैदान में झंडा स्थापित किया और इसी के साथ दंगल का शुभारंभ हो गया। डीआईजी ने उन्होंने बच्चों की कुश्ती का भी आनंद लिया। उन्होंने मेले की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मां नारदा शारदा के दर पर आने का मौका मिला, यह उनके जीवन का अद्भुत पल है। उन्होंने एसडीएम नगरोटा ने संबोधन के दौरान मुख्य अतिथि का मेले में मुख्यअतिथि बनकर पहुंचने पर अभिवादन किया। उन्होंने समस्त नगरोटावासियों को राज्य स्तरीय लिदबड़ मेले के शुभारंभ के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा इस वर्ष का यह मेला और अधिक ऐतिहासिक होगा। उन्होंने हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष व पर्यटन विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष आरएस बाली का आभार जताया, जिनके प्रयासों से यह मेला राज्यस्तरीय हुआ और ग्राउंड का कायाकल्प हुआ है। उन्होंने मेले के कार्यक्रम के बारे में बात करते हुए कहा कि मेले में 1 दिन नगरोटा के बच्चों के लिए और 1 दिन नगरोटा की महिलाओं के लिए रखा गया है, जिसमें बच्चे और महिलाएं अपनी प्रतिभा दिखा सकेंगी। उन्होंने बताया कि महिलाओं के लिए 26 मार्च को निशुल्क मेहंदी लगाई जाएगी और प्रतियोगिता में भाग लेने वाली महिलाओं को आरएस बाली और उनकी धर्मपत्नी की तरफ से उपहार दिए जाएंगे। मेले में ब्रज की फूलों की होली और गंगा घाट की आरती मुख्य आकर्षण होगी। उन्होंने गंगा घाट की आरती वाले दिन सभी से घर से दीपक लाने और यहां जलाने की अपील की। उन्होंने कहा 27 और 28 मार्च के दिन हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष व पर्यटन विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष आरएस बाली मुख्य अतिथि होंगे। उन्होंने बताया 27 मार्च के स्टार नाइट में प्रसिद्ध पंजाबी गायक गुरनाम भुल्लर अपने गानों से नचाएंगे।

राज्यस्तरीय लिदबड़ मेले का शुभारंभ शोभायात्रा और टमक की थाप के साथ किया। अनंत ज्ञान

◆ 27 को धूम मचाएंगे प्रसिद्ध पंजाबी गायक गुमनाम भुल्लर

हैप्पी बर्थडे

सुनहाणी गांव के अनंजय शर्मा को जन्मदिवस पर 'अनंत ज्ञान' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

बर्थडे व सालगिरह के फोटो भेजें

बर्थडे हो या शादी की सालगिरह। आपकी खुशियों में हम भी हैं शामिल। अपना फोटो अनंत ज्ञान में प्रकाशित करवाने के लिए नाम और पते सहित व्हाट्सऐप नंबर 88945-21702 पर भेजें।

एआई कोर्स के प्रशिक्षण के लिए मांगे आवेदन

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निदेशालय अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं विशेष रूप से सक्षम वर्गों का सशक्तिकरण की ओर से अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना के तहत जिला कांगड़ा में अनुसूचित जाति श्रेणी के पात्र उम्मीदवारों से कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जा रहे हैं। ऑफिस ऑटोमेशन, अकांउटिंग और पब्लिशिंग सहायक जिसकी अवधि 3 माह तथा योग्यता किसी मान्यता प्राप्त शैक्षणिक संस्थान से किसी भी विषय में बाहरवीं रखी गई है। आवेदन के लिए आवेदक का अनुसूचित जाति वर्ग, हिमाचल प्रदेश का स्थाई निवासी, आयु 18 से 35 वर्ष के मध्य होना अनिवार्य है। आवेदक का चयन स्नातक और बाहरवीं के अंकों की मेरिट के आधार पर होगा। गरीबी रेखा से नीचे संबंधित उम्मीद्वारों को प्राथमिकता दी जाएगी तथा 30 प्रतिशत सीटें महिला प्रार्थी के लिए आरक्षित होंगी। प्रशिक्षुकों को 2000 रुपए प्रति माह दिया जाएगा तथा प्रशिक्षण केंद्र हिप्पा-नीलिट कंप्यूटर लैब, डीसी ऑफिस कॉम्प्लेक्स, कांगड़ा स्थित धर्मशाला निर्धारित किया है।

श्री चामुंडा मंदिर में 8 हजार ने नवाया शीश

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। प्रसिद्ध शक्ति पीठ श्री चामुंडा मंदिर में छठे नवरात्र पर लगभग 8000 श्रद्धालुओं ने माथा टेका। यज्ञशाला में बालक राम की अगुवाई में 31 विद्वान पंडितों व 15 सहायक पंडितों ने यजमान पवन गोस्वामी व सहायक यजमान अविनाश उपाध्याय ने मां कात्यायनी की पूजा-अर्चना की। मंदिर में देवी दर्शनों को आए श्रद्धालुओं ने बताया कि हिमाचल में जितने भी मंदिर हैं, उन सबसे चामुंडा मंदिर बहुत खूबसूरत और अलग दिखता है। यहां इतनी भीड़ भी नहीं है, जिससे बड़े आराम से दर्शन हो रहे हैं। इससे वे संतुष्ट हैं, साथ ही उन्होंने पुलिस प्रशासन व मंदिर प्रशासन की भी सराहना की।

नवनिर्वाचित राज्यसभा सांसद अनुराग शर्मा ने अपने परिवार सहित मां चामुंडा व शिवालय में जाकर शीश नवाया। मंदिर के पुजारी ओंकार ओम व्यास ने पूजा-अर्चना करवाई। उन्होंने यज्ञशाला में पत्नी सहित यज्ञ में आहुतियां अर्पित की। इस मौके पर मंदिर के मंदिर के पुजारी ने आशीर्वाद स्वरूप पति पत्नी को सरोपा भेंट किया गया। इस मौके पर मंदिर अधिकारी राकेश कुमार, पवन गोस्वामी, वीरेंद्र कटोच, अमित मेहता, बॉबी गोस्वामी व चौकी प्रभारी भागमल के अतिरिक्त गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

टीबी उन्मूलन के लिए सामूहिक कार्य करने का लिया संकल्प

राकेश डोगरा, अनंत ज्ञान, डरोह। विश्व टीबी दिवस पर मंगलवार को सिविल अस्पताल थुरल में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस को तपेदिक रोग (टीबी रोग) के प्रति जागरूक करना तथा समय पर जांच और पूर्ण उपचार के लिए प्रेरित करना था। इस कार्यक्रम का नेतृत्व खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. अनीता शर्मा द्वारा किया गया। वहीं, चिकित्सा अधिकारी डॉ. अंजन कालिया, पुरुष स्वास्थ्य पर्यवेक्षक जीवन लाल, अनुप चौहान (एसटीएस), सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ), आशा कार्यकर्ता तथा टीबी चैंपियन उपस्थित रहे। रैली, रंगोली प्रतियोगिता, मेहंदी प्रतियोगिता तथा फेस पेंटिंग के माध्यम से लोगों को टीबी के लक्षण, बचाव एवं उपचार के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने टीबी उन्मूलन के लिए सामूहिक रूप से कार्य करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर आशा कार्यकर्ताओं और टीबी चैंपियनों की भूमिका को विशेष रूप से सराहा गया, जो घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कार्यक्रम का समापन इस संदेश के साथ किया गया कि समय पर जांच और पूरा इलाज ही टीबी से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है।

स्कूल शिक्षा बोर्ड ने खोला शॉर्ट फीस का पोर्टल

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, धर्मशाला। प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड ने मार्च 2026 की परीक्षाओं में शामिल हुए परीक्षार्थियों की बकाया शॉर्ट कैंडिडेट फीस जमा करने के लिए लिंक खोल दिया है। बोर्ड अध्यक्ष डॉ. राजेश शर्मा ने इस संबंध में आधिकारिक बयान जारी करते हुए बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों की स्कूल लॉगिन आईडी पर फीस जमा करने का लिंक सक्रिय कर दिया गया है।

बोर्ड का यह कदम वित्तीय विसंगतियों को दूर करने और परीक्षा प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की दिशा में अहम माना जा रहा है। बोर्ड द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार, संस्थानों के पास 30 अप्रैल तक का सुनहरा मौका है कि वे बिना किसी अतिरिक्त विलंब शुल्क के फीस जमा कर सकें। इसके बाद कैलेंडर के पन्ने पलटते ही जुर्माना भी बढ़ता जाएगा। यदि फीस 1 मई से 15 मई के बीच जमा की जाती है, तो 1000 प्रति कक्षा विलंब शुल्क देना होगा, जबकि 16 मई से 31 मई के बीच यह राशि बढ़कर 2000 प्रति कक्षा हो जाएगी। डॉ. राजेश शर्मा ने चेतावनी दी है कि यदि कोई संस्थान 31 मई तक भी अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता है, तो उसे 5000 प्रति कक्षा के भारी विलंब शुल्क का सामना करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, निर्धारित समयसारिणी के उल्लंघन पर सक्षम प्राधिकारी द्वारा अतिरिक्त दंड भी लगाया जा सकता है। बोर्ड ने सभी स्कूलों को निर्देशित किया है कि वे तकनीकी अड़चनों का इंतजार किए बिना प्रक्रिया को जल्द पूरा करें। सभी संबंधित संस्थानों को समय-सीमा का सख्ती से पालन करना चाहिए, ताकि छात्रों और संस्थानों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ न पड़े। उन्होंने संस्थानों को सलाह दी है कि वे अपने पोर्टल को नियमित रूप से चेक करें और निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार समय पर फीस जमा करना सुनिश्चित करें, ताकि भविष्य में किसी भी प्रशासनिक कार्रवाई से बचा जा सके।

◆ लापरवाही पर देना होगा मोटा जुर्माना, समयसारिणी चूके तो 5000 तक की चपत

पुलिस ने तोड़ी नशा माफिया की कमर, आठ तस्कर सीधे जेल

अनंत ज्ञान

परागपुर। नशा मुक्त हिमाचल अभियान के तहत देहरा पुलिस ने इस बार फिर गिरफ्तारी नहीं, बल्कि तस्करों की कमर तोड़ने वाली रणनीति अपनाते हुए पिट एनडीपीएस एक्ट के तहत दो और आदतन तस्करों को डिटेन कर दिया है।

इसके साथ ही अब तक कुल 8 तस्करों को सीधे जिला कारागार धर्मशाला भेजा जा चुका है, जिससे पूरे क्षेत्र में साफ संदेश गया है कि अब नशे के कारोबार पर सीधा वार होगा। पुलिस की महीनों की खुफिया निगरानी, तकनीकी विश्लेषण और गहन फील्ड जांच के बाद गरली और आसपास के क्षेत्रों में सक्रिय नशा नेटवर्क की परतें खुलीं। 24 मार्च को पुलिस टीमों ने एक साथ दबिश देते हुए विजय कुमार को गरली क्षेत्र से और मनु शर्मा उर्फ माल्टा को ज्वालामुखी से हिरासत में लिया। दोनों आरोपी लंबे समय से चरस और चिट्टा तस्करी में सक्रिय बताए जा रहे हैं और युवाओं को नशे की गिरफ्त में धकेलने में उनकी भूमिका सामने आई है। इस बार पुलिस ने केवल अपराध के बाद कार्रवाई करने के बजाय अपराध से पहले रोक की रणनीति अपनाई है। पिट एनडीपीएस एक्ट जैसे कठोर कानून के तहत दोनों आरोपियों को तीन माह के लिए जिला कारागार धर्मशाला में निरुद्ध किया गया है। यह कदम इस बात का संकेत है कि अब नशा तस्करी को जड़ से खत्म करने के लिए पुलिस हर स्तर पर सख्ती बरत रही है। देहरा पुलिस इससे पहले भी 6 अन्य तस्करों को इसी कानून के तहत जेल भेज चुकी है। अब यह आंकड़ा 8 तक पहुंच चुका है, जिससे नशा माफिया के नेटवर्क में भारी खलबली मच गई है। लगातार हो रही इन कार्रवाइयों से सप्लाई चेन पर सीधा असर पड़ रहा है और तस्करों में डर का माहौल बनता जा रहा है। गरली और आसपास के क्षेत्रों में इस कार्रवाई के बाद लोगों में राहत की उम्मीद जगी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पहली बार इस स्तर पर सख्त कार्रवाई देखने को मिल रही है, जिससे युवाओं को नशे के जाल से बाहर निकालने में मदद मिलेगी। देहरा पुलिस ने साफ कर दिया है कि अब 'जीरो टॉलरेंस' नहीं, बल्कि 'नो मर्सी' की नीति अपनाई गई है। नशा तस्करी में संलिप्त किसी भी व्यक्ति को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जाएगा और बार-बार संलिप्त पाए जाने वालों पर सीधे पिट एनडीपीएस के तहत कार्रवाई जारी रहेगी।

नेरना में युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत

अनंत ज्ञान, जवाली। पुलिस थाना रैहन के अंतर्गत चकबाड़ी पंचायत के नेरना गांव में 16 वर्षीय युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। मिली जानकारी के अनुसार 23 मार्च 2026 को दोपहर करीब 3 बजे 112 हेल्पलाइन के माध्यम से सूचना मिली कि आदित्य पुत्र स्व. रामस्वरूप निवासी गांव चकबाड़ी अपने ननिहाल के गांव नेरना में बेसुध अवस्था में पड़ा हुआ है। सूचना मिलते ही पुलिस थाना रैहन के प्रभारी सुनील कुमार अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। पुलिस द्वारा मृतक की नानी स्वर्णा देवी सहित अन्य परिजनों के बयान दर्ज किए गए।

परिजनों के अनुसार मृतक आदित्य 10वीं कक्षा का छात्र था। प्रारंभिक जांच में किसी भी प्रकार की साजिश या आपराधिक गतिविधि के संकेत नहीं मिले हैं। पुलिस ने धारा 194 बीएनएसएस के तहत केस दर्ज कर लिया है तथा मृतक के शव का पोस्टमार्टम हेतू सिविल अस्पताल नूरपुर में भेज दिया है।

इस संबंध में एएसपी नूरपुर धर्म चंद वर्मा ने पुष्टि करते हुए बताया कि पुलिस ने शव की पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी कर ली है तथा शव परिजनों को सौंप दिया है। उन्होंने कहा कि मामले में आगामी कार्रवाई पूरी गहनता के साथ की जा रही है।

हरीश राणा की मृत्यु पर पलेटा गांव में शोक की लहर

अनंत ज्ञान

नरेंद्र डोगरा, जयसिंहपुर। जयसिंहपुर के पलेटा गांव और गाजियाबाद के हरीश राणा का मंगलवार को दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन हो गया। हरीश राणा को 11 मार्च को सुप्रीम कोर्ट द्वारा इच्छामृत्यु की अनुमति दी गई थी। वह पिछले 13 वर्षों से कोमा में थे, जब 2013 में पंजाब विश्वविद्यालय में छात्र रहते हुए वह चौथी मंजिल से गिर गए थे, जिसके कारण उनके सिर में गंभीर चोटें आई थीं।

इस हादसे के बाद से उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ, और डॉक्टरों के अनुसार उनके ठीक होने की संभावना लगभग न के बराबर थी। हरीश राणा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के इंस्टीट्यूट रोटरी कैंसर अस्पताल में भर्ती थे। उनका निधन क्षेत्र में शोक की लहर छोड़ गया, और इस मामले ने पूरे देश को झकझोर दिया। हरीश के परिवार के सदस्य लंबे समय से प्रदेश से बाहर रह रहे थे, क्योंकि उनके पिता अशोक राणा रोजगार और अन्य कारणों से बाहर बस गए थे। हालांकि, परिवार के सदस्य समय-समय पर अपने पैतृक गांव आते-जाते रहते थे। हरीश के परिवार में उनके पिता अशोक राणा, मां निर्मला देवी, भाई आशीष और बहन भावना शामिल हैं। 2013 में हुए इस हादसे के बाद से हरीश राणा का जीवन संघर्षपूर्ण रहा और उनका मामला इच्छामृत्यु के अधिकार पर एक महत्वपूर्ण बहस का कारण बना। सुप्रीम कोर्ट ने हरीश राणा को पैसिव इच्छामृत्यु की अनुमति दी, जिससे इस मामले ने भारतीय न्याय प्रणाली में इस संवेदनशील मुद्दे पर ध्यान आकर्षित किया। क्षेत्रवासियों का कहना है कि भले ही हरीश का परिवार लंबे समय से प्रदेश से बाहर रहा हो, लेकिन उनका अपने पैतृक गांव से गहरा जुड़ाव बना हुआ था। यह घटना समाज में इच्छामृत्यु के अधिकार पर विचार और जागरुकता को बढ़ावा देने का एक बड़ा कारण बनी।

◆ सुप्रीम कोर्ट से मिली थी इच्छामृत्यु की अनुमति

कृषि विवि ने कौशल विकास पहल के माध्यम से 200 महिला किसानों को किया सशक्त

महिलाओं को कपड़ा रंगाई, क्रोशिया कार्य जैसे व्यावहारिक कौशल के गुर सिखाए गए। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

अजय पाल, पालमपुर। चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने ग्रामीण महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के माध्यम से कौशल उन्नयन पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की।

यह कार्यक्रम उद्यमिता विकास के लिए आयोजित किया गया, जिसमें कांगड़ा जिले के पंचरुखी, पालमपुर और बैजनाथ खंडों से 200 अनुसूचित जाति की महिला किसानों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एससीएसपी योजना के अंतर्गत संचालित हुआ। कार्यक्रम में खाद्य विज्ञान, पोषण एवं प्रौद्योगिकी, वस्त्र डिजाइनिंग, पारिवारिक संसाधन प्रबंधन और उपभोक्ता विज्ञान जैसे विभागों द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किए गए। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एके पांडा ने कहा कि इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य महिलाओं के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना और उनके आर्थिक दायरे को विस्तृत करना है। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को मौसमी फलों से उत्पाद निर्माण, कपड़ा रंगाई, क्रोशिया कार्य, सजावटी गमला निर्माण, साबुन निर्माण जैसे व्यावहारिक कौशल के गुर सिखाए गए। इसके अलावा, महिलाओं को महिला अनुकूल कृषि यंत्रों और विपणन रणनीतियों के बारे में भी जानकारी दी गई। सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. चंद्रकांता वत्स ने प्रतिभागियों को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर मंडल स्तरीय कार्यशाला आयोजित

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला। धर्मशाला में पंडित दीनदयाल सम्मेलन कक्ष, हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड में मंडल स्तर (कांगड़ा-चंबा, हमीरपुर और ऊना) की विशेष गहन पुनर्निरक्षण एसआईआर (स्पेशल रिवाइजेशन ऑफ इलेक्ट्रोरल रोल) से संबंधित एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला की अध्यक्षता नंदिता गुप्ता, मुख्य निर्वाचन अधिकारी हिमाचल प्रदेश ने की। कार्यशाला में कांगड़ा, चंबा, हमीरपुर और ऊना जिलों के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, निर्वाचन कानूनगो और आईटी स्टाफ ने भाग लिया। नंदिता गुप्ता ने एसआईआर से संबंधित निर्देशों और संभावित चुनौतियों पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, उपेंद्रनाथ शुक्ला और मुंशी राम ने एसआईआर प्रक्रिया और निर्वाचन विभाग के दिशा-निर्देशों की जानकारी दी। विरेंद्र कुमार ने आईटी अनुप्रयोगों की जानकारी प्रदान की।

खेलकूद राजकीय बीएड कॉलेज की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का किया आयोजन

रोहित और गीता को 'सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ी सम्मान'

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, धर्मशाला। राजकीय बीएड कॉलेज धर्मशाला के सत्र 2025-26 की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ मंगलवार को प्रिंसिपल डॉ. युवराज सिंह पठानिया की अध्यक्षता में धर्मशाला के 'सिंथेटिक-ग्राउंड' में किया गया। पुरुष वर्ग में द्वितीय सत्र के प्रशिक्षु-अध्यापक रोहित कुमार (काशी सदन) तथा महिला वर्ग में द्वितीय सत्र की प्रशिक्षु-अध्यापिका गीता देवी (नालंदा सदन) को उनके उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए 'सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ी सम्मान' से अलंकृत किया गया।

इसी क्रम में अनुशासन, समन्वय एवं प्रस्तुति की उत्कृष्टता के आधार पर 'श्रेष्ठ मार्च-पास्ट' का खिताब काशी सदन को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय, धर्मशाला के प्रिंसिपल 'प्रो. राकेश पठानिया' बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। मुख्यातिथि ने खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन करते हुए बताया कि खेलें न केवल हमारे पाठ्यक्रम का अपितु जीवन का भी अनिवार्य अंग हैं, जो कि शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के साथ-साथ हमारे जीवन में अनुशासन को बढ़ावा देती हैं। पुरुष वर्ग की 100 मीटर दौड़ में प्रथम रोहित कुमार (काशी सदन), द्वितीय निखिल (विक्रमशिला), तृतीय कुलदीप (तक्षशिला), महिला वर्ग की 100 मीटर दौड़ में गीता देवी (नालंदा सदन) प्रथम, द्वितीय नेहा (तक्षशिला), तृतीय प्रियंका गौरा (विक्रमशिला), 200 मीटर पुरुष-वर्ग की दौड़ में प्रथम रोहित कुमार (काशी सदन), द्वितीय ललित (तक्षशिला), तृतीय उमित (विक्रमशिला), 200 मीटर महिला वर्ग की दौड़ में प्रथम भारती (काशी सदन), द्वितीय मानवी (तक्षशिला), तृतीय ज्योति (तक्षशिला), 400 मीटर पुरुष वर्ग की दौड़ में प्रथम रविंद्र राणा (विक्रमशिला), द्वितीय रोहित (काशी), तृतीय निखिल ठाकुर (विक्रमशिला), 400 मीटर महिला वर्ग की दौड़ में प्रथम गीता देवी (नालंदा सदन), द्वितीय-शैली (विक्रमशिला), तृतीय अंकिता (तक्षशिला), शॉट पुट, पुरुष वर्ग प्रथम ललित (तक्षशिला), द्वितीय कैलाश ठाकुर (विक्रमशिला) तृतीय - निकेश (तक्षशिला), शॉट पुट महिला वर्ग में प्रथम - नेहा (तक्षशिला), द्वितीय पल्लवी (तक्षशिला), तृतीय - रीशा (विक्रमशिला) रहे।

समापन अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया, जिससे उनके प्रयासों एवं खेल भावना सम्मान एवं बढ़ावा मिल सके।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी किए सम्मानित। अनंत ज्ञान

◆ 'श्रेष्ठ मार्च-पास्ट' का खिताब काशी सदन के नाम

न्यूज ब्रीफ

सुनील शर्मा ने छिंज कमेटी को दिए 11 हजार रुपए

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। सीएम सुक्खू के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा बिट्टू ने अघार पंचायत के धनवीं गांव के छिंज मेले में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। सुनील शर्मा बिट्टू ने छिंज कमेटी को ग्यारह हजार रुपए देने की घोषणा की। उन्होंने गांव की सड़क की मरम्मत और मैदान के लिए धनराशि का प्रावधान करवाने का आश्वासन भी दिया। इस अवसर पर राज्य नशा निवारण बोर्ड के संयोजक एवं सलाहकार नरेश ठाकुर, एपीएमसी के अध्यक्ष अजय शर्मा, राज्य नागरिक आपूर्ति निगम के बीओडी मेंबर विक्रम शर्मा, एचपीएमसी के बीओडी मेंबर राजेश ठाकुर, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजेश आनंद, राकेश वर्मा, टिंकू आदि लोग उपस्थित थे।

मन्वी गांव में 29 को होगा दंगल का आयोजन

अनंत ज्ञान, जाहू। भोरंज उपमंडल के मन्वी गांव में 29 मार्च को शिव मंदिर के पास बजरंग बली अखाड़ा छिंज कमेटी द्वारा दंगल आयोजित होगा। यह आयोजन पिछले 18 वर्षों से लगातार किया जा रहा है। सदस्य रवि कुमार शर्मा के अनुसार, इस बार भी बेहतरीन पहलवान भाग लेंगे। छोटी और बड़ी कुश्ती मुख्य आकर्षण रहेंगी, जबकि विशेष मुकाबले भी होंगे। विजेताओं को इनाम और गुर्ज दिए जाएंगे। 28 मार्च को आने वाले पहलवानों के लिए ठहरने और भोजन की व्यवस्था की गई है।

सहकारी सभा साई का वार्षिक अधिवेशन 28 को

अनंत ज्ञान, धनेटा। उपमंडल नादौन के दी साई (गवालपथर) कृषि सेवा सहकारी सभा का वार्षिक अधिवेशन 28 मार्च को दोपहर 12 बजे सभा कार्यालय के प्लांगण में होगा। सभा के सचिव चमन लाल ने बताया कि गत वर्ष का लेखा-जोखा व आगामी वर्ष के लिए कार्य की रूपरेखा के बारे में चर्चा की जाएगी। सभी खाताधारक आमंत्रित हैं।

गजरेडा में श्रीमद्भागवत कथा कल से

अनंत ज्ञान, भोरंज। कक्कड़ पंचायत के गजरेडा गांव स्थित बाबा बालक नाथ मंदिर में 26 मार्च से 3 अप्रैल तक श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन होगा। मंदिर कमेटी के प्रधान प्रेम चंद राव ने बताया कि यह आयोजन हर वर्ष ग्रामीणों के सहयोग से होता है। इस बार कथा वाचन पंडित कश्मीर चंद करेंगे। कार्यक्रम के दौरान प्रतिदिन पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन और प्रसाद वितरण होगा। श्रद्धालुओं से अधिक संख्या में पहुंचकर कथा श्रवण करने की अपील की गई है।

बिझड़ी कस्बे में डीएवी स्कूल का उद्घाटन

अनंत ज्ञान, बड़सर। बड़सर विधानसभा के बिझड़ी कस्बे में मंगलवार को डीएवी पब्लिक स्कूल का विधिवत उद्घाटन हुआ। मुख्य अतिथि केएस गुलेरिया ने ओपनिंग सेरेमनी में भाग लिया। संस्थान के कार्यवाहक प्रिंसिपल दारा सिंह ढटवालिया ने उनका स्वागत करते हुए गुलदस्ता भेंट किया। स्कूल में यूकेजी से पांचवीं तक की कक्षाएं शुरू होंगी और सीबीएसई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई कराई जाएगी। उद्घाटन समारोह जय श्रीकृष्ण के उद्घोष के साथ संपन्न हुआ। यह स्कूल समिति, नई दिल्ली द्वारा संचालित किया जाएगा।

पेंशनर्स संघ ने स्थापना दिवस की तैयारियों पर की चर्चा

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। 29 मार्च को आयोजित होने वाले संघ के राज्य स्तरीय 29वें स्थापना दिवस समारोह की तैयारियों की समीक्षा के लिए पेंशनर भवन हमीरपुर में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रदेशाध्यक्ष केसी गौतम ने की। इसमें प्रदेश, जिला और खंड पदाधिकारी शामिल हुए। समारोह के प्रबंध के लिए विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया और जिम्मेदारियां सौंपी गईं। जिला प्रधान देव राज पटियाल को समन्वय और नोडल अधिकारी का दायित्व दिया गया। सभी पदाधिकारियों और सदस्यों से अपील की गई कि वे समय पर उपस्थित होकर समारोह में सहयोग करें ताकि अतिथियों को कोई असुविधा न हो।

आपत्तियां या सुझाव 28 तक करवाएं दर्ज

अनंत ज्ञान बड़सर। एसडीएम बड़सर स्वाति डोगरा ने बताया कि उपमंडल के अंतर्गत आने वाली तहसील बड़सर और ढटवाल (बिझड़ी) तथा उपतहसील भोटा में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए जमीन के सर्किल रेट तय कर दिए गए हैं। ये रेट पहली अप्रैल 2026 से 31 मार्च 2027 तक की अवधि के लिए तय किए गए हैं। एसडीएम ने कहा कि तहसीलदार बड़सर, तहसीलदार ढटवाल (बिझड़ी) और नायब तहसीलदार भोटा द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के लिए निर्धारित की गई जमीन की इन दरों के संबंध में अगर किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति है या फिर वह इनके संबंध में अपना सुझाव देना चाहता है तो वह अपनी आपत्तियां या सुझाव 28 मार्च तक एसडीएम कार्यालय बड़सर में दर्ज करवा सकता है या डाक द्वारा भेज सकता है। एसडीएम ने कहा कि इस तिथि के बाद कोई भी आपत्ति या सुझाव स्वीकार नहीं किया जाएगा।

सरकार ने हिमाचल की आर्थिक स्थिति को किया कमजोर : राणा

अनंत ज्ञान, सुजानपुर। प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ प्रवक्ता विधायक राजेंद्र राणा ने प्रदेश सरकार और मुख्यमंत्री पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि मौजूदा हालात केवल शुरुआत हैं और आने वाले समय में कर्मचारियों के वेतन में और कटौती हो सकती है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने हिमाचल प्रदेश की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया है, जिससे कर्मचारी और आम जनता दोनों आर्थिक दबाव झेल रहे हैं। राणा के अनुसार, बीते साढ़े तीन वर्षों में सरकार ने भारी कर्ज लिया, लेकिन विकास कार्यों की बजाय धन का दुरुपयोग हुआ। उन्होंने केंद्र से प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग करते हुए कहा कि इससे कर्मचारियों और जनता को राहत मिल सकती है। बजट पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि पहली बार राज्य का बजट घटा है और उसके बाद वेतन में कटौती की गई। उन्होंने 300 यूनिट मुफ्त बिजली योजना पर भी सवाल उठाए और पात्र लाभार्थियों की सूची सार्वजनिक करने की मांग की। इसके अलावा, उन्होंने महंगाई, पेट्रोल-डीजल पर बढ़े टैक्स, 5% सेस और एंट्री टैक्स को लेकर सरकार की आलोचना की तथा पुलिस के दुरुपयोग के भी आरोप लगाए।

डीसी ने किया टीबी मुक्त हमीरपुर के लिए 100 दिवसीय स्क्रीनिंग अभियान का शुभारंभ

432 गांवों के करीब 1.70 लाख लोगों की जांच करेंगी स्वास्थ्य विभाग की टीमें : गंधर्वा राठौड़

अनंत ज्ञान

हमीरपुर। उपायुक्त गंधर्वा राठौड़ ने मंगलवार को विश्व टीबी दिवस के उपलक्ष्य पर टीबी मुक्त अभियान के तहत 100 दिवसीय स्क्रीनिंग अभियान का शुभारंभ किया।

उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग की टीमें जिले की कुल 5.15 लाख की अनुमानित आबादी में से 432 गांवों के करीब 1.70 लाख लोगों की प्रारंभिक जांच करेंगी। इन लोगों में 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोग, हाइपरटेंशन, बीपी-शुगर और अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रस्त लोग शामिल हैं, जिन्हें टीबी के रोग की चपेट में आने की ज्यादा आशंका रहती है। डीसी ने बताया कि इस विशेष अभियान के लिए स्वास्थ्य विभाग ने पहले ही टीमों का गठन कर लिया है। इन्हें प्रशिक्षित भी किया जा चुका है। इन टीमों में आशा वर्कर्स, सीएचओ, अन्य स्वास्थ्य कर्मचारी और आवश्यकता पड़ने पर स्वास्थ्य अधिकारी भी शामिल होंगे। गंधर्वा राठौड़ ने बताया कि फील्ड में मौके पर ही लोगों के एक्सरे के लिए तीन पोर्टेबल डिजिटल एक्सरे मशीनों का प्रयोग किया जाएगा और स्वास्थ्य केंद्रों के आसपास के क्षेत्रों के लोगों के एक्सरे स्वास्थ्य केंद्रों पर भी लिए जा सकते हैं। उपायुक्त ने कहा कि जिला हमीरपुर को टीबी मुक्त बनाने के लिए यह अभियान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि टीबी का पूरी तरह इलाज संभव है और अगर इसका समय पर पता लग जाए तो मरीज बहुत जल्दी ठीक हो जाता है, इसलिए सभी लोग स्वास्थ्य विभाग की टीमों का सहयोग करें और टीबी की आशंका होने पर अपनी जांच अवश्य करवाएं। जांच में अगर टीबी की पुष्टि होती है तो घबराएं नहीं, क्योंकि इसका पूरी तरह इलाज संभव है। डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही दवाई खाएं और दवाई की कोई भी खुराक न छोड़ें। डॉक्टर द्वारा बताई गई समय अवधि तक पूरी दवाई खाएं। इस अवसर पर सीएमओ डॉ. प्रवीण चौधरी, जिला क्षयरोग नियंत्रण अधिकारी डॉ. सुनील वर्मा और अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

100 दिवसीय स्क्रीनिंग अभियान का शुभारंभ करतीं डीसी। अनंत ज्ञान

बाबा बालक नाथ के दर्शनों को पहुंची महिला की हार्ट अटैक से मौत

एसके ठाकुर, अनंत ज्ञान, बड़सर। सिद्ध पीठ बाबा बालक नाथ मंदिर में दर्शन के दौरान एक महिला की हार्ट अटैक से दुखद मृत्यु हो गई। यह घटना मंगलवार सुबह करीब 11 बजे मंदिर परिसर में हुई, जब 68 वर्षीय कृष्णा कुमारी, जो जिला कांगड़ा के देहरा तहसील के नोरा गांव की निवासी थीं, अपने परिवार के साथ मंदिर में माथा टेकने आई थीं।

◆ न्यास प्रशासन ने दी 10,000 रुपए सहायता

अचानक महिला को हार्ट अटैक आया, जिससे वह बेहोश हो गई। मौके पर मौजूद न्यास प्रशासन ने तत्परता दिखाते हुए तुरंत प्राथमिक उपचार शुरू किया और उसे सिविल अस्पताल बड़सर भेजा गया। हालांकि, चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मंदिर के अधिकारी केशव कुमार ने इस घटना की पुष्टि की और बताया कि महिला की मृत्यु हार्ट अटैक के कारण हुई। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि मृतक महिला के परिजनों को 10,000 रुपए की आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई है। इस घटना से परिवार और मंदिर प्रबंधन दोनों ही शोकाकुल हैं। इस दुखद घटना ने सबको गहरे सदमे में डाल दिया है और मंदिर परिसर में दुख का माहौल है।

महिलाओं की भागीदारी से ही सशक्त लोकतंत्र का निर्माण संभव : प्रो. धूमल

प्रदेश कार्यकारिणी की नवनियुक्त सदस्यों ने की भेंट। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

हमीरपुर। पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रो. प्रेम कुमार धूमल के समीरपुर निवास पर महिला मोर्चा की प्रदेश कार्यकारिणी की नवनियुक्त सदस्य उषा बिरला, अनिता गथानिया और रीना सपहिया ने महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष अर्चना चौहान की अगुवाई में शिष्टाचार भेंट की।

इस अवसर पर प्रो. धूमल ने कहा कि वर्तमान राजनीति में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और उनकी सक्रिय भागीदारी के बिना सशक्त लोकतंत्र अधूरा है। उन्होंने भाजपा महिला मोर्चा की संगठन सुदृढ़ करने और नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में योगदान की सराहना की। प्रो. धूमल ने कहा कि महिलाओं की नेतृत्व क्षमता और संवेदनशीलता पार्टी को सशक्त बना रही है। नवनियुक्त सदस्यों ने महिला मोर्चा की ओर से भाजपा की नीतियों और कार्यक्रमों को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का संकल्प लिया, जिससे संगठन को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त होगा और पार्टी की विचारधारा मजबूत होगी।

मेहंदी प्रतियोगिता में स्वाति और भाषण में राखी अव्वल

◆ आईटीआई हमीरपुर में मनाया विश्व टीबी दिवस

अनंत ज्ञान

हमीरपुर। विश्व टीबी दिवस के उपलक्ष्य पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने मंगलवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान हमीरपुर में एक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. रमेश रत्तू, स्वास्थ्य पर्यवेक्षक राज कुमार तथा टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के पर्यवेक्षक जीवन कुमार उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यार्थियों में टीबी के प्रति जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से पोस्टर मेकिंग, मेहंदी एवं भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मेहंदी प्रतियोगिता में स्वाति ने प्रथम, मलिका ने द्वितीय तथा संदेश ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में ज्योति भारती एवं तरनजीत कौर ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान, अलैक्सी एवं दीक्षा ने द्वितीय स्थान और पलक एवं संजना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण स्पर्धा में राखी ने प्रथम, मेहा ने द्वितीय तथा प्रिया शर्मा ने तृतीय स्थान हासिल किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रमेश रत्तू ने क्षयरोग के कारणों, लक्षण, बचाव एवं उपचार के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। संस्थान के प्रधानाचार्य सुभाष चंद शर्मा ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए बीएमओ डॉ. रमेश रत्तू और स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारियों का आभार व्यक्त किया तथा इस प्रकार के जागरुकता कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण संस्थान हमीरपुर में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया। अनंत ज्ञान

सुजानपुर में वायुसेना के एयर शो की तैयारियां पूरीं

4 विमानों ने भरी प्रैक्टिस उड़ानें

अनंत ज्ञान

सुजानपुर। भारतीय वायुसेना की विश्व प्रसिद्ध सूर्य किरण एरोबेटिक टीम की ओर से 25 और 26 मार्च को सैनिक स्कूल सुजानपुर टिहरा के मैदान के ऊपर किए जाने वाले एयर शो की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मंगलवार को सूर्य किरण एरोबेटिक टीम के 4 हॉक एमके-132 जेट विमानों ने प्रैक्टिस उड़ानें भरीं।

बुधवार और वीरवार को दोनों दिन सुबह करीब 10:45 बजे सूर्य किरण एरोबेटिक टीम के कुल 9 विमान एयर शो शुरू करेंगे, जोकि लगभग आधे घंटे का होगा। एयर फोर्स स्टेशन चंडीगढ़ और आदमपुर से उड़ान भरने के बाद ये विमान सुजानपुर के मैदान के ठीक ऊपर कई कलाबाजियां करते हुए और एक साथ कई फॉर्मेशन्स बनाकर कई करतब दिखाकर दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देंगे। डीसी गंधर्वा राठौड़ ने बताया कि इस एयर शो के सफल आयोजन के लिए प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन की ओर से वायु सेना एवं सैनिक स्कूल सुजानपुर टिहरा को हरसंभव सहयोग प्रदान किया जा रहा है तथा मैदान में मुख्य अतिथि, अन्य अतिथियों तथा आम लोगों के बैठने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं। उधर, सैनिक स्कूल की प्रधानाचार्य एवं वायुसेना की वरिष्ठ अधिकारी ग्रुप कैप्टन रचना जोशी ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में वायु सेना के इस तरह के पहले एयर शो की मेजबानी का गौरव सुजानपुर को मिल रहा है। इससे हिमाचल प्रदेश के बच्चे और युवा सैन्य अधिकारी बनने के लिए प्रेरित होंगे। उन्होंने बताया कि एयर फोर्स की इस टीम में सैनिक स्कूल सुजानपुर टिहरा के दो पूर्व विद्यार्थी एवं वर्तमान में वायुसेना में सेवारत एयर कमोडोर बृजेश पॉल और स्क्वाड्रन लीडर हिमकुश चंदेल भी उड़ान भरेंगे। ग्रुप कैप्टन रचना जोशी ने सुजानपुर और इसके आस-पास के सभी क्षेत्रों के लोगों, विशेषकर बच्चों तथा युवाओं से इस एयर शो के रोमांच का अनुभव लेने के लिए निर्धारित समय से पहले ही मैदान में पहुंचने की अपील की है।

हिमाचल की जनता बेहाल, कांग्रेस का खजाना मालामाल : राकेश ठाकुर

अनंत ज्ञान

◆ पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 5 रुपए की वृद्धि जनता की जेब पर सीधा हमला

हमीरपुर। भाजपा जिलाध्यक्ष राकेश ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश में ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 5 रुपए की वृद्धि आम आदमी की जेब पर सीधा हमला है, जिससे जनता पर सालाना हजारों करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

उन्होंने आरोप लगाया कि इससे पहले भी दो चरणों में 10 रुपए प्से अधिक वैट लगाया गया था और अब 5 पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 5 रुपए की वृद्धि आम आदमी की जेब पर सीधा हमला का सेस लगाकर कुल 15 पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 5 रुपए की वृद्धि आम आदमी की जेब पर सीधा हमला प्रति लीटर का अतिरिक्त भार डाल दिया गया है।

इसके परिणामस्वरूप प्रदेश में पेट्रोल की कीमत 100 पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 5 रुपए की वृद्धि आम आदमी की जेब पर सीधा हमला के पार और डीजल की कीमत 90 रुपए से अधिक पहुंच गई है। राकेश ने कहा कि इस बढ़ोतरी के बाद हिमाचल प्रदेश में ईंधन की कीमतें पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ से भी अधिक हो जाएंगी, जिससे सीमावर्ती जिलों के व्यापार और परिवहन क्षेत्र को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि वाणिज्यिक वाहनों पर एंट्री टैक्स बढ़ाकर सरकार ने माल ढुलाई महंगी कर दी है, जिसका सीधा असर फल, सब्जी और दूध जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार के कार्यकाल में पहली बार सितंबर 2024 में लगभग 2 लाख कर्मचारियों और 1.5 लाख पेंशनभोगियों को समय पर वेतन और पेंशन नहीं मिल पाई।

सीएम के जन्मदिन पर कल लगेगा रोजगार मेला

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू के जन्मदिन के अवसर पर 26 मार्च को हमीरपुर में रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। जिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष सुमन भारती ने बताया कि रोजगार मेला बचत भवन, हमीरपुर में सुबह 10 बजे से शुरू होगा, जिसमें करीब 30-35 प्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी। मेले में सुरक्षा गार्ड, प्रोडक्शन हेल्पर, फील्ड ऑफिसर, ऑपरेटर, इलेक्ट्रिशियन, सेल्स एग्जीक्यूटिव और अकाउंटेंट सहित विभिन्न पदों पर भर्ती की जाएगी। 10वीं पास/फेल से लेकर स्नातक, स्नातकोत्तर, आईटीआई और बी.टेक डिप्लोमा धारक युवा इसमें आवेदन कर सकते हैं।

एसआईएस इंडिया लिमिटेड, इंडैग रबर, हिमगिरि मल्टीलेवल मैजिक, वेलसन टेक्सकेम, भाखड़ा सर्विस, जीडीएच इंडस्ट्रीज, वर्धमान इस्पात उद्योग, हैवेल्स इंडिया, विनसम टेक्सटाइल्स, पिनेकल लाइफ साइंस, ऐमिल फार्मास्यूटिकल्स, अंगद एंटरप्राइजेज सहित कई नामी कंपनियां हिस्सा लेंगी। जिला कांग्रेस अध्यक्ष ने सभी पात्र युवाओं से कहा कि वे अपने मूल प्रमाण पत्र और बायोडाटा के साथ समय पर पहुंचकर इस रोजगार मेले का अधिकतम लाभ उठाएं।

कपिंग थैरेपी से 30 रोगियों का उपचार

चकमोह गांव में आयुष ग्राम कार्यक्रम आयोजित। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

एसके ठाकुर, बड़सर। आयुष विभाग ने मंगलवार को बड़सर उपमंडल के चकमोह गांव में आयुष ग्राम कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुभाष ढटवालिया ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

जिला आयुष अधिकारी डॉ. राजेश कुमार कालिया ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा विभाग की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। सुभाष ढटवालिया ने कहा कि आज के दौर में भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद और योग का महत्व लगातार बढ़ रहा है। लोग बड़े पैमाने पर इन्हें अपना रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार भी आयुष विभाग के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहित कर रही है। बहुविशेषज्ञ चिकित्सा शिविर के साथ योग एवं प्राणायाम सत्र, पैरा सर्जिकल प्रोसीजर के माध्यम से लोगों का उपचार भी किया गया। क्षेत्र के लगभग 252 लोगों ने इन सुविधाओं का लाभ उठाया। लगभग 50 लोगों ने योग एवं प्राणायाम सत्र में भाग लिया। कपिंग थैरेपी से भी लगभग 30 रोगियों का उपचार किया गया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 600 औषधीय पौधों का निशुल्क वितरण भी किया गया। इस आयोजन में उपमंडलीय आयुष चिकित्सा अधिकारी डॉ. आदेश गोयल, कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. विशाल भाटिया, विशेषज्ञ डॉक्टरों में डॉ. विजय, डॉ. प्रीति, डॉ. विपिन, डॉ. निरुपमा, डॉ. प्रशांत, डॉ. सविता, आयुर्वेदिक फार्मेसी अधिकारी और विभाग के अन्य कर्मचारियों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। स्वयं सेवक समूह के शुभम सोनी ने भी सराहनीय योगदान दिया। जबकि, स्थानीय महिलाओं ने अपने उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई। हर्बल गार्डन नेरी के प्रभारी डॉ. कमल भारद्वाज ने भी लोगों को औषधीय पौधों की जानकारी दी।

सूर्यांश ने एनएमएमएस परीक्षा में झटका प्रदेशभर में तृतीय स्थान, किया सम्मानित

गरस्यान विद्यालय में सम्मान समारोह आयोजित। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

भोरंज। उपमंडल भोरंज के राजकीय माध्यमिक एवं प्राथमिक क्लस्टर पाठशाला गरस्यान के छात्र सूर्यांश ने एनएमएमएस परीक्षा उत्तीर्ण कर हिमाचल प्रदेश में तीसरा स्थान हासिल किया।

इस उपलब्धि पर विद्यालय में सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सूर्यांश को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। विद्यालय परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्याध्यापक पवन कुमार, मीना देवी, रीता देवी, कनिष्क सिंह, रक्षा देवी और प्रियंका कुमारी सहित संजय कुमार एवं अंजू देवी (पीटीएमटीडब्ल्यू), विजय कुमारी एवं रतनी देवी (एमडीएम वर्कर) तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त एसएमसी प्रधान अति देवी भी समारोह में विशेष रूप से मौजूद रहीं। समारोह के दौरान सभी शिक्षकों एवं उपस्थित सदस्यों ने सूर्यांश को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए बधाई दी और उसके उज्ज्वल एवं स्वर्णिम भविष्य की कामना की।

वरिष्ठ नागरिकों को दें सम्मान उनके अनुभवों से लें सीख: चमन

अनंत ज्ञान

भोरंज। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने भकरेड़ी स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भोरंज में वृद्धजनों के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत 'इंटर जनरेशनल बॉन्डिंग' यानी अंतर-पीढ़ीगत संबंध विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें जिला कल्याण अधिकारी चमन लाल शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

जिला कल्याण अधिकारी ने पीढ़ियों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि वृद्धों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा का समन्वय ही समाज की वास्तविक शक्ति है। अन्य वक्ताओं ने भी युवाओं को वरिष्ठ नागरिकों से जीवन मूल्यों, संस्कारों एवं अनुभवों को आत्मसात करने का संदेश दिया तथा बुजुर्गों के प्रति सम्मान एवं सेवाभाव बनाए रखने का आह्वान किया। इससे पहले, तहसील कल्याण अधिकारी बलदेव सिंह ने मुख्य अतिथि, अन्य अतिथियों एवं वक्ताओं, वरिष्ठ नागरिकों तथा आईटीआई के विद्यार्थियों का स्वागत किया तथा विभाग की योजनाओं की जानकारी दी।

आईटीआई के विद्यार्थियों ने डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता विषय पर अपने विचार रखे तथा साइबर अपराधों से बचाव के उपायों की जानकारी साझा की। कई वरिष्ठ नागरिकों ने भी अपने जीवन अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को संयम, अनुशासन तथा जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर आईटीआई के प्रधानाचार्य अनिल ठाकुर, हेल्थ सुपरवाइजर सुनील कुमार, एसआई अजय कुमार, पहचान संस्था हमीरपुर की अध्यक्ष चेतना शर्मा, आईटीआई और अन्य विभागों के अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

आईटीआई भोरंज में संवाद कार्यक्रम आयोजित। अनंत ज्ञान

आपदा में साथ नहीं खड़े हुए सांसद, अब सपने न देखे भाजपा : ललित ठाकुर

अनंत ज्ञान

राहुल सहगल, चंबा। हिमाचल प्रदेश के एपीएमसी अध्यक्ष ललित ठाकुर ने 'अनंत ज्ञान' से बातचीत करते हुए प्रदेश की राजनीति, आपदा प्रबंधन व बजट को लेकर भाजपा व केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला।

उन्होंने कहा कि जब हिमाचल प्रदेश भीषण आपदा से जूझ रहा था, तब प्रदेश के 7 सांसदों में से कोई भी मजबूती से राज्य के साथ खड़ा नजर नहीं आया। उन्होंने आरोप लगाया कि आपदा के दौरान 1500 करोड़ की सहायता का जो वादा किया गया था, उसे भी भुला दिया गया। ललित ने कहा कि ऐसे कठिन समय में यदि कोई हिमाचल के साथ मजबूती से खड़ा रहा है, तो वह सुक्खू का नेतृत्व है। मुख्यमंत्री का विजन स्पष्ट है—प्रदेश के हर व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाना व जनहितैषी नीतियां बनाना। उन्होंने भाजपा को चेतावनी देते हुए कहा कि 2027 में कांग्रेस फिर सत्ता में वापसी कर इतिहास रच सकती है। साथ ही उन्होंने 2017 से 2022 तक के 'डबल इंजन' भाजपा शासन को पूरी तरह विफल करार दिया। ललित ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के 54,928 करोड़ के बजट को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि यह बजट आपदा के बाद पुनर्निर्माण, किसान हित, महिला सशक्तिकरण और युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

अनंत ज्ञान स्पैशल

उन्होंने कहा कि भाजपा के पास इसे निराधार बताने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, जबकि यह बजट वास्तव में हर वर्ग को मजबूती देने वाला है। बजट में कनेक्टिविटी को प्राथमिकता देते हुए चंबा से शिमला तक हेली टैक्सी सेवा शुरू करने की घोषणा को उन्होंने गेमचेंजर बताया और कहा कि इसके लिए सरकार द्वारा उचित और किफायती किराया तय करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, ताकि आम जनता भी इसका लाभ उठा सके, क्योंकि चंबा जैसे दूरदराज क्षेत्रों के लिए कनेक्टिविटी एक बड़ा मुद्दा है और यह पहल यात्रा को न केवल दूरी एक घंटे की ही रह जाएगी, बल्कि सफर को सुखद और सुलभ बनाएगी।

शुभ विवाह योजना : महिलाओं को आर्थिक संबल

महिलाओं को लेकर एपीएमसी अध्यक्ष ने बताया कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में सरकार ने मजबूत व संवेदनशील पहल करते हुए, 'शुभ विवाह योजना' के तहत 21 वर्ष से अधिक आयु की बीपीएल वर्ग की महिलाओं को विवाह के अवसर पर 51,000 की सम्मानजनक आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया है, जिससे उनकी सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके साथ ही मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से 3 लाख तक का सब्सिडी युक्त ऋण प्रदान किया जाएगा, ताकि वे स्वरोजगार अपनाकर न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकें, बल्कि समाज में आत्मविश्वास और सम्मान के साथ अपनी अलग पहचान भी स्थापित कर सकें। राज्य में खेल सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए खेल विद्यालयों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस पहल के अंतर्गत गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज चंबा तथा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज चुवाड़ी (जीडीसी - गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज) को भी शामिल किया गया है, जिससे युवाओं को आधुनिक खेल प्रशिक्षण, बेहतर आधारभूत सुविधाएं और आगे बढ़ने के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें।

किसानों के लिए एमएसपी में बड़ी बढ़ोतरी की गई

ललित ठाकुर ने कृषि से जुड़ी महत्वपूर्ण घोषणाओं के बारे में कहा कि किसानों के लिए एमएसपी में बड़ी बढ़ोतरी की गई है गेहूं 60 से 80 प्रति किलोग्राम, मक्का 40 से 50 प्रति किलोग्राम, जौ 60 से 80 प्रति किलोग्राम, हल्दी 90 से 150 प्रति किलोग्राम व पहली बार अदरक 30 प्रति किलोग्राम निर्धारित किया गया है। 'बीज गांव' योजना के तहत 50 से 100 किसानों को जोड़कर पारंपरिक बीज उत्पादन को बढ़ावा दिया जाएगा, जिसमें प्रति बीघा 5000 सब्सिडी व प्रत्येक गांव को 2 लाख इंफ्रास्ट्रक्चर अनुदान दिया जाएगा। 400 डेयरी फार्मिंग इकाइयां स्थापित होंगी, 600 लाभार्थियों को सहायता मिलेगी व फार्म मशीनरी के लिए 10 करोड़ की सहायता 50:50 लागत साझेदारी पर दी जाएगी। मुख्यमंत्री खेत बाड़बंदी योजना के लिए 10 करोड़ का प्रावधान रखा गया है तथा 'हिमाचल प्रदेश राज्य किसान आयोग' का गठन किया जाएगा।

'पहल' योजना : जनजातीय समुदायों के लिए बड़ा बजट प्रावधान

गद्दी-गुज्जर समुदाय पर बात करते हुए ललित ठाकुर ने कहा कि वह खुद गद्दी समुदाय से आते हैं और इस बजट में विशेष रूप से गद्दी, गुज्जर, किन्नौरा जैसे पारंपरिक जनजातीय समुदायों के लिए 300 करोड़ की 'पहल' योजना शुरू करने की घोषणा की गई है, जिससे 40,000 से अधिक परिवारों को सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह योजना इन घुमंतू व अर्ध-घुमंतू समुदायों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाने का माध्यम बनेगी। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत पशुपालन, आजीविका, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत किया जाएगा, ताकि गद्दी और गुज्जर समाज को मुख्यधारा से जोड़कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके। ठाकुर ने इसे 'समाज के सम्मान और विकास की दिशा में बड़ा कदम' बताया।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र हुए सम्मानित

ओपी शर्मा, अनंत ज्ञान, भरमौर। गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज भरमौर में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह हर्षोल्लास व गरिमामय माहौल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों व स्थानीय गणमान्य लोगों की सक्रिय भागीदारी रही। इस अवसर पर शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सह-पाठयक्रम गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। मुख्यातिथि के रूप में गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज चंबा के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मनीष कुमार ने शिरकत की। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा, अनुशासन और निरंतर मेहनत का महत्व बताते हुए जीवन में सफलता के लिए सकारात्मक सोच अपनाने का संदेश दिया। कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. हेमंत पाल ने विद्यार्थियों की उपलब्धियों की सराहना करते हुए इसे उनके उज्ज्वल भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। समारोह के दौरान रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने भी कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

एंट्री टैक्स बढ़ोतरी पर उठे सवाल मनीष ने सरकार से मांगा पुनर्विचार

अनंत ज्ञान

डलहौजी। हिमाचल प्रदेश में राज्य प्रवेश कर (एंट्री टैक्स) को 170 तक बढ़ाने के निर्णय को लेकर अब विरोध के स्वर तेज होते जा रहे हैं। सामाजिक कर्मठ कार्यकर्ता व डलहौजी विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 2022 में पूर्व प्रत्याशी रहे मनीष सरीन ने इस फैसले पर गहरी चिंता जताते हुए प्रदेश सरकार से तत्काल पुनर्विचार की मांग की है।

सरीन ने कहा कि इस निर्णय के बाद न केवल प्रदेश के भीतर, बल्कि पड़ोसी राज्य पंजाब में भी तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। उन्होंने बताया कि यह मुद्दा पंजाब विधानसभा में भी उठ चुका है, जिससे दोनों राज्यों के बीच कर विवाद की आशंका बढ़ गई है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि पंजाब सरकार भी जवाबी कार्रवाई करते हुए हिमाचल पंजीकृत वाहनों पर समान कर लागू करती है, तो इसका सीधा असर आम लोगों के जीवन पर पड़ेगा। सरीन के अनुसार, हिमाचल के हजारों लोग रोजमर्रा की जरूरतों रोजगार, व्यापार, स्वास्थ्य सेवाएं और निजी कार्यों के लिए पंजाब पर निर्भर हैं, ऐसे में यह कर विवाद लोगों की मुश्किलों को कई गुना बढ़ा सकता है। सरीन ने कहा कि इस फैसले का सबसे बड़ा प्रभाव प्रदेश के पर्यटन व बागवानी क्षेत्र पर पड़ सकता है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। बाहरी राज्यों से आने वाले पर्यटकों की संख्या में गिरावट की आशंका है, वहीं सेब सहित अन्य फलों की ढुलाई और विपणन भी प्रभावित हो सकता है। उन्होंने बताया कि निर्माण कार्यों में इस्तेमाल होने वाली रेत, बजरी और ईंट जैसी सामग्री का बड़ा हिस्सा पंजाब से या उसके रास्ते हिमाचल पहुंचता है। यदि कर विवाद बढ़ता है, तो इन वस्तुओं की कीमतों में भारी उछाल आ सकता है, जिससे विकास कार्यों की लागत बढ़ेगी और आम आदमी पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ेगा। सरीन ने प्रदेश के मुख्यमंत्री से अपील करते हुए कहा कि वे इस निर्णय पर पुनर्विचार करें व जनता तथा राज्य की अर्थव्यवस्था के व्यापक हित को प्राथमिकता दें।

न्यूज ब्रीफ

मर्ज स्कूलों में सीबीएससी पाठ्यक्रम लागू

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर। जोगिंद्रनगर क्षेत्र में शिक्षा के क्षेत्र में अहम बदलाव करते हुए राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला (बाल) और पीएम श्री आदर्श राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला (कन्या) के विलय के बाद अब विद्यालय में सीबीएससी पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया है। प्रधानाचार्य मनोज चौहान ने बताया कि नए सत्र के लिए नर्सरी से कक्षा 11वीं तक प्रवेश 1 अप्रैल से शुरू होंगे। उन्होंने कहा कि इससे विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा का लाभ मिलेगा। हालांकि, वर्तमान सत्र में 10वीं और 12वीं की पढ़ाई हिमाचल बोर्ड के अनुसार ही होगी, जबकि सत्र 2027-28 से इन कक्षाओं में भी सीबीएससी पूरी तरह लागू किया जाएगा।

ईंधन संकट के बीच हिमालय पेट्रोल पंप ने दी राहत

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर। निचला गरोडू स्थित हिमालय ज्योति भारत पेट्रोलियम फिलिंग स्टेशन ने क्षेत्र में पेट्रोल और डीजल की कमी के बीच सराहनीय सेवाएं प्रदान कर लोगों को राहत दी है, जहां अधिकांश पेट्रोल पंप ईंधन की कमी के कारण बंद हो गए हैं, वहीं इस पंप ने बेहतर प्रबंधन के जरिए नियमित आपूर्ति बनाए रखी है। स्थानीय लोगों के अनुसार यहां ईंधन वितरण सुव्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है और किसी प्रकार की अफरा-तफरी नहीं होने दी जा रही। हर उपभोक्ता को जरूरत के अनुसार पेट्रोल और डीजल उपलब्ध कराया जा रहा है। मैनेजिंग डायरेक्टर अनुराग हिमालय ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, विशेषकर ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच तनाव के कारण सप्लाई प्रभावित हुई है, लेकिन बेहतर प्रबंधन से आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

अवैध शराब बरामद व मारपीट का मामला दर्ज

अनंत ज्ञान, सरकाघाट। सरकाघाट क्षेत्र के अंतर्गत पुलिस थाना हटली में दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने एक ओर अवैध शराब बरामद की वहीं, दूसरे मामले में मारपीट व रास्ता रोकने पर केस दर्ज किया है। पहले मामले में पुलिस को गुप्त सूचना मिली, जिसके आधार पर संसार चंद निवासी भटेड़, तहसील भोरंज जिला हमीरपुर की दुकान पर छापेमारी की गई। यहां से 1850 एमएल देसी शराब (ऊना नंबर-1) और 750 एमएल संतरा मार्का शराब सहित कुल 2600 एमएल शराब बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। दूसरे मामले में रितिक वर्मा निवासी धुरखड्डी, बल्द्वाड़ा ने शिकायत दर्ज करवाई कि सुभाष चंद ने उसका रास्ता रोककर गाली-गलौज की और हाथ-मुक्कों से मारपीट की। पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जनसमस्याओं को लेकर वेलफेयर एसोसिएशन नाराज

अनंत ज्ञान, चंबा। हेरिटेज नगर चंबा में बढ़ती जनसमस्याओं को लेकर चंबा वेलफेयर एसोसिएशन ने प्रशासन के प्रति गहरी नाराजगी जताई है। एसोसिएशन व अन्य संगठनों के प्रतिनिधिमंडल ने कई बार विभागों से संपर्क किया, लेकिन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। प्रतिनिधियों ने जल शक्ति विभाग और नगर परिषद को ज्ञापन सौंपने का प्रयास किया, पर अधिकारी अनुपस्थित मिले। एक माह बीतने के बावजूद कोई बैठक आयोजित नहीं की गई। एसोसिएशन ने बताया कि महीनों से पानी के बिल नियमित नहीं मिल रहे और हाउस टैक्स में बिना सर्वे बढ़ोतरी से लोगों में असंतोष है। उन्होंने प्रशासन से शीघ्र संयुक्त बैठक बुलाकर समस्याओं का समाधान करने की मांग की है।

व्यावसायिक एलपीजी सिलेंडरों की आपूर्ति सुचारु

अनंत ज्ञान, चंबा। उपायुक्त मुकेश रेपसवाल ने कहा कि जिले में 19 किलोग्राम वाले व्यावसायिक एलपीजी सिलेंडरों की आपूर्ति नियमित रूप से की जा रही है, इसलिए उपभोक्ताओं को घबराहट में खरीदारी करने की आवश्यकता नहीं है। वे सिलेंडरों के वितरण को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। डीसी ने बताया कि वर्तमान स्थिति को देखते हुए प्रदेश सरकार ने प्राथमिकता आधारित आवंटन नीति लागू की है। इसके तहत 37 प्रतिशत सिलेंडर शिक्षण संस्थानों व अस्पतालों को, 36 प्रतिशत होटल, रेस्टोरेंट व ढाबों को, 14 प्रतिशत सामाजिक कार्यक्रमों को तथा 13 प्रतिशत सरकारी व औद्योगिक इकाइयों को दिए जा रहे हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि उपभोक्ता अपनी मांग पहले ही वितरकों को दें और वितरण 'पहले आया, पहले पाया' के आधार पर किया जाए। साथ ही काला बाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए गए। बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

बेलजेडी स्थान पर पहाड़ी दरकने से बाल-बाल बचा वाहन चालक

अनंत ज्ञान

देशराज कश्यप, धरवाला। दुनाली बतोट सड़क मार्ग पर पिछले दो दिनों से पहाड़ी दरकने से बेलजेडी घार नामक स्थान पर लगातार पत्थर गिर रहे हैं, जिससे वाहन चालकों व राहगीरों को बेहद खतरा उत्पन्न हो गया है। बताया जा रहा है कि सोमवार दोपहर को जब एक वाहन चालक ने वहां से गुजरना चाहा, तो पहाड़ी दरकने से बड़े-बड़े पत्थर सड़क मार्ग पर आ गिरे।

राहत की बात यह रही कि स्थानीय लोगों ने वाहन चालक को बचाने के लिए जोर-जोर से आवाजें दी, जिससे वाहन चालक ने अफरा तफरी में वाहन को रोड के किनारे खड़ा कर सब लोगों ने गाड़ी से बाहर उतरकर पत्थर की एक बड़ी सी चट्टान के नीचे दुबककर जान बचाई। हालांकि, वाहन चालक को पहाड़ी से पत्थर गिरने की जानकारी नहीं थी, लेकिन बेलजेडी घार के विपरीत दिशा में सामने खड़े उस शख्स ने उन तीनों की जान बचा ली। वहीं स्थानीय लोगों शम्मी शर्मा, सरवन कुमार, अजय, जीवन, मनोज, गुड्डू राम, बिट्टू राम, राजकुमार, पवन कुमार, अनिल कुमार, मनी राम सहित बहुत से स्थानीय लोगों का कहना है कि नवरात्र के दौरान माँ गिरड माता मंदिर को जाने वाले श्रद्धालुओं की दुनाली से बतोट सड़क मार्ग पर वाहनों की आवाजाही और भी अधिक रहती है। वहीं, बेलजेडी नामक स्थान पर पहाड़ी दरकने से रुक-रुक कर पत्थर गिर रहे हैं, जिससे न केवल वाहन चालकों, बल्कि राहगीरों तथा मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जल्द ही समस्या का समाधान किया जाए, ताकि वाहन चालकों व राहगीरों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम आयोजित, डीसी मुकेश रेपसवाल बतौर मुख्यातिथि हुए शामिल

उत्कृष्ट कार्य करने वाली एसएमसी को किया सम्मानित

अनंत ज्ञान

चंबा। उपायुक्त मुकेश रेपसवाल ने कहा कि विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) विद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग है और स्कूल के समुचित रखरखाव तथा प्रभावी प्रबंधन में इसकी सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। उपायुक्त आज जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) चंबा के सहयोग से जिला मुख्यालय में आयोजित सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि शिरकत कर यह संदेश दे रहे थे।

डीसी ने विद्यालय प्रबंधन समितियों से आह्वान किया कि वे बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करें और शिक्षा की गुणवत्ता तथा बच्चों के समग्र विकास पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने कहा कि एसएमसी केवल निर्माण कार्यों तक सीमित न रहकर शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करे और उन्हें सहयोग प्रदान करे। समाज के अनुभवी लोगों को विद्यालयों से जोड़कर बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है। उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाली समितियों की सराहना करते हुए उनकी कार्यप्रणाली अन्य विद्यालयों के साथ साझा करने का सुझाव दिया। कार्यक्रम के दौरान समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत जिले भर में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्राथमिक, मिडिल और हाई/सीनियर सेकेंडरी विद्यालय प्रबंधन समितियों को सम्मानित किया गया। प्राथमिक विद्यालयों में प्रथम: राजकीय प्राथमिक पाठशाला कुठेड़-1, शिक्षा खंड चुवाड़ी। द्वितीय: राजकीय केंद्रीय प्राथमिक पाठशाला बलेरा, शिक्षा खंड बनीखेत। तृतीय: राजकीय केंद्रीय प्राथमिक पाठशाला गरनोटा, शिक्षा खंड सिहुंता। मिडिल विद्यालयों में: प्रथम: राजकीय माध्यमिक विद्यालय ककियां, शिक्षा खंड हरदासपुरा। द्वितीय: राजकीय माध्यमिक विद्यालय गधेटरा, शिक्षा खंड सलूनी। तृतीय: राजकीय माध्यमिक पाठशाला प्राहन्वी, शिक्षा खंड कियाणी। हाई और सीनियर सेकेंडरी विद्यालयों में: प्रथम: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बलेरा, शिक्षा खंड बनीखेत। द्वितीय: राजकीय उच्च विद्यालय सरोग, शिक्षा खंड सिहुंता। तृतीय: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय होबार, शिक्षा खंड चुवाडी। इसके अतिरिक्त, प्राथमिक और मिडिल स्तर के विद्यार्थियों के लिए जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विजेताओं को नकद पुरस्कार (5000, 3000, 2000 रुपए) के साथ शैक्षिक सामग्री, मोमेंटो, प्रमाण पत्र और डिक्शनरी प्रदान की गई। इस अवसर पर उपनिदेशक विकास महाजन, प्रिंसिपल एवं को-ऑर्डिनेटर डॉ. कविता बिजलवान सहित डाइट चंबा के स्टाफ, विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम में बच्चों ने नशे के दुष्प्रभाव और स्वच्छता पर प्रभावशाली संदेश भी प्रस्तुत किए।

प्रस्तावों की समीक्षा और मंजूरी

अनंत ज्ञान, चंबा। उपायुक्त की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) चंबा के वीडियो कॉन्फ्रेंस कक्ष में वन अधिकार अधिनियम (एफआरए), 2006 के अंतर्गत जिला स्तरीय समिति (डीएलसी) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासियों के अधिकारों से संबंधित विभिन्न प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा की गई। उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि उपमंडल समिति से प्राप्त प्रस्तावों की सभी विभागीय औपचारिकताएं निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएं। उन्होंने उप-मंडल स्तरीय समिति (एसडीएलसी) की नियमित बैठकों के आयोजन पर जोर देते हुए कहा कि फील्ड निरीक्षण, दस्तावेजों का सत्यापन और अन्य आवश्यक जांच समन्वय के साथ समय पर सुनिश्चित की जाए। बैठक के दौरान प्रस्तुत प्रस्तावों की बिंदुवार समीक्षा की गई। कुछ मामलों को मंजूरी प्रदान की गई, जबकि अन्य पर आवश्यक सुझाव और टिप्पणियां दर्ज की गईं। इस अवसर पर जिला राजस्व अधिकारी डॉ. विक्रमजीत सिंह, वन विभाग के अधिकारी केएस जमवाल सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

आपात स्थितियों में 'हैम रेडियो' आपदा प्रबंधन की महत्वपूर्ण कड़ी : अपूर्व देवगन

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, मंडी। डीसी अपूर्व देवगन ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं सहित अन्य आपात स्थितियों में हैम रेडियो आपदा प्रबंधन की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सकते हैं।

राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण व जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, मंडी के संयुक्त तत्वावधान में जल शक्ति विभाग के राज्य प्रशिक्षण केंद्र, मंडी में आयोजित छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रशिक्षुओं से चर्चा में उन्होंने यह बात कही। अपूर्व देवगन ने कहा कि आपदा या प्रतिकूल मौसम की स्थिति में अकसर पारंपरिक संचार नेटवर्क बाधित हो जाते हैं और इन्हें पुन: बहाल करने में कई बार समय लगता है, ऐसे समय में हैम रेडियो एक प्रभावी वैकल्पिक संचार माध्यम के रूप में कार्य कर सकता है। संचार के आपात साधनों के विकास पर राज्य सरकार की नीति के तहत संचार तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न विभागों, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं युवाओं को हैम रेडियो का यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मंडी जिला आपदा की दृष्टि से संवेदनशील है। विशेषकर मानसून के दौरान यहां प्राकृतिक आपदाओं की संभावनाएं बनी रहती हैं, ऐसे में प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के उपरांत प्रतिभागियों को परीक्षा पास करने पर लाइसेंस प्रदान किया जाता है, जिससे वे आपातकालीन परिस्थितियों में प्रभावी संचार स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा सकेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य सरकार द्वारा लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटरों को हैम रेडियो उपकरण क्रय करने के लिए 60 हजार रुपए तक की सहायता राशि भी प्रदान की जाती है। लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर्स का क्लब भी गठित किया जाता है ताकि वे विभिन्न गतिविधियों से जुड़े रहें और उनका निरंतर अभ्यास भी जारी रखा जा सके। स्रोत व्यक्ति केंद्रीय संचार मंत्रालय के सेवानिवृत्त डीडीजी वीके आर्य तथा दिल्ली हैम रेडियो संस्थान की सचिव कुसुम ने हैम रेडियो के व्यावहारिक उपयोग पर जानकारी प्रदान की। वीके आर्य ने कहा कि हैम रेडियो शौकिया तौर पर प्रचलन में है, मगर आपदा के समय वैकल्पिक संचार माध्यम के रूप में भी इसका प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।

शिक्षक की गैरहाजिरी पर भड़के ग्रामीण

अनंत ज्ञान, चंबा। चंबा जिले के मैहला विकासखंड के ग्राम तागी स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में शिक्षक की नियुक्ति के बावजूद कार्यभार न संभालने से उत्पन्न शिक्षा संकट को लेकर मंगलवार को ग्रामीणों का एक प्रतिनिधिमंडल उपायुक्त चंबा मुकेश रेपसवाल से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने उपायुक्त को अवगत कराया कि विभागीय आदेशों के तहत एक शिक्षक की तैनाती तागी विद्यालय में की गई थी, लेकिन पिछले कई दिनों से वे नियमित रूप से कार्यभार ग्रहण नहीं कर रहे हैं, जिससे स्कूल में पढ़ाई लगभग ठप हो चुकी है। ग्रामीणों ने बताया कि शिक्षक डेपुटेशन पर होने के कारण कभी-कभार ही कक्षाएं लगती हैं, जिससे बच्चों का भविष्य अंधकार में जा रहा है। स्थानीय निवासी रविंद्र कुमार ने प्रशासन से तुरंत हस्तक्षेप कर स्थायी शिक्षक की नियुक्ति सुनिश्चित करने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल ने डीस से मामले की जांच कर जिम्मेदारों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और स्कूल में नियमित शिक्षण व्यवस्था बहाल करने की गुहार लगाई है, ताकि बच्चों को उनका मौलिक अधिकार शिक्षा मिल सके।

डलहौजी पुलिस ने सड़क धंसने से उत्पन्न ट्रैफिक समस्या पर पाया काबू

अनंत ज्ञान

जीत सिंह, डलहौजी। पर्यटन नगरी डलहौजी में सुभाष चौक के नजदीक, सेक्रेड हार्ट कॉन्वेंट स्कूल के गेट के पास हाल ही में हुई बारिश के कारण सड़क धस गई थी।

इसके चलते सड़क का एक हिस्सा बंद हो गया था, जिससे दोनों तरफ से आने वाली गाड़ियों के लिए जाम की समस्या पैदा हो गई थी। विशेष रूप से सुभाष चौक से कोर्ट रोड होते हुए पत्रेणी सड़क तक यातायात वन-वे होता है, लेकिन धसने से सड़क संकरी होने के कारण हॉस्पिटल, एसडीएम कार्यालय जाने वाले लोग और पर्यटक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। इस स्थिति का संज्ञान लेते हुए सोमवार सुबह डलहौजी के डीएसपी मयंक शर्मा, ट्रैफिक इंचार्ज एएसआई बिशंबर सिंह और पुलिस टीम ने मोर्चा संभाला। उन्होंने कोर्ट रोड में खड़ी वाहनों को हटाकर दोनों तरफ से आने-जाने वाली गाड़ियों के लिए मार्ग सुनिश्चित किया। डीएसपी मयंक शर्मा ने स्थानीय लोगों से अपील की कि जब तक कॉन्वेंट स्कूल के पास सड़क मरम्मत का कार्य पूरा नहीं होता, पुलिस का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से हॉस्पिटल जाने वाले मरीजों को कोई असुविधा न हो और डलहौजी पुलिस हमेशा स्थानीय लोगों और पर्यटकों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए तत्पर है।

अनंत Classifieds

नाम परिवर्तन

मैं, रमेश मल्होत्रा पुत्र श्री योग राज निवासी गांव एवं डाकघर नंगल सलांगड़ी तहसील एवं जिला ऊना (हि.प्र.) घोषणा करता हूं कि मैंने अपना नाम रमेश कुमार मल्होत्रा से बदलकर रमेश मल्होत्रा कर लिया है। सभी संबंधित नोट करें।

नाम परिवर्तन

मैं, खोडु राम पुत्र श्री तोता निवासी गांव थर्की, डाकघर सुराह, तहसील बल्ह, जिला मंडी (हि.प्र.) घोषणा करता हूं कि आधार कार्ड में मेरा नाम खेम चंद गलत दर्ज है, जबकि मेरा सही नाम खोडु राम है। अत: आधार कार्ड में भी खेम चंद के स्थान पर मेरा सही नाम खोडु राम दर्ज किया जाए। सभी संबंधित नोट करें।

नाम परिवर्तन

मैं, सुहैल अखतर पुत्र शमीम अख्तर, निवासी मकान संख्या 163/8, अंबेडकर नगर, डाकघर भोजपुर, तहसील सुंदरनगर, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश, यह घोषित करता हूँ कि मैंने अपना नाम सुहैल से बदलकर सुहैल अखतर कर लिया है। अत: संबंधित सभी व्यक्तियों/विभागों से अनुरोध है कि भविष्य में मुझे सुहैल अखतर के नाम से ही जाना व दर्ज किया जाए।

बेदखली सूचना

मैं विधि चन्द आयु 62 वर्ष पुत्र बरडू राम निवासी वार्ड नम्बर 5 गांव खावा डाकघर पालरा तहसील बड़ोह जिला कांगड़ा हि. प्र.। घोषणा करता हूं कि मेरा लड़का अमन कुमार व उसकी पत्नी सपना देवी मेरे कहने-सुनने से बाहर हैं। अत: मैं अपने लड़के अमन कुमार व उसकी पत्नी सपना देवी को अपनी तमाम चल व अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में उनसे लेन-देन करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। सभी संबंधित नोट करें।

आईटीआई मंडी में साइबर सुरक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी दी

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, मंडी। जिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) मंडी में एकदिवसीय उपभोक्ता अधिकार व साइबर क्राइम जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर हिमाचल प्रदेश उपभोक्ता मंच मंडी और आईटीआई मंडी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के अध्यक्ष पुरेंदर वैद्य मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में उपभोक्ताओं का अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के प्रावधानों की जानकारी देते हुए युवाओं को जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने कानून और संविधान की जानकारी को प्रत्येक नागरिक के लिए जरूरी बताते हुए मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहने की बात कही। विशेष अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (साइबर क्राइम) मनमोहन सिंह ने साइबर अपराधों से बचाव के उपाय बताए। उन्होंने ऑनलाइन ठगी, फर्जी लिंक और ओटीपी साझा करने जैसे खतरों से सतर्क रहने की सलाह दी। इस अवसर पर विभिन्न विशेषज्ञों और अधिवक्ताओं ने प्रशिक्षुओं को उपभोक्ता अधिकार, शिकायत निवारण प्रणाली और साइबर सुरक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा किसी भी धोखाधड़ी की स्थिति में तुरंत शिकायत दर्ज कराने का सुझाव दिया।

डलहौजी के युवाओं ने डीएसपी से की मुलाकात

अनंत ज्ञान, डलहौजी। डलहौजी में युवाओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने डीएसपी मयंक शर्मा से मुलाकात कर शहर से जुड़े विभिन्न जनहित मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। इस दौरान साइन बोर्ड की उचित व्यवस्था, ट्रैफिक नियमों का सख्ती से पालन, नशे की रोकथाम तथा पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। युवा प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि डलहौजी एक अंतरराष्ट्रीय पहचान वाला प्रमुख पर्यटन स्थल है, ऐसे में यहां आने वाले पर्यटकों की सुरक्षा, बेहतर यातायात व्यवस्था और शहर की स्वच्छ व सकारात्मक छवि बनाए रखना बेहद जरूरी है। डीएसपी मयंक शर्मा ने युवाओं द्वारा उठाए गए सुझावों को गंभीरता से सुना और पुलिस प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि नशा उन्मूलन, ट्रैफिक नियंत्रण और पर्यटक सुरक्षा को लेकर पुलिस लगातार सक्रिय है और इन क्षेत्रों में समाज व युवाओं की भागीदारी से और बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं।

हिमाचल सरकार का ईंधन सेस बढ़ाने का फैसला आम जनता पर बोझ : शिशु

अनंत ज्ञान

चंबा। हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में ईंधन पर सेस बढ़ाने के फैसले ने आम जनता के बीच चिंता और असंतोष को जन्म दिया है। राजनीतिक विश्लेषक शिशु गुप्ता ने इस मुद्दे पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह कदम पहले से ही आर्थिक दबाव झेल रही जनता पर अतिरिक्त बोझ डालने जैसा है।

उन्होंने कहा कि जहां एक ओर वैश्विक आर्थिक अस्थिरता के बीच महंगाई को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। वहीं, प्रदेश सरकार का यह निर्णय आम आदमी की जेब पर सीधा असर डाल रहा है। सरकार भले ही इसे राजस्व बढ़ाने की आवश्यकता बता रही हो, लेकिन यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या वित्तीय कुप्रबंधन का भार सीधे जनता पर डालना ही एकमात्र विकल्प रह गया है। विश्लेषकों का मानना है कि ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी का असर केवल परिवहन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव हर क्षेत्र पर पड़ता है। परिवहन महंगा होने से वस्तुओं के दाम बढ़ते हैं और अंतत: आम नागरिक की क्रय शक्ति कमजोर होती है।

इस फैसले को राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। एक ओर सरकार राहत देने की बात करती है, वहीं दूसरी ओर करों के माध्यम से वसूली बढ़ाती है। इस तरह की दोहरी नीति जनता के विश्वास को कमजोर कर सकती है। विशेषज्ञों का सुझाव है कि सरकार को तात्कालिक राजस्व बढ़ाने के बजाय दीर्घकालिक आर्थिक सुधारों पर ध्यान देना चाहिए। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, प्रशासनिक खर्चों में कटौती और निवेश को प्रोत्साहन जैसे उपाय राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अधिक कारगर साबित हो सकते हैं। अंतत: लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि होती है।

आपदा प्रभावित परिवारों को दी आर्थिक सहायता

अनंत ज्ञान, चंबा। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के कर्मचारी संगठन नॉर्दर्न जोन इंश्योरेंस एम्प्लॉइज एसोसिएशन ने सामाजिक सरोकार निभाते हुए चंबा जिले के सिल्लाघ्राट क्षेत्र में पिछले वर्ष भारी बारिश से प्रभावित तीन परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की। भारी वर्षा के कारण इन परिवारों के घर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे, जिससे उन्हें आर्थिक व मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस कठिन समय में शिमला मंडल के कर्मचारियों ने सराहनीय पहल करते हुए राहत सहायता उपलब्ध करवाई। सहायता के रूप में लालुही गांव के निवासी निम्मो देवी, जरम राम और मान सिंह को 20-20 हजार रुपए प्रदान किए गए। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष नरेंद्र धीमान, उपप्रधान बलवीर, मंडल सचिव प्रदीप मन्हास, चंबा शाखा अध्यक्ष अनिल कलोत्रा, शाखा सचिव वेद सोहल सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। यह पहल संगठन की सामाजिक जिम्मेदारी के साथ-साथ जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशीलता और सहयोग की एक प्रेरणादायक मिसाल है।

◆ 20-20 हजार रुपए प्रदान किए

जो शिक्षा मनुष्य को संकीर्ण और स्वार्थी बना देती है, उसका मूल्य किसी युग में चाहे जो रहा हो, अब नहीं है।

-शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय

संपादकीय

इच्छामृत्यु : विकल्प और मानवता

महाभारत में भीष्म पितामह को इच्छामृत्यु का वरदान प्राप्त था, जो उन्हें उनके पिता शांतनु से मिला था। उस समय इसे दिव्य वरदान माना गया था, जिससे जीवन और मृत्यु पर उनका नियंत्रण था। हालांकि, आधुनिक युग में इच्छामृत्यु पाना इतना आसान नहीं है। यह केवल कानूनी या चिकित्सीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि इंसान के अत्यंत व्यक्तिगत और संवेदनशील विकल्प का मामला बन चुका है।

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के जयसिंहपुर के पलेटा गांव के निवासी हरीश राणा की कहानी ने इस विषय को पूरे देश के सामने ला दिया। पिछले 13 वर्षों से असहनीय दर्द और बीमारी में जूझते हुए हरीश को कोमा में रखा गया था। माता-पिता ने हर संभव प्रयास किया-महंगे इलाज करवाए, लेकिन कोई सुधार नहीं हुआ। थक-हार कर और लंबे संघर्ष के बाद उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से अपने बेटे के लिए इच्छामृत्यु की अनुमति मांगी। यह भारत का पहला मामला है, जिसमें किसी व्यक्ति को कानूनी रूप से इच्छामृत्यु प्रदान की गई।

हरीश राणा की कहानी केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। जीवन अनमोल है और इसे बचाने के प्रयास हमेशा किए जाने चाहिए, लेकिन जब पीड़ा असहनीय हो जाती है और जीवन गुणवत्ता रहित बन जाता है, तो क्या मृत्यु का विकल्प मानवता और करुणा का हिस्सा बन सकता है? हरीश के मामले में इसका उत्तर सकारात्मक रूप में सामने आया। इच्छामृत्यु का निर्णय केवल रोगी का नहीं, बल्कि परिवार के लिए भी कठिन होता है। माता-पिता ने अपने कलेजे पर हाथ रखकर इस कठोर निर्णय का सामना किया। उनके लिए यह दर्दनाक था, लेकिन यह भी स्पष्ट था कि उनके बेटे को नरक भरी जिंदगी से मुक्ति मिल रही है। इस अनुभव ने देशभर में बहस को जन्म दिया कि ऐसे मामलों में इच्छामृत्यु को मान्यता दी जानी चाहिए, और किन परिस्थितियों में यह कानूनी और नैतिक रूप से स्वीकार्य हो सकती है। भारत में कई लोग हरीश की तरह असहनीय पीड़ा का सामना कर रहे हैं। जन्म और मृत्यु का नियम सार्वभौमिक है, लेकिन जब व्यक्ति के जीवन में दर्द और पीड़ा असहनीय हो, तो इच्छामृत्यु को विकल्प के रूप में देखना न्यायसंगत प्रतीत हो सकता है। यह केवल व्यक्तिगत अधिकार नहीं, बल्कि करुणा और मानवाधिकार का मामला है।

जीवन और मृत्यु की यह प्रक्रिया धार्मिक, सामाजिक और कानूनी दृष्टि से जटिल है। अधिकांश धर्म जीवन को पवित्र मानते हैं और प्राकृतिक मृत्यु के अलावा किसी कृत्रिम तरीके से जीवन समाप्त करने के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन आधुनिक समाज में, जब विज्ञान और चिकित्सा ने जीवन को कृत्रिम रूप से लंबे समय तक बनाए रखने की क्षमता दे दी है, तब यह सवाल उठता है कि क्या यह जीवन वास्तव में जीने योग्य है या केवल अस्तित्व में बने रहने की स्थिति है। हरीश का मामला इस प्रश्न का सटीक उदाहरण है। इच्छामृत्यु के पक्ष में सबसे बड़ा तर्क है पीड़ित की आत्मा की शांति और करुणा। असहनीय दर्द में जीवन केवल एक यातना बन जाता है। ऐसे मामलों में मृत्यु का विकल्प मरीज और परिवार दोनों के लिए राहत और मुक्ति का माध्यम बन सकता है। हालांकि, इसके लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा, चिकित्सा परामर्श और नैतिक दिशा-निर्देश होना आवश्यक है, ताकि प्रक्रिया किसी दुरुपयोग से सुरक्षित रहे।

बहरहाल, हरीश राणा की मृत्यु ने हिमाचल प्रदेश और पूरे देश को भावनात्मक रूप से झकझोर दिया है। उनके निधन के साथ यह भी स्पष्ट हुआ कि मृत्यु कभी-कभी जीवन की अंतिम करुणा बन सकती है। उनके मामले ने न केवल इच्छामृत्यु पर कानूनी और नैतिक बहस को गति दी, बल्कि यह भी दिखाया कि जब इंसान के जीवन में पीड़ा असहनीय हो जाती है, तो मृत्यु का चयन मानवता और करुणा का विकल्प बन सकता है। भारत में हरीश राणा के मामले के बाद इच्छामृत्यु को कानूनी मान्यता मिलने का रास्ता खुल गया है।

यह घटनाक्रम उन हजारों लोगों के लिए भी उम्मीद की किरण है जो असहनीय दर्द झेल रहे हैं। समाज, न्यायपालिका और चिकित्सा क्षेत्र को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि इच्छामृत्यु का विकल्प केवल गंभीर परिस्थितियों में ही अपनाया जाए, और इसे किसी भी तरह के दुरुपयोग से बचाया जाए। जीवन में हर व्यक्ति जीने की तमन्ना रखता है, लेकिन जब परिस्थितियां अनुकूल नहीं होतीं, तो मृत्यु का विकल्प सर्वोत्तम माना जा सकता है। ■

अंधविश्वास, राजनीति और महिला सुरक्षा पर गंभीर सवाल

महाराष्ट्र महिला आयोग की तत्कालीन अध्यक्ष रूपाली चाकणकर द्वारा एक बलात्कार आरोपी ज्योतिषी अशोक खरात उर्फ कैप्टन के पैर धोने का दृश्य सोशल मीडिया पर फैलते ही पूरे देश में हंगामा मच गया। यह घटना केवल एक व्यक्तिगत चूक नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण के नाम पर बने संस्थानों की आंतरिक कमजोरी का प्रतीक है।

डॉ. सत्यवान सौरभ
सामाजिक विचारक

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में नतमस्तक होना, जिस पर 58 महिलाओं के यौन शोषण, गुप्त कैमरे लगाने और नशीले पदार्थों के माध्यम से अंधविश्वास का लाभ उठाने के आरोप हैं, नारीवाद के सिद्धांतों पर गहरा आघात है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के निर्देश पर चाकणकर ने 20 मार्च 2026 को इस्तीफा दे दिया, लेकिन प्रश्न बना हुआ है-क्या यह राजनीतिक नियुक्ति प्रणाली का परिणाम है?

भारतीय संदर्भ में महिला आयोग राज्य स्तरीय संस्थाएं हैं, जो संविधान के अनुच्छेद 15 और 39 के अंतर्गत महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए स्थापित की गई हैं, लेकिन जब इन संस्थाओं का प्रमुख स्वयं एक आरोपी के प्रति श्रद्धा दिखाए, तो पीड़ित महिलाओं का विश्वास कैसे बनेगा? नासिक पुलिस ने खरात के फार्महाउस से 58 आपत्तिजनक वीडियो बरामद किए, जो यह सिद्ध करते हैं कि अंधविश्वास कितना खतरनाक हो सकता है। यह घटना हमें सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी स्तर पर गंभीर चिंतन के लिए बाध्य करती है। अशोक खरात कोई साधारण ज्योतिषी नहीं था। वह 'कैप्टन' के नाम से जाना जाता था, जो नेताओं से लेकर आम महिलाओं तक को अपनी कथित पूजा-पाठ और हस्तरेखा देखने के बहाने फंसाता था। पुलिस जांच में सामने आया कि उसने फार्महाउस पर गुप्त कैमरे लगाए थे, महिलाओं को नशीला पदार्थ पिलाया और उनका शोषण किया। पेन ड्राइव में 58 वीडियो मिले, जो उसके अपराधों के ठोस प्रमाण हैं। नासिक के पुलिस अधीक्षक ने बताया कि खरात की संपत्ति लगभग 200 करोड़ रुपए की है, जो शोषण के माध्यम से अर्जित की गई है।

भारत में अंधविश्वास का यह बाजार नया नहीं है। तंत्र-मंत्र, ज्योतिष और तथाकथित बाबाओं का प्रभाव ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों तक फैला हुआ है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, 2024 में अंधविश्वास से जुड़े अपराधों में 15 प्रतिशत वृद्धि हुई है। खरात ने कई नेताओं के हाथ देखे, जिनमें रूपाली चाकणकर भी शामिल थीं। एक वीडियो में वे यह कहते हुए दिखाई देती हैं कि 'आप जैसे महापुरुष दुर्लभ हैं।' यह श्रद्धा किस प्रकार अपराधी को संरक्षण देती है, यह गंभीर विचार का विषय है। राजनीतिक प्रभाव के

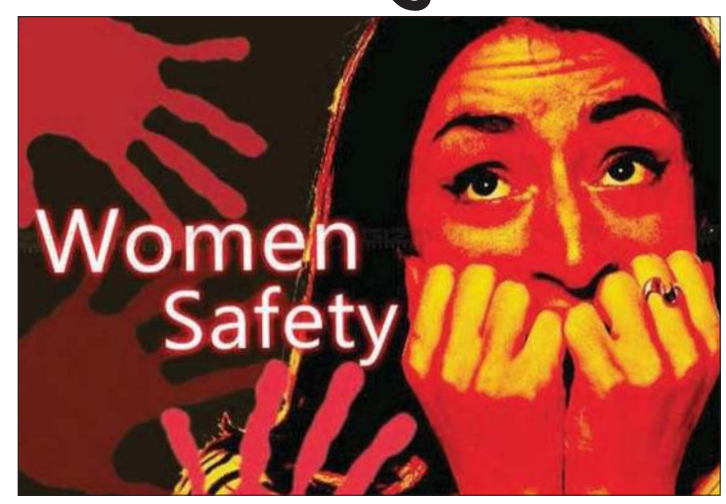

कारण आरोपी को छूट मिली, जो व्यवस्था की खामियों को उजागर करता है। रूपाली चाकणकर भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता हैं, जिन्हें महिला आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था। वीडियो सामने आने के बाद विपक्ष ने उनके इस्तीफे की मांग की। उन्होंने 'व्यक्तिगत कारणों' से इस्तीफा दे दिया, परंतु विशेष जांच दल की जांच जारी है। क्या वे आरोपी की सहयोगी थीं? विपक्ष ने उन्हें सह-आरोपी बनाने की मांग की है। मुख्यमंत्री ने तत्काल इस्तीफे का निर्देश दिया, जो सराहनीय कदम है।

महिला आयोग का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना है, लेकिन वास्तविकता अलग है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 30 प्रतिशत महिलाएं घरेलू हिंसा का सामना करती हैं, लेकिन आयोगों तक पहुंचने वाली शिकायतें पांच प्रतिशत से भी कम हैं। इसका कारण जागरूकता की कमी, भय और राजनीतिक दबाव है। अंधविश्वास महिला शोषण का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। कई तथाकथित बाबा 'काला जादू हटाने' के नाम पर महिलाओं का शोषण करते हैं। शिक्षा के बावजूद अंधविश्वास का बढ़ना चिंताजनक है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 40 प्रतिशत लोग अंधविश्वास पर विश्वास करते हैं। महिला सशक्तिकरण के दावों के बीच यह एक विडंबना है।

कानून के अनुसार, भारतीय दंड संहिता की धारा 376, पोक्सो कानून और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम ऐसे अपराधों को नियंत्रित करते हैं। फिर भी सजा की दर 30 प्रतिशत से कम है। त्वरित सुनवाई की कमी के कारण अपराधी खुले घूमते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने हुसैनारा खातून मामले में त्वरित सुनवाई को संविधान के अनुच्छेद 21 का हिस्सा माना था।

महाराष्ट्र में विशेष जांच दल का गठन एक सकारात्मक कदम है, लेकिन पारदर्शिता आवश्यक है। सुझाव के रूप में महिला आयोगों को स्वायत्त बनाया जाना चाहिए, राजनीतिक नियुक्तियों को रोका जाना चाहिए, अंधविश्वास विरोधी कानून को मजबूत किया जाना चाहिए (जैसे झारखंड मॉडल), और डिजिटल माध्यमों से जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। साथ ही, पुलिस प्रशिक्षण में लैंगिक संवेदनशीलता को शामिल किया जाना चाहिए।वैश्विक स्तर पर विश्व आर्थिक मंच की जेंडर गैप रिपोर्ट में भारत का स्थान 127वां है। ऐसी घटनाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नकारात्मक छवि प्रस्तुत करती हैं। अन्य देशों में #MeToo आंदोलन इसलिए सफल हुआ क्योंकि वहां की संस्थाएं अधिक मजबूत थीं।

भारत को भी इससे सीख लेनी चाहिए। रूपाली चाकणकर प्रकरण एक आईना है, जो दिखाता है कि जब तक संस्थाएं राजनीति की भेंट चढ़ती रहेंगी, तब तक महिला सुरक्षा केवल एक दावा बनी रहेगी। अंधविश्वास का अंत शिक्षा से और राजनीतिक दुरुपयोग का अंत सुधार से ही संभव है। समाज, सरकार और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा, अन्यथा पीड़ितों की संख्या बढ़ती ही जाएगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

खेलो इंडिया भारत के ओलंपिक सपनों की ओर एक मजबूत कदम

भारत की खेल यात्रा विविधता, संभावनाओं और प्रतिभा से परिपूर्ण रही है। उत्तर-पूर्व के दुर्गम पहाड़ों से लेकर मध्य भारत के घने जंगलों तक, देश के हर क्षेत्र में खेल प्रतिभाएं मौजूद हैं। इन्हीं प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें सही मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किया गया 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम आज एक व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले चुका है। पिछले आठ वर्षों में इस पहल ने युवा खेल, विश्वविद्यालय खेल, बीच गेम्स और विंटर गेम्स जैसे विभिन्न आयामों के माध्यम से लाखों खिलाड़ियों को अवसर प्रदान किए हैं। इसी कड़ी में 'खेलो इंडिया जनजातीय खेल' (केआईटीजी) का आयोजन एक ऐतिहासिक पहल है। इसका पहला संस्करण 25 मार्च से 3 अप्रैल तक छत्तीसगढ़ में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 31 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लगभग 3,000 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं।

डॉ. मनसुख मांडविया
केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

इन खेलों में एथलेटिक्स, फुटबॉल, हॉकी, भारोत्तोलन, तीरंदाजी, तैराकी और कुश्ती जैसे सात प्रमुख खेल शामिल हैं। यह आयोजन विशेष रूप से बस्तर, सरगुजा, रायगढ़ और मानपुर जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्रों में किया जा रहा है, जो इस पहल की समावेशी सोच को दर्शाता है।

जनजातीय क्षेत्रों के खिलाड़ियों ने हमेशा देश का गौरव बढ़ाया है। लिम्बा राम, दीपिका कुमारी और मीराबाई चानू जैसे खिलाड़ियों ने यह सिद्ध किया है कि सीमित संसाधनों के बावजूद प्रतिभा किसी भी बाधा को पार कर सकती है। फिर भी, इन क्षेत्रों के युवाओं को लंबे समय तक उचित अवसर और संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ा है। ऐसे में इन क्षेत्रों में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन न केवल प्रतिभा को मंच देता है, बल्कि युवाओं को सकारात्मक दिशा भी प्रदान करता है। यह पहल केवल खेल तक सीमित नहीं है,

बल्कि यह सामाजिक समावेशन और सशक्तिकरण का भी माध्यम है। खेल युवाओं को अनुशासन, आत्मविश्वास और टीम भावना सिखाते हैं। साथ ही, यह उन्हें नशे और हिंसा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रखता है। जनजातीय क्षेत्रों में खेलों का विस्तार इन समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

खेलो इंडिया जनजातीय खेलों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू स्थानीय खेल अवसंरचना का विकास है। इससे न केवल खेल मैदानों और प्रशिक्षण सुविधाओं का निर्माण होगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर कोच, प्रशिक्षकों और सहयोगी कर्मचारियों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे। स्कूलों और सामुदायिक संस्थानों में खेल संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा, जिससे एक मजबूत और स्थायी खेल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो सकेगा। इसके अतिरिक्त, इन खेलों के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें उन्नत प्रशिक्षण के लिए भारतीय खेल प्राधिकरण के केंद्रों में भेजा जाएगा। इससे उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिलेगा। यह पहल भारत को भविष्य में एक सशक्त खेल राष्ट्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। जैसे-जैसे भारत 2030 राष्ट्रमंडल खेलों और 2036 ओलंपिक की मेजबानी की दिशा में प्रयास कर रहा है, वैसे-वैसे देशभर से प्रतिभाओं को सामने लाना और भी आवश्यक हो जाता है। जनजातीय खेलों की यह पहल इसी सोच का परिणाम है, जो यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी प्रतिभा केवल संसाधनों की कमी के कारण पीछे न रह जाए।

अंततः, खेलो इंडिया जनजातीय खेल केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी पहल है। यह न केवल नए खिलाड़ियों को पहचानने का मंच है, बल्कि एक समावेशी और सशक्त भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। यदि इस पहल को निरंतरता और समर्थन मिलता रहा, तो निश्चित ही भारत वैश्विक खेल मंच पर अपनी मजबूत पहचान स्थापित कर सकेगा।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

घोषणाओं का पहाड़, हकीकत की खाई : हिमाचल बजट की असल कहानी

हिमाचल प्रदेश का वित्तीय वर्ष 2026-27 का बजट जब विधानसभा में प्रस्तुत किया गया, तो स्वाभाविक रूप से लोगों को उम्मीद थी कि इस बार राज्य की आर्थिक चुनौतियों, बढ़ती बेरोजगारी और बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसे मुद्दों पर ठोस दिशा दिखाई देगी। पहाड़ों में रहने वाले लोगों की आवश्यकताएं सीमित लेकिन महत्वपूर्ण होती हैं-स्थिर आय, बेहतर सड़कें, भरोसेमंद स्वास्थ्य सेवाएं और बच्चों के लिए सुरक्षित भविष्य, लेकिन बजट का गहन अध्ययन करने पर यह उम्मीदों से अधिक समझौतों का दस्तावेज प्रतीत होता है।

अतुल ठाकुर
स्वतंत्र लेखक, सरकाघाट
मोबाइल: 6239822304

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

सरकार ने किसानों, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देने की बात कही है। यह दिशा सराहनीय है, क्योंकि हिमाचल की पहचान उसके गांवों से जुड़ी है। हालांकि, इन घोषणाओं में स्पष्टता और ठोस कार्ययोजना का अभाव साफ दिखाई देता है। राज्य की वित्तीय स्थिति पहले से ही दबाव में है-राजस्व घाटा लगातार बढ़ रहा है और केंद्र से मिलने वाला राजस्व घाटा अनुदान भी बंद हो चुका है। ऐसे में यह अपेक्षा थी कि सरकार आय बढ़ाने और निवेश आकर्षित करने के लिए कोई ठोस रणनीति प्रस्तुत करेगी, लेकिन बजट में इसका स्पष्ट रोडमैप नजर नहीं आता।

पर्यटन, जलविद्युत और छोटे उद्योग हिमाचल की अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्तंभ हैं, लेकिन इन क्षेत्रों को लेकर कोई दूरदर्शी योजना सामने नहीं आई। पर्यटन को वैश्विक स्तर पर ले जाने या निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए भी कोई प्रभावी पहल दिखाई नहीं देती। मंत्रियों और विधायकों के वेतन को छह महीने तक स्थगित करने का निर्णय भले ही सादगी का संदेश देता हो, लेकिन यह

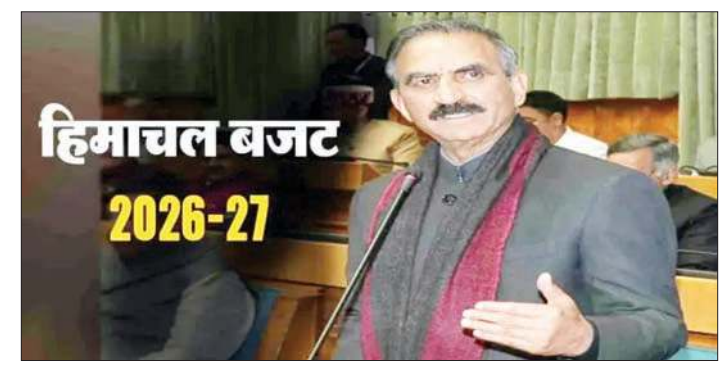

राज्य की आर्थिक मजबूरी को भी उजागर करता है। किसानों के लिए एमएसपी में वृद्धि, सब्सिडी और किसान आयोग जैसी घोषणाएं की गई हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर किसानों की असली समस्याएं-फसल की खरीद, समय पर भुगतान और बाजार तक पहुंच-अब भी अनसुलझी हैं। जब तक इन मूलभूत मुद्दों का समाधान नहीं होगा, तब तक ये घोषणाएं प्रभावी नहीं बन पाएंगी। युवाओं के संदर्भ में यह बजट और भी निराशाजनक है। रोजगार सृजन को लेकर कोई ठोस योजना या नई पहल नजर नहीं आती। न उद्योगों के विस्तार की बात, न स्टार्टअप को प्रोत्साहन, और न ही कौशल विकास के क्षेत्र में कोई बड़ा कदम-यह दर्शाता है कि युवा इस बजट की प्राथमिकताओं में पीछे रह गए हैं।

विकास के अन्य क्षेत्रों-जैसे सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और डिजिटल ढांचे में भी कोई बड़ा विजन दिखाई नहीं देता। पहाड़ी राज्यों में ये सुविधाएं केवल विकास नहीं, बल्कि जीवन की आवश्यकता हैं। इनके बिना प्रगति की गति सीमित ही रहेगी। पर्यावरण संरक्षण के लिए 2030 तक वन क्षेत्र बढ़ाने का लक्ष्य सराहनीय है, लेकिन इसे हासिल करने की स्पष्ट योजना का अभाव यहां भी नजर आता है। समग्र रूप से यह बजट एक संतुलन साधने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है, जहां सरकार सीमित संसाधनों के चलते बड़े और निर्णायक कदम उठाने से बचती नजर आती है। यह स्थिति समझी जा सकती है, लेकिन आम जनता अब केवल घोषणाओं से संतुष्ट नहीं होती। वह अपने जीवन में वास्तविक बदलाव देखना चाहती है-चाहे वह रोजगार के अवसर हों, बेहतर बुनियादी सुविधाएं हों या आर्थिक स्थिरता।

यदि बजट इन अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता, तो वह केवल एक औपचारिक दस्तावेज बनकर रह जाता है, जिसका जमीनी असर सीमित होता है। इस बजट में नीयत और इरादे जरूर दिखाई देते हैं, लेकिन दिशा की स्पष्टता का अभाव इसे कमजोर बनाता है। योजनाओं और घोषणाओं के साथ ठोस क्रियान्वयन और जवाबदेही का होना आवश्यक है, तभी जनता का भरोसा जीता जा सकता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

आज की प्रमुख हस्ती

बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता

फारुख शेख (25 मार्च 1948 - 27 दिसंबर 2013) भारतीय सिनेमा के एक संवेदनशील और प्रतिभाशाली अभिनेता थे, जिन्होंने अपने सहज अभिनय से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई। वे समानांतर सिनेमा के प्रमुख चेहरों में से एक थे और 1970-80 के दशक में अपनी अलग पहचान स्थापित की।

फारुख शेख
जन्म : 25 मार्च, 1948
मृत्यु : 27 दिसंबर, 2013

गुजरात के अमरोली में जन्मे फारुख शेख ने मुंबई में अपनी शिक्षा पूरी की और सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ लॉ से कानून की डिग्री हासिल की। हालांकि उन्होंने वकालत शुरू की, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि उनका मन अभिनय में अधिक लगता है। कॉलेज के दिनों से ही वे रंगमंच से जुड़े हुए थे और यहीं से उनके अभिनय करियर की शुरुआत हुई। उनकी पहली प्रमुख फिल्म 'गरम हवा' थी, जिसने उन्हें पहचान दिलाई। इसके बाद उन्होंने 'शतरंज के खिलाड़ी', 'नूरी', 'चश्मे बद्दूर', 'साथ-साथ' और 'कथा' जैसी फिल्मों में यादगार भूमिकाएं निभाईं। अभिनेत्री दीप्ति नवल के साथ उनकी जोड़ी विशेष रूप से लोकप्रिय रही और दोनों ने कई सफल फिल्मों में साथ काम किया।

फारुख शेख की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपने किरदारों को बेहद सादगी और वास्तविकता के साथ निभाते थे। वे आम आदमी की भावनाओं और संघर्षों को पर्दे पर जीवंत कर देते थे, जिससे दर्शक उनसे जुड़ाव महसूस करते थे। व्यक्तिगत जीवन में वे एक सरल, विनम्र और पारिवारिक व्यक्ति थे। उन्होंने रूपा जैन से विवाह किया और हमेशा अपने मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहे। वे विवादों से दूर रहे और केवल सार्थक सिनेमा को महत्व दिया। फिल्मों के अलावा उन्होंने 'जीना इसी का नाम है' जैसे लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम का संचालन भी किया। 27 दिसंबर 2013 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। उनके योगदान को भारतीय सिनेमा हमेशा याद रखेगा। ■

बड़ा हसीन है, ये कर्ज

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

डॉ. कौमार्या मनोज

मुझ पर मित्रों का प्यार, यूं ही उधार रहने दो।
बड़ा हसीन है, ये कर्ज, मुझे कर्जदार रहने दो।
वो आंखें जो छलकती हैं, गम में, खुशी में, मेरे लिए।
उन सभी आंखों में सदा, प्यार बेशुमार रहने दो।
मौसम लाख बदलते रहें, आएं भले बसंत-पतझड़।।
मेरे मित्रों को जीवन भर, यूं ही सदाबहार रहने दो ।
महज दोस्ती नहीं ये, बगिया है विश्वास की।
प्यार, स्नेह के फूलों से, इसे गुलजार रहने दो।
वो मस्ती, वो शरारतें, न तुम भूलो, न हम भूलें।
उम्र बढ़ती है..खूब बढ़े, जवां ये किरदार रहने दो।।

पाठकों से अनुरोध है कि वे अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव, आलेख कविताएं और अपनी बात कॉलम के लिए सामग्री *editoranantgyaan@gmail.com* पर या व्हाट्सऐप नंबर 8894521702 व 8091450407 पर भेज सकते हैं।

सड़क दुर्घटनाओं से सुरक्षा : सावधानी से ही होगी जीवनरक्षा

भारत में सड़क दुर्घटनाएं आज एक गंभीर सामाजिक और राष्ट्रीय समस्या का रूप ले चुकी हैं। हर वर्ष लाखों लोग दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं, जिनमें से अनेक अपनी जान गंवा देते हैं, जबकि हजारों लोग स्थायी रूप से विकलांग हो जाते हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि जिन सड़कों को विकास और प्रगति की पहचान माना जाता है, वही असावधानी और लापरवाही के कारण मृत्यु का कारण बन रही हैं।

केशव शर्मा रसिक
स्वतंत्र लेखक, गांव कोटला, घुमारवीं, मो. 9417379327

अनंत ज्ञान दैनिक समाचार पत्र

सड़क दुर्घटनाओं के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। इनमें सबसे प्रमुख कारण तेज रफ्तार है, जिसे आजकल लोग रोमांच और समय बचाने का माध्यम मानते हैं। इसके अलावा शराब पीकर वाहन चलाना, मोबाइल फोन का उपयोग करते हुए ड्राइविंग करना, यातायात नियमों की अनदेखी करना और ओवरटेक करने की होड़ भी दुर्घटनाओं को बढ़ावा देते हैं। कई बार वाहन चालक धैर्य खो देते हैं और छोटी-सी गलती भी बड़े हादसे का कारण बन जाती है। दूसरी ओर, खराब सड़कें, गड्ढे, उचित संकेतकों का अभाव, रात में अपर्याप्त रोशनी तथा वाहनों की नियमित फिटनेस जांच न होना भी दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ाने में योगदान देता है।

विशेष रूप से युवा वर्ग सड़क दुर्घटनाओं का सबसे बड़ा शिकार बन रहा है। आज के समय में सोशल मीडिया पर लोकप्रियता पाने के लिए कई युवा खतरनाक स्टंट करते हैं, जो उनकी जान के लिए जोखिम बन जाता है। बिना हेलमेट बाइक चलाना, सीट बेल्ट का उपयोग न करना और तेज गति से वाहन चलाना युवाओं के बीच एक फैशन की तरह देखा जाने लगा है। दुर्भाग्यवश, एक क्षण की लापरवाही उनके पूरे जीवन को प्रभावित कर देती है और उनके परिवार को गहरे दुख में डाल देती है। सड़क सुरक्षा का सबसे सरल और प्रभावी उपाय सावधानी

और जागरूकता है। वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। निर्धारित गति सीमा का पालन करना, हेलमेट और सीट बेल्ट का अनिवार्य उपयोग करना, नशे की हालत में वाहन न चलाना तथा मोबाइल फोन से दूरी बनाए रखना जीवन रक्षा के मूल सिद्धांत हैं। इसके साथ ही पैदल चलने वालों को भी जेब्रा क्रॉसिंग का उपयोग करना चाहिए और सड़क पार करते समय पूरी सतर्कता बरतनी चाहिए। सड़क सुरक्षा केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक दायित्व है। प्रशासन को चाहिए कि वह सड़कों की गुणवत्ता में सुधार करे, उचित संकेतक और स्पीड ब्रेकर लगाए तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई करे। इसके साथ ही स्कूलों और कॉलेजों में सड़क सुरक्षा से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए, ताकि बच्चों और युवाओं में शुरू से ही सुरक्षित यातायात की आदत विकसित हो सके। मीडिया और सामाजिक संस्थाओं को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। अंततः, यह समझना आवश्यक है कि सड़क दुर्घटनाएं कोई प्राकृतिक आपदा नहीं हैं, बल्कि यह मानवीय त्रुटियों और लापरवाही का परिणाम हैं। यदि हम सभी थोड़ी-सी सावधानी और जिम्मेदारी अपनाएं, तो इन दुर्घटनाओं को काफी हद तक रोका जा सकता है। जीवन अमूल्य है और इसे सुरक्षित रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। इसलिए, सड़क पर जल्दबाजी नहीं, बल्कि सुरक्षित तरीके से अपने गंतव्य तक पहुंचना ही सच्ची समझदारी है। सावधानी ही सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

अनंत ज्ञान

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक डॉ. दिलीप धाकड़ द्वारा फोकस हिमाचल मीडिया प्रा. लि. के लिए बायोसर्ट इंटरनेशनल प्रा. लि. प्लॉट नंबर 8, फेज-2 इंडस्ट्रियल एरिया, नगरोटा बगवां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.), पिन नंबर-176047 से मुद्रित एवं प्रकाशित। समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।

आरएनआई संदर्भ संख्या-HPHIN/25/A0284
ई-मेल : anantgyaanmedia@gmail.com
फोन नंबर : 01892-299098

न्यूज ब्रीफ

पौधरोपण व पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। अंतरराष्ट्रीय वन दिवस एवं विश्व जल दिवस के अवसर पर हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की क्षेत्रीय प्रयोगशाला सुंदरनगर ने आईटीआई सुंदरनगर के प्रशिक्षुओं के साथ मिलकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य विजय चौधरी, उप प्रधानाचार्य सीता राणा और वैज्ञानिक अधिकारी चमन लाल ठाकुर ने की। इसमें करीब 30 प्रशिक्षुओं सहित अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत पौधारोपण अभियान से हुई, जिसमें विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए। इस पहल का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और हरित आवरण को मजबूत करना रहा। वक्ताओं ने जल संरक्षण और वनों के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

मतदाता सूचियों का विशेष पुनरीक्षण शुरू

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। पंचायती राज संस्थाओं की मतदाता सूचियों के विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम की शुरुआत कर दी गई है। पुनरीक्षण अधिकारी एवं खंड विकास अधिकारी सुंदरनगर नियोन शर्मा ने बताया कि क्षेत्र के नागरिक निर्धारित समय-सीमा के भीतर अपने नाम दर्ज कराने, संशोधन कराने और आपत्तियां प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने जानकारी दी कि पंचायती राज चुनाव 31 मई तक सम्पन्न किए जाएंगे। अधिसूचना के अनुसार 1 अप्रैल को नई अर्हता तिथि तय की गई है, जिसके आधार पर 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के नागरिक मतदाता सूची में नाम दर्ज करवा सकेंगे। दावे और आपत्तियां दर्ज करने की अंतिम तिथि 28 मार्च है, जबकि उनका निस्तारण 2 अप्रैल तक किया जाएगा।

दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाएगी सोसायटी

अनंत ज्ञान, सरकाघाट। ठेकेदार रांझा राम वेलफेयर सोसायटी ने समाज सेवा के तहत दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कृत्रिम टांग (लोअर लिम्ब) लगाने के नाप लिए। जल्द ही आयोजित होने वाले विशेष शिविर में पात्र दिव्यांग व्यक्तियों को कृत्रिम टांगें लगाई जाएंगी, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। संस्था अब तक सरकाघाट और हिमाचल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में 9 निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर चुकी है। इसके अलावा दिव्यांग व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता अनुसार कृत्रिम बाजू, व्हीलचेयर और हियरिंग एड भी उपलब्ध कराए जाएंगे। इस सामाजिक कार्य में आईजीएमसी शिमला के एमएस डॉ. राहुल राव का सहयोग भी सराहनीय रहा।

विश्व क्षय रोग दिवस पर निकाली रैली

अनंत ज्ञान ब्यूरो, मंडी। विश्व क्षय रोग दिवस पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. दीपाली शर्मा की अध्यक्षता में जिला अस्पताल मंडी से नर्सिंग प्रशिक्षुओं और निःक्षय वाहन की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर 100 दिवसीय 'टीबी मुक्त भारत' अभियान का शुभारंभ किया गया। अभियान में टीबी रोग से संबंधित जागरूकता फैलाने के साथ 835 उच्च जोखिम वाले गांवों में हैंड हेल्ड एक्स-रे से रोगियों की पहचान की जाएगी। संक्रमित व्यक्तियों का उपचार सरकारी अस्पतालों में मुफ्त होगा, साथ ही पोषण किट और प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। रैड ऐरो प्रतियोगिता में नर्सिंग स्कूल मंडी प्रथम, अरोमा नर्सिंग स्कूल सुंदरनगर द्वितीय और हिमालयन नर्सिंग कॉलेज जोगिंदरनगर तृतीय स्थान पर रहे।

ग्रामीणों ने फ्री स्वास्थ्य जांच का उठाया लाभ

कविता, अनंत ज्ञान, पधर। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के उद्देश्य से पधर के सामुदायिक भवन में एक दिवसीय निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आयुष विभाग और पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता कमेटी पधर के संयुक्त प्रयास से आयोजित इस शिविर में सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया। विशेषज्ञ आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने मरीजों की जांच कर रोगानुसार दवाइयां उपलब्ध करवाईं। बीपी, शुगर और हीमोग्लोबिन की जांच के साथ अस्थि-संधि रोग, ईएनटी और अन्य सामान्य रोगों का उपचार किया गया। योग गाइड अमित पाल ने योग व प्राणायाम के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी सुझाव दिए। कार्यक्रम के अंत में किरण चौहान ने आयुष विभाग का आभार व्यक्त किया।

नलवाड़ मेले में आज-कल होगी शतरंज स्पर्धा

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। नलवाड़ मेला के तहत 25 और 26 मार्च को जवाहर पार्क कम्युनिटी हॉल सुंदरनगर में शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन होगा। मेला कमेटी सुंदरनगर के तत्वावधान में आयोजित इस प्रतियोगिता में सीनियर ओपन, अंडर-16 और अंडर-12 वर्ग शामिल हैं। प्रतियोगिता स्विस मैनेजर प्रणाली में 25 मिनट + 10 सेकंड इंक्रीमेंट के समय फॉर्मेट में खेली जाएगी। प्रतिभागी निर्धारित गूगल फॉर्म भरकर एंट्री फीस जमा कर व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ सकते हैं। पहले तीन दौर 25 मार्च को और शेष मुकाबले 26 मार्च को होंगे। विजेताओं के लिए आकर्षक पुरस्कार भी रखे गए हैं। प्रतिभागियों से 23 मार्च शाम 7 बजे तक पंजीकरण और प्रतियोगिता के दिन सुबह 9 बजे स्थल पर उपस्थित होने का अनुरोध किया गया है।

कर्मचारियों की उम्मीदों के विरुद्ध बजट: नरेश

अनंत ज्ञान, मंडी। राज्य कर्मचारी महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष नरेश ठाकुर ने प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट को कर्मचारियों की उम्मीदों के विरुद्ध बताया है। उन्होंने कहा कि सरकारी कर्मियों व अधिकारियों को इस बजट से राहत मिलने की बजाय निराशा हाथ लगी है। कर्मियों की मेहनत की कमाई पर 3 प्रतिशत कटौती का प्रस्ताव पूरी तरह कर्मचारी विरोधी है। उन्होंने कहा कि आपदा के समय कर्मचारी हमेशा सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे हैं। उन्होंने सरकार से मांग की है कि 6 माह के लिए प्रस्तावित यह कटौती तुरंत वापस ली जाए। उन्होंने मांग की कि कर्मियों को लंबित 13 प्रतिशत महंगाई भत्ता तुरंत जारी किया जाए। पिछले बकाया डीए एरियर का भुगतान किया जाए। ये एरियर का भी शीघ्र भुगतान सुनिश्चित किया जाए। प्रदेश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कर्मियों के वेतन में कटौती उचित नहीं है। सरकार को अन्य वैकल्पिक उपाय अपनाने चाहिए।

न्यू क्रिसेंट स्कूल की प्रधानाचार्य शशि सम्मानित

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर। न्यू क्रिसेंट वरिष्ठ माध्यमिक पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य शशि किरण को आयकर अधिकारी संगठन द्वारा शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट नेतृत्व, समर्पण और योगदान के लिए 'श्रेष्ठ प्रधानाचार्य पुरस्कार 2025-26' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, उच्च शैक्षणिक मानकों की स्थापना और कुशल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया गया। उनके नेतृत्व में विद्यालय ने शैक्षणिक, खेलकूद, सांस्कृतिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। शशि किरण का मानना है कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास में योगदान देना चाहिए। इस उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उन्हें बधाई देते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं।

भंगरोटू में सीबीएसई परिवर्तन पर दिया जोर

अनंत ज्ञान, भंगरोटू। पीएम श्री राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भंगरोटू अब केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से संबद्ध हो गई है। प्रधानाचार्य अंजना चौहान ने बताया कि स्कूल को सीबीएसई के मानकों के अनुरूप ढालने की तैयारियां युद्धस्तर पर चल रही हैं, जिससे छात्रों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जा सके। साथ ही, जिला प्रशासन ने स्कूल को 'एंटी-चिट्टा' अभियान के केंद्र के रूप में चुना है, जिसका उद्देश्य युवाओं को नशे से बचाना और जागरूक करना है। पुलिस अधीक्षक मंडी विनोद कुमार ने स्कूल का दौरा कर शिक्षकों और छात्रों के साथ संवाद किया और इस अभियान में स्कूल की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

बरछवाड़ नलवाड़ मेले के लिए ऑडिशन 27 को

अनंत ज्ञान, सरकाघाट। राजकीय महाविद्यालय सरकाघाट में 27 मार्च को बरछवार नलवाड़ मेला के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए ऑडिशन आयोजित किया जाएगा। यह मेला 28 मार्च से 3 अप्रैल 2026 तक चलेगा। उपमंडल अधिकारी (नागरिक), सरकाघाट द्वारा आयोजित इस ऑडिशन के संचालन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम-सह-ऑडिशन समिति का गठन किया गया है, जिसका संयोजक सहायक आयुक्त (विकास) गोपालपुर हैं। समिति में विभिन्न विभागों के अधिकारी, शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि और संगीत विशेषज्ञ सदस्य हैं। ऑडिशन का उद्देश्य स्थानीय प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना है, ताकि वे गायन, संगीत और अन्य मंचीय प्रस्तुतियों में भाग ले सकें। प्राचार्य डॉ. आर.आर. कौंडल ने छात्रों से अधिक से अधिक भाग लेकर मेले को सफल बनाने का आह्वान किया।

आईआईटी मंडी का स्थापना दिवस 30 को

अनंत ज्ञान ब्यूरो, मंडी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मंडी 30 मार्च को अपना 17वां स्थापना दिवस मनाएगा। यह दिन संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता, नवाचार और राष्ट्र-निर्माण की दिशा में यात्रा का प्रतीक होगा। कार्यक्रम में शिक्षा, उद्योग और सार्वजनिक सेवा के प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल होंगे। मुख्य अतिथि क्रिस गोपालकृष्णन और विशिष्ट अतिथि ओसामा खतीब सभा को संबोधित करेंगे। निदेशक लक्ष्मीधर बेहरा ने कहा कि पिछले 16 वर्षों में आईआईटी मंडी ने शिक्षा और अनुसंधान में निरंतर प्रगति की है। कामंद घाटी में स्थित यह संस्थान कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स और सतत प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में अग्रणी योगदान दे रहा है।

ढाबों व भोजनालयों पर प्रशासन की कार्रवाई, 19 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त

एसडीएम सरकाघाट ने किया औचक निरीक्षण, एक ही दुकान से 9 सिलेंडर बरामद

अनंत ज्ञान

ढाबे का निरीक्षण करते हुए। अनंत ज्ञान

रितेश चौहान, सरकाघाट। उपमंडल सरकाघाट के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में एसडीएम सरकाघाट राजेंद्र कुमार गौतम ने ढाबों व भोजनालयों में नियमों के उल्लंघन के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए औचक निरीक्षण किया।

इस कार्रवाई के दौरान उपमंडल के नबाही, मौहीं, फतेहपुर, पौंटा, कैंचीमोड़, ढ़लवान, प्लान मोड़ व आमला गलू के ढाबों व भोजनालयों में प्रयोग हो रहे 19 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए। इनमें से एक ही दुकान से 9 घरेलू गैस सिलेंडर बरामद होना गंभीर लापरवाही को दर्शाता है। एसडीएम सरकाघाट के नेतृत्व में हुई इस संयुक्त कार्रवाई में पाया गया कि कई ढाबा संचालक घरेलू गैस कनेक्शन का उपयोग व्यावसायिक गतिविधियों के लिए कर रहे थे, जबकि इसके लिए अलग से व्यावसायिक गैस कनेक्शन लेना अनिवार्य है। प्रशासन द्वारा मौके पर ही सिलेंडर जब्त कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

एसडीएम राजेन्द्र कुमार गौतम ने कहा कि घरेलू गैस का इस प्रकार दुरुपयोग गंभीर मामला है और इससे आम उपभोक्ताओं की आपूर्ति प्रभावित होती है। उन्होंने बताया कि प्रशासन द्वारा लगातार निगरानी रखी जा रही है और भविष्य में भी इस तरह के औचक निरीक्षण जारी रहेंगे। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की अनियमितताएं बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएंगी। उन्होंने बताया कि घरेलू गैस का व्यावसायिक उपयोग आपूर्ति प्रणाली को प्रभावित करता है और जरूरतमंद उपभोक्ताओं को समय पर गैस उपलब्ध नहीं हो पाती। उन्होंने सभी ढाबा संचालकों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे तत्काल व्यावसायिक गैस कनेक्शन लें और नियमों का पालन सुनिश्चित करें अन्यथा कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

इसके अलावा एक दुकान में प्रतिबंधित पॉलिथीन का उपयोग करते पाए जाने पर 1000 रुपये का चालान भी किया गया। प्रशासन ने इसे पर्यावरण नियमों का उल्लंघन बताते हुए सख्त चेतावनी दी। निरीक्षण दल में खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के निरीक्षक देश राज ठाकुर, एएसआई पवन कुमार तथा संबंधित गैस एजेंसी के प्रतिनिधि शामिल रहे, जिन्होंने विभिन्न स्थानों पर जाकर ढाबों व दुकानों की जांच की।

सरकाघाट में तीन सालों में 120 करोड़ स्वीकृत, 17 करोड़ भी खर्च नहीं: दिलीप

अनंत ज्ञान

रितेश चौहान, सरकाघाट। सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों की स्थिति को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, पिछले 3 वर्षों (31 जनवरी तक) में केंद्र सरकार, प्रदेश सरकार, जिला परिषद एवं पंचायती राज विभाग द्वारा सरकाघाट की पंचायतों को कुल ₹1,20,46,53,642 (लगभग 120 करोड़) की राशि स्वीकृत की गई। हैरानी की बात यह है कि इस भारी-भरकम राशि में से केवल ₹1,03,56,58,742 ही खर्च हो पाई, जबकि ₹16,89,94,900 (करीब 17 करोड़) की राशि अब भी खर्च नहीं हो सकी है। यह स्थिति साफ दर्शाती है कि पंचायत स्तर पर विकास कार्यों को लेकर गंभीर लापरवाही बरती जा रही है, जिससे क्षेत्र में कई योजनाएं अधूरी पड़ी हैं और आम जनता विकास से वंचित हो रही है।

इस मुद्दे को सरकाघाट के विधायक दिलीप ठाकुर द्वारा विधानसभा में प्रमुखता से उठाया गया, जिसमें उन्होंने सरकार से सवाल किया कि आखिर इतनी बड़ी राशि के बावजूद जमीनी स्तर पर विकास कार्य क्यों नहीं दिख रहे और पैसा खर्च क्यों नहीं हो पाया।

यह भी स्पष्ट हुआ है कि पंचायत स्तर पर स्टाफ की भारी कमी के चलते कार्य प्रभावित हो रहे हैं। एक तकनीकी सहायक को 7 पंचायतों का जिम्मा दिया गया है, वहीं सचिव को अतिरिक्त पंचायतों का कार्यभार संभालना पड़ रहा है। ग्राम रोजगार सेवकों पर भी अत्यधिक कार्यभार होने के कारण योजनाओं का सही क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा। विधायक ने कहा कि पंचायत चुनाव समय पर न करवाना सरकार का लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करने वाला कदम है। अब पंचायतों के फंड को जल शक्ति विभाग को ट्रांसफर करना यह संकेत देता है कि सरकार जानबूझकर पंचायती राज व्यवस्था को कमजोर करने का प्रयास कर रही है।

विदेशी पैराग्लाइडरों ने खराब मौसम के चलते गोरा में की इमरजेंसी लैंडिंग

अनंत ज्ञान

जोगिंद्रनगर। तहसील मुख्यालय लडभड़ोल के अंतर्गत गोरा गांव में मंगलवार को उस समय अफरा-तफरी का माहौल बन गया, जब अचानक आसमान से दो विदेशी पैराग्लाइडर खेतों में आ उतरे। खेतों में पैराग्लाइडर उतरते देख ग्रामीण हैरान रह गए और कुछ ही देर में मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। गनीमत यह रही कि इस इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान दोनों पायलट पूरी तरह सुरक्षित रहे। पैराग्लाइडरों की पहचान कजाकिस्तान के रहने वाले अलेक्स और युवरा के रूप में हुई है।

बताया जा रहा है कि दोनों पायलटों ने विश्व प्रसिद्ध पैराग्लाइडिंग साइट बीड़-बिलिंग से उड़ान भरी थी, लेकिन रास्ता भटकने और हवा के तेज बहाव के कारण वे लडभड़ोल क्षेत्र के गोरा गांव की ओर पहुंच गए। जानकारी के अनुसार उड़ान के दौरान अचानक मौसम ने करवट ले ली। आसमान में घने बादल छा गए और बारिश शुरू हो गई, जिससे स्थिति जोखिमपूर्ण हो गई। ऐसे में पायलटों ने सूझबूझ का परिचय देते हुए गोरा गांव के समतल खेतों को सुरक्षित स्थान मानते हुए इमरजेंसी लैंडिंग करने का फैसला लिया। गांव में विदेशी पैराग्लाइडरों के उतरने की खबर आग की तरह फैल गई और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौके पर पहुंच गए। बाद में पायलट अलेक्स ने ग्रामीणों को बताया कि खराब मौसम के कारण हवा में उड़ान जारी रखना खतरे से खाली नहीं था, इसलिए मजबूरी में उन्हें यह कदम उठाना पड़ा। स्थानीय लोगों ने भी दोनों पायलटों की सहायता की और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की।

डीसी ने दिए पुनर्गठित पंचायतों में विशेष ग्राम सभा बैठकों के आदेश

अनंत ज्ञान

- खंड विकास अधिकारियों को दी गई जिम्मेदारी
- पंचायतों के नामों सहित विस्तृत सूची जारी

ब्यूरो, मंडी। मंडी जिले में पुनर्गठित एवं नवगठित ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभा बैठकों के आयोजन को लेकर उपायुक्त अपूर्व देवगन ने आदेश जारी किए हैं। राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशों के तहत संबंधित खंड विकास अधिकारियों को इन बैठकों के आयोजन के लिए अधिकृत किया गया है। आदेशों के अनुसार विकास खंड धनोटू की घिड़ी, निहरी की रोहांडा, धर्मपुर की ब्रांग, बनाल, पपलोग, वसन्तपुर, लौंगणी, ग्रयोह, सरस्कान, लंगेहड़, सरी, डरबाड़, घरवासड़ा, बिंगा व सधोट, गोपालपुर की रखोह, द्रंग (पद्धर) की नेरघरवासड़ा, मसौली व भराड़ू, गोहर की नौण व शिल्हूं, चौंतड़ा की ढेलू, सदर की जनेड, बल्ह की भडयाल, गलमा व सकरोहा, करसोग की ममेल, सुन्दरनगर की जाम्बला व कांगू तथा बालीचौकी की खोलानाल, खाहरी, नलवागी व कून पंचायतों में बैठकें होंगी।

इसके अतिरिक्त नवगठित पंचायतों में द्रंग (पद्धर) की छतर सपैड़ू व मनोह, गोहर की कोट व बाबू, निहरी की चौकी, चौंतड़ा की योरा व डोहग, सदर मंडी की तान्दी, करसोग की वताला देहल, सुन्दरनगर की ज्योर व दयोही, गोपालपुर की जन्दरूकलां, धर्मपुर की हुक्कल, कांगो का गैहरा, ठाणा (बरोटी), गियुण, फिहड़, चसवाल, डबरोट व रोसो तथा बल्ह की टिक्कर कलां, करनेहडा व चतरौर पंचायतें शामिल हैं।

आदेशों में कहा गया है कि ग्राम पंचायतों में वर्तमान में प्रधान का पद रिक्त होने के कारण खंड विकास अधिकारी अपने अधिकार क्षेत्र की संबधित ग्राम पंचायतों में विशेष बैठक बुलाने के लिए अधिकृत हैं। उपायुक्त ने निर्देश दिए कि निर्धारित समय-सीमा को ध्यान में रखते हुए वे अपने स्तर पर उपयुक्त तिथि निर्धारित करें और बैठक के आयोजन के लिए कम से कम तीन दिन पूर्व नोटिस जारी करें।

खाई में गिरी जीप, युवक की मौके पर मौत

अनंत ज्ञान, सुनील शर्मा, गोहर। गोहर उपमंडल के अंतर्गत कोट देवी दहड़ सड़क मार्ग पर मंगलवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद पूरे क्षेत्र में शोक और सनसनी का माहौल है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिमनी जीप चैलचौक से जहल की ओर जा रही थी। इसी दौरान तुना गांव के समीप वाहन अचानक अनियंत्रित हो गया और सड़क से लुढ़ककर गहरी खाई में जा गिरा। हादसा इतना भयावह था कि वाहन के परखच्चे उड़ गए और

चालक की मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान पंकु पुत्र डीके, निवासी स्यास के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि युवक वाहन में अकेला सवार था। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार वाहन का संतुलन बिगड़ने से यह हादसा पेश आया।

बस में बैग से 1.890 किलो चरस बरामद

अनंत ज्ञान, मंडी। औट थाना पुलिस ने झलोगी (एनएच-03) के समीप नाकाबंदी के दौरान एक बस नंबर एचपी65-5949 को जांच के लिए रोका। बस की तलाशी के दौरान गवाहों की मौजूदगी में एक बैग से 1.890 किलोग्राम चरस बरामद की गई। आरोपी की पहचान भूमि राम निवासी जिला कुल्लू के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर मादक पदार्थ और अन्य सामग्री कब्जे में ले ली है। मामले की गहन जांच जारी है और मादक पदार्थ की सप्लाई चेन का पता लगाया जा रहा है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया जा रहा है।

ट्रक से 3 ग्राम चिट्टा बरामद, दो गिरफ्तार

अनंत ज्ञान, मंडी। जंजैहली थाना पुलिस ने फॉरेस्ट चैक पोस्ट बगस्याड में नाकाबंदी के दौरान एक ट्रक नंबर एचपी 87-3379 को जांच के लिए रोका। वाहन चालक और उसके साथ बैठे व्यक्ति के संदिग्ध व्यवहार पर ट्रक की तलाशी ली गई, जिसमें केबिन के डैशबोर्ड के अंदर से एक पारदर्शी लिफाफे में करीब 3 ग्राम चिट्टा/हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने इस मामले में मोहन सिंह और लाल सिंह के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया। बाद में नियमानुसार कार्रवाई करते हुए दोनों को नोटिस देकर रिहा कर दिया गया। पुलिस ने बरामद मादक पदार्थ और ट्रक को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

यातायात नियम उल्लंघन पर काटे 347 चालान

अनंत ज्ञान, मंडी। जिला पुलिस मंडी ने विभिन्न अभियानों के तहत मोटर वाहन अधिनियम के उल्लंघन पर 347 चालान किए हैं। वहीं कोटपा के तहत 26 चालान कर 2600 रुपए जुर्माना वसूला गया है, जबकि माइनिंग एक्ट के तहत 2 चालान किए गए हैं। यह जानकारी पुलिस अधीक्षक मंडी द्वारा दी गई।

भाषण प्रतियोगिता में रजत ठाकुर प्रथम

अनंत ज्ञान, सरकाघाट। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. अनिल कुमार के सौजन्य से आज राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भद्रोता में विश्व क्षय रोग दिवस का आयोजन प्रधानाचार्य सुरेश कुमार की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें प्रशिक्षित स्वास्थ्य शिक्षक अचला कुमारी ने क्षय रोग के बारे में जानकारी दी गई। भाषण व कला प्रतियोगिता भी करवाई गई। भाषण प्रतियोगिता में रजत ठाकुर प्रथम, बंदना द्वितीय, अति देवी और आर्यन तृतीय रहे।कला प्रतियोगिता में कंगना प्रथम, अरुण द्वितीय और संजय व राहुल तृतीय रहे। स्वास्थ्य विभाग की तरफ से पुरस्कार भी बांटे गए। इस अवसर डॉ विजय कुशल , माया देवी महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता और आशा तथा 103 बच्चे उपस्थित रहे। इस दिवस पर रैली का आयोजन भी किया गया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही सरकार: संजीव

अनंत ज्ञान, ब्यूरो, मंडी। विपाशा सदन मंडी में जिला स्तरीय किसान मेले की अध्यक्षता करते हुए एपीएमसी मंडी के अध्यक्ष संजीव गुलेरिया ने कहा कि प्रदेश सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है। कृषि विभाग मंडी द्वारा आत्मा परियोजना के माध्यम से आयोजित इस मेले में जिले के सैकड़ों किसान शामिल हुए। संजीव गुलेरिया ने किसानों को बजट में निर्धारित समर्थन मूल्य, प्राकृतिक खेती और मोटे अनाज (मिलेट) के लाभ, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और आधुनिक विपणन तकनीकों की जानकारी दी। मेले में किसानों को बीज भी वितरित किए गए। इस अवसर पर एपीएमसी, आत्मा परियोजना और फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गनाइजेशन के अधिकारी एवं विशेषज्ञ मौजूद रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए जागरूक करना था।

यूनियन कार्ड बनवाना अनिवार्य

अनंत ज्ञान, सरकाघाट। उपमंडल सरकाघाट में टैक्सी ऑपरेटरों की मासिक बैठक प्रधान ज्ञान चंद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में यूनियन ने पार्किंग की कमी और सड़क किनारे गाड़ियों के खड़े होने की समस्या के मद्देनजर सख्त फैसले लिए। प्रधान ज्ञान चंद ने बताया कि जनवरी 2027 तक कोई नई एंट्री यूनियन में नहीं होगी। इसके बाद केवल पांच किलोमीटर के दायरे में रहने वाले ऑपरेटरों को ही प्रवेश मिलेगा और एडमिशन फीस 11,000 रुपये होगी। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि सभी ऑपरेटरों को अपने लाइसेंस दिखाकर यूनियन कार्ड बनवाना अनिवार्य होगा और गाड़ी हमेशा नंबर के अनुसार खड़ी करनी होगी। नियमों का उल्लंघन करने वाले को यूनियन से बाहर किया जाएगा और जमा की गई फीस जब्त कर ली जाएगी। बैठक में अजय कुमार, विपन कुमार, अश्वनी, विरेन्द्र कुमार, संजय कुमार, अशोक कुमार, विजय कुमार, विक्रांत और दिनेश सहित कई ऑपरेटर शामिल हुए। यह निर्णय सरकाघाट में टैक्सी संचालन को व्यवस्थित करने के लिए लिया गया है।

देव श्री हुरंग नारायण व पशाकोट को दिया लघु शिवरात्रि में शामिल होने का निमंत्रण

देवता को निमंत्रण देते हुए। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

अभिषेक शर्मा, जोगिंद्रनगर। चौहार घाटी के बड़ा देव श्री हुरंग नारायण तथा पहाड़ी बजीर देव श्री पशाकोट को निमंत्रण देने के लिए जोगिंद्रनगर मेला समिति की ओर से तहसीलदार लड़भड़ोल डॉ. मुकुल शर्मा आज चौहार घाटी की तरसवाण पंचायत के धरमेहड़ गांव पहुंचे। उन्होंने बड़ा देव श्री हुरंग नारायण तथा देव श्री पशाकोट को आगामी 1 से 5 अप्रैल तक आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय लघु शिवरात्रि मेला जोगिंद्रनगर में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया।

दोनों देवताओं के कारदारों ने तहसीलदार डॉ. मुकुल शर्मा व उनके साथ उपस्थित अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को बड़ा देव श्री हुरंग नारायण तथा देव श्री पशाकोट के आशीर्वाद स्वरूप चादर भेंट कर सम्मानित किया।जोगिंद्रनगर के इस ऐतिहासिक व प्राचीन राज्य स्तरीय लघु शिवरात्रि मेला का शुभारंभ चौहारघाटी के बड़ा देव श्री हुरंग नारायण व देव श्री पशाकोट के आगमन से ही माना जाता है। मेले का शुभारंभ एक अप्रैल को बड़ा देव श्री हुरंग नारायण तथा देव श्री पशाकोट के नेतृत्व में निकलने वाली देवी-देवताओं की भव्य जलेब के साथ होता है।

इस मेला में चौहार घाटी सहित अन्य क्षेत्रों से लगभग एक सौ से अधिक देवी-देवता अपना आशीर्वाद देने के लिए जोगिंद्रनगर पहुंचते हैं। इस अवसर पर कानूनगो राज कुमार व प्रचार सहायक देव राज भी मौजूद रहे।

नेरचौक में शपथ के साथ टीबी मुक्त समाज का संदेश

अनंत ज्ञान, भंगरोटू। लाल बहादुर शास्त्री राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल नेरचौक के सामुदायिक चिकित्सा विभाग द्वारा विश्व क्षय रोग दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. डी.के. वर्मा के मार्गदर्शन में प्रशिक्षु छात्रों ने रैली निकालकर 'टीबी हारेगा, देश जीतेगा' के नारे लगाए और लोगों को जागरूक किया। विशेषज्ञों ने क्षय रोग की जांच, उपचार और नि:शुल्क दवा व्यवस्था की जानकारी दी। इस अवसर पर पोस्टर, नारा लेखन और लघु चलचित्र प्रतियोगिताएं हुईं, जिनमें छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और विजेताओं को सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य ने कहा कि समय पर जांच और नियमित उपचार से टीबी पूरी तरह ठीक हो सकती है तथा छात्रों से समाज में जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। विभागाध्यक्ष ने सभी को क्षय रोग उन्मूलन की शपथ दिलाई, जबकि लगभग 200 लोगों ने हस्ताक्षर कर टीबी मुक्त समाज का संकल्प लिया।

पेट्रोल-डीजल पर कांग्रेस सरकार का 'टैक्स प्रहार', जनता बेहाल: अजय राणा

अनंत ज्ञान

- महंगाई की आग में झोंक रही सुक्खू सरकार, तुरंत टैक्स-सेस वापस ले

ब्यूरो, मंडी। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता अजय राणा ने मंडी से जारी बयान में हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार पर पेट्रोल और डीजल पर भारी टैक्स और सेस लगाकर आम जनता की जेब पर सीधा हमला करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की सुख सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर ₹5 प्रति लीटर तक का अतिरिक्त 'सेस' लगाकर महंगाई को और बढ़ा दिया है।

इससे प्रदेश में ईंधन की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं और आम आदमी, किसान, ट्रांसपोर्टर व छोटे व्यापारी सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। अजय राणा ने कहा कि इस टैक्स बढ़ोतरी के कारण हिमाचल में पेट्रोल और डीजल की कीमतें पड़ोसी राज्यों पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ से अधिक हो गई हैं, जिससे सीमावर्ती जिलों के व्यापार और परिवहन क्षेत्र को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। ट्रांसपोर्ट लागत बढ़ने से फल, सब्जी, दूध जैसी आवश्यक वस्तुएं महंगी हो रही हैं और महंगाई का सीधा बोझ जनता पर डाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार अपने आर्थिक कुप्रबंधन को छिपाने के लिए लगातार टैक्स बढ़ा रही है, जबकि जनता को राहत देने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण प्रदेश आर्थिक संकट की ओर बढ़ रहा है और सरकार अपनी नाकामियों का बोझ जनता पर डाल रही है।

अंत में उन्होंने मांग की कि प्रदेश सरकार तुरंत पेट्रोल और डीजल पर लगाए गए अतिरिक्त टैक्स और सेस को वापस ले, ताकि आम जनता को महंगाई से राहत मिल सके।

अनदेखी सुंदरनगर पुलिस थाने के पास प्रशासनिक परिसर के पीछे लगे कूड़े के अंबार

टूटे आवास में सज रही शराबियों की महफिल

अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान मुद्दा

- लोगों ने प्रशासन से जल्द सख्त कार्रवाई करने की उठाई मांग

भीम बसेड़ू राजपूत, महादेव। पुलिस थाना सुंदरनगर के निकट स्थित प्रशासनिक परिसर के पिछवाड़े का एक बड़ा हिस्सा इन दिनों बेतरतीब उगी झाड़ियों और जंगल की गिरफ्त में है। यही क्षेत्र अब कूड़े-कचरे की डंपिंग साइट बनकर रह गया है, जो प्रशासन की नाक तले सुंदरनगर की सुंदरता पर किसी ग्रहण से कम नहीं दिखता। यहां प्लास्टिक सहित विभिन्न प्रकार का कूड़ा हरियाली में ठूंस-ठूंस कर भरा गया है, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

टूटे सरकारी आवास में बिखरी बोतलें और गंदगी। अनंत ज्ञान

बताया जा रहा है कि इस मुख्य स्थल पर दफ्तरी कूड़े-कचरे को जिम्मेदार व्यक्ति की निगरानी में निस्तारित करने के लिए एक बड़ी चिमनी निर्माण की मांग लंबे समय से लंबित है। हालांकि बार-बार इस महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाए जाने के बावजूद प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। प्रशासन के ढुलमुल रवैए के कारण जहां एक ओर प्रदूषण बढ़ रहा है, वहीं परिसर के पिछले हिस्से में स्थित पुराना सरकारी आवास भी कबाड़खाने जैसा नजर आ रहा है।

इस परित्यक्त आवास के आसपास झाड़ियां बड़े पैमाने पर फैली हुई हैं, जिन्हें साफ करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा। स्वच्छता के अभाव में यह स्थान उपेक्षित होकर एकांत और भयावह स्थिति में पहुंच गया है, जो अब राम भरोसे नजर आता है। स्थिति यह है कि इस उपेक्षा का कुछ लोग नाजायज फायदा भी उठा रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, इस जर्जर भवन के एक टूटे-फूटे कमरे को कुछ लोगों ने खाने-पीने के अड्डे के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है। यहां चटाई बिछाकर शराबखोरी की महफिलें सजाई जाती हैं। मौके पर हार्ड ड्रिंक की खाली बोतलें, गिलास और अन्य सामान साफ तौर पर देखे जा सकते हैं। यह गतिविधियां न केवल अवैध हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को भी गलत दिशा में ले जा रही हैं।

हैरानी की बात यह है कि यह सब कुछ उस स्थान पर हो रहा है जहां नजदीक ही पुलिस थाना और अन्य प्रशासनिक कार्यालय मौजूद हैं। इसके बावजूद कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की जा रही। स्थानीय लोगों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि इस क्षेत्र की जल्द सफाई करवाई जाए और यहां अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाए, ताकि सुंदरनगर की छवि को बचाया जा सके।

न्यूज ब्रीफ

जनता पर टैक्स का डाका: कृष्ण लाल चंदेल

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। पेट्रोल-डीजल पर 5 रुपए प्रति लीटर सेस लगाने के फैसले पर भाजपा जिला अध्यक्ष कृष्ण लाल चंदेल ने कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि सरकार अपनी नाकामियों का बोझ जनता पर डाल रही है। चंदेल ने आरोप लगाया कि सरकार ने चुनावी वादे पूरे नहीं किए व अब टैक्स बढ़ाकर जनता को परेशान कर रही है। उन्होंने कहा कि ईंधन महंगा होने से हर घर पर महंगाई का असर पड़ेगा व किसान, ट्रांसपोर्ट व पर्यटन से जुड़े लोग प्रभावित होंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि फैसला वापस नहीं लिया गया तो भाजपा उग्र आंदोलन करेगी।

'100 दिवसीय टीबी मुक्त भारत अभियान' का शुभारंभ

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। उपायुक्त बिलासपुर राहुल कुमार ने विश्व क्षयरोग दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय '100 दिवसीय टीबी मुक्त भारत अभियान 2.0' का शुभारंभ किया। उन्होंने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से टीबी जागरूकता रैली व चिन्हित क्षय रोगी वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। डीसी ने कहा कि टीबी उन्मूलन के लिए जनभागीदारी, समय पर जांच व नियमित उपचार बेहद जरूरी हैं। अभियान के तहत उच्च जोखिम समूहों जैसे बुजुर्ग, मधुमेह रोगी, धूम्रपान करने वाले व चिन्हित गांवों के लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी। जिले में 1,79,016 लोगों की स्क्रीनिंग का लक्ष्य रखा गया है। जीएनएम स्कूल की छात्राओं ने रैली के माध्यम से लोगों को टीबी के प्रति जागरूक किया। इस मौके पर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे।

झंडूता में गैस सिलेंडरों की भारी कमी

अनंत ज्ञान, झंडूता। झंडूता क्षेत्र में कमर्शियल व घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडरों की भारी कमी से व्यापारियों व आम लोगों को गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। झंडूता व्यापार मंडल के प्रधान प्रशांत शर्मा ने इस समस्या पर चिंता जताते हुए प्रशासन व राज्य सरकार से तुरंत हस्तक्षेप की मांग की है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में कमर्शियल गैस सिलेंडर उपलब्ध नहीं हो रहे हैं, जिससे ढाबा व रेस्टोरेंट संचालकों का कारोबार प्रभावित हो रहा है। कई व्यापारियों की रोजी-रोटी पर संकट मंडरा रहा है। प्रशांत शर्मा ने प्रशासन से मांग की कि झंडूता के निर्धारित कोटे के सिलेंडर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराए जाएं, ताकि व्यापारियों को समय पर राहत मिल सके। वहीं, घरेलू गैस सिलेंडरों की कमी से ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग परेशान हैं। महिलाओं व परिवारों को समय पर सिलेंडर नहीं मिलने से दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रशासन जल्द इस समस्या का समाधान करेगा, जिससे व्यापारियों व आम जनता को राहत मिल सके।

जम्वाल ने उठाया स्वच्छ पेयजल व महंगाई का मुद्दा

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। सदर के विधायक त्रिलोक जम्वाल ने विधानसभा में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति व पेट्रोल-डीजल कीमतों में बढ़ोतरी का मुद्दा जोरदार तरीके से उठाया। उन्होंने पानी की गुणवत्ता जांच को लेकर सरकार से ठोस कदम उठाने की मांग की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पेयजल योजनाएं गोबिंद सागर व कोलडैम जैसे जल स्रोतों पर आधारित हैं, जहां बरसात में गाद व गंदगी जमा हो जाती है। कई पानी के टैंक खुले हैं व हैंडपंपों की मरम्मत के बाद भी पानी की गुणवत्ता जांच जरूरी है, क्योंकि दूषित पानी से बीमारियों का खतरा बढ़ता है। साथ ही उन्होंने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी का विरोध करते हुए कहा कि इससे महंगाई बढ़ेगी व आम जनता, किसान व ट्रांसपोर्ट से जुड़े लोगों पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। उन्होंने सरकार से इस जनविरोधी फैसले को तुरंत वापस लेने की मांग की।

100 पदों के लिए साक्षात्कार 28 और 30 को

अनंत ज्ञान, ऊना। सिस इंडिया लिमिटेड, आरटीए हमीरपुर द्वारा पुरुष वर्ग में सिक्योरिटी गार्ड व सुपरवाइजर के 100 पद भरे जाएंगे। इन पदों के लिए साक्षात्कार 28 मार्च को सुबह 10.30 बजे उप रोजगार कार्यालय बंगाणा व 30 मार्च को उप रोजगार कार्यालय हरोली में आयोजित किए जाएंगे। जिला रोजगार अधिकारी ऊना अक्षय शर्मा ने बताया कि इन पदों के लिए शैक्षणिक योग्यता 10वीं उत्तीर्ण व अनुत्तीर्ण, ऊंचाई 168 सेंटीमीटर, आयु सीमा 19 से 40 वर्ष और वेतन 17,500 से 23 हजार रुपए प्रतिमाह निर्धारित किया गया है। एक महीने की ट्रेनिंग के उपरांत अभ्यर्थियों की नियुक्ति एटीएम, अस्पतालों, औद्योगिक क्षेत्र, मॉल सहित अन्य संस्थानों में की जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपनी शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र, जन्म तिथि, रोजगार कार्यालय पंजीकरण कार्ड, आधार कार्ड, दो पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ के साथ साक्षात्कार में भाग ले सकते हैं। प्रमाण पत्र मूल रूप से प्रस्तुत करना होगा। अधिक जानकारी के लिए 85580-62252 पर सम्पर्क किया जा सकता है। साक्षात्कार में आने जाने का यात्रा भत्ता देय नही होगा।

35 लोगों ने रक्तदान कर कमाया पुण्य

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। नेशनल इंटीग्रेटेड फोरम ऑफ आर्टिस्ट्स एंड एक्टिविस्ट्स (निफा) की 'शहीदों से शहीदों तक' मुहिम के तहत एम्स बिलासपुर में आयोजित रक्तदान शिविर में 35 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर मानवता का संदेश दिया। प्रदेश समन्वयक नेहा शर्मा की मौजूदगी में आयोजित इस शिविर में युवाओं का खासा उत्साह देखने को मिला। विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। आयोजकों ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा मानव सेवा कार्य है, जो जरूरतमंदों को नया जीवन देता है। निफा टीम ने सभी सहयोगियों का आभार जताते हुए भविष्य में भी ऐसे सेवा कार्य जारी रखने की बात कही।

ऊना में 30 मार्च को लगेगी पेंशन अदालत

अनंत ज्ञान, ऊना। डाकघर ऊना मंडल के अधीक्षक भूपिंदर सिंह ने जानकारी दी कि ऊना मंडल में पेंशन अदालत 30 मार्च को सायं 4 बजे आयोजित की जाएगी। इस दौरान डाक पेंशनभोगियों व डाक फैमिली पेंशन भोगियों की पेंशन संबंधी शिकायतों व समस्याओं को सुनकर उनका समाधान किया जाएगा। भूपिंदर सिंह ने कहा कि यदि किसी की पेंशन संबंधी शिकायत है, तो उसे कार्यालय अधीक्षक डाकघर ऊना को 30 मार्च, दोपहर 1 बजे तक भेजना सुनिश्चित करें।

स्वरोजगार शुरू करने के लिए किया प्रेरित

अनंत ज्ञान, ऊना। पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) ऊना द्वारा आयोजित 10 दिवसीय मशरूम खेती प्रशिक्षण कार्यक्रम मंगलवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संस्थान के निदेशक सुधीर शर्मा ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण से प्राप्त कौशल का उपयोग कर स्वरोजगार शुरू करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षित युवाओं को बैंक द्वारा कम ब्याज दर पर ऋण सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान बीज उत्पादन, यूनिट स्थापना, देखरेख, पैकेजिंग, विपणन और व्यवसाय प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी गई। समापन अवसर पर विशेषज्ञों व सफल उद्यमियों ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। यह प्रशिक्षण 18 से 50 वर्ष आयु वर्ग के बेरोजगार युवाओं को निशुल्क प्रदान किया गया।

वशिष्ट पब्लिक स्कूल में वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित

अनंत ज्ञान, ऊना। वशिष्ट पब्लिक स्कूल ने सत्र 2025-26 के नर्सरी से कक्षा नवमीं तक के वार्षिक परीक्षा परिणाम हर्षोल्लास व गरिमामय वातावरण में घोषित किए। कुल 1509 विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया, जिनमें सभी उत्तीर्ण हुए, जबकि 329 विद्यार्थियों ने 100 फीसदी अंक प्राप्त कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। विद्यालय के निदेशक अनुज वशिष्ट ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रधानाचार्य दीपक कौशल ने विद्यार्थियों को निरंतर परिश्रम, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के अध्यक्ष सतपाल वशिष्ट ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया और भविष्य में भी उत्कृष्ट परिणाम देने का संकल्प जताया।

मिनर्वा ने पलकों पर बैठाई लेफ्टिनेंट महक शर्मा

अनंत ज्ञान, घुमारवीं। मिनर्वा सीनियर सेकेंडरी स्कूल घुमारवीं में पूर्व छात्रा महक शर्मा को संघ लोक सेवा आयोग की सीडीएस (प्रथम) 2025 परीक्षा में देशभर में 24वां स्थान हासिल करने पर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य प्रवेश चंदेल और स्टाफ ने उन्हें स्मृति चिन्ह और टोपी पहनाकर सम्मानित किया। महक शर्मा बिलासपुर जिले की पहली महिला लेफ्टिनेंट बनने जा रही हैं, जबकि उनके भाई शिव मंथन का चयन भी भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद के लिए हुआ है। महक ने अपनी सफलता का श्रेय शिक्षकों और अभिभावकों को दिया और चेन्नई स्थित ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी में प्री-कमीशन प्रशिक्षण शुरू करेंगी। प्रधानाचार्य ने कहा कि महक व सौरभ की सफलता स्कूल व क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है और अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा बनेगी।

बजट जनहित व संतुलित विकास का दस्तावेज : गौतम

अनंत ज्ञान ब्यूरो, ऊना। जिला कांग्रेस अध्यक्ष देसराज गौतम ने ऊना में पत्रकार वार्ता में भाजपा नेताओं पर तीखा पलटवार करते हुए कहा कि उनकी आलोचना निराधार है। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा पेश किए गए बजट को जनहित और संतुलित विकास का दस्तावेज बताया। गौतम ने महिला सशक्तिकरण, किसानों, पशुपालकों, कर्मचारियों और पेंशनरों के लिए बजट में किए गए प्रावधानों को राहतभरा बताया। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत ढांचे के विकास को भविष्य की मजबूती के लिए महत्वपूर्ण कदम करार दिया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा रेवेन्यू डेफिसिट ग्रांट बंद करना प्रदेश के हित के खिलाफ है। उन्होंने सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में प्रदेश में सकारात्मक बदलाव की उम्मीद जताई। वरिष्ठ कांग्रेस नेता भी मौके पर मौजूद रहे।

'जय माता दी' के जयकारों से गूंजा नयना देवी

अनंत ज्ञान

लाइनों में लग कर दर्शन करते श्रद्धालु। अनंत ज्ञान

ब्यूरो, बिलासपुर। छठे नवरात्र के पावन अवसर पर बिलासपुर के सुप्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री नयना देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की अच्छी खासी भीड़ देखने को मिली। हालांकि, अन्य दिनों की तुलना में श्रद्धालुओं की संख्या में कुछ कमी दर्ज की गई।

इसके बावजूद सुबह से लेकर देर शाम तक मंदिर परिसर 'जय माता दी' के जयकारों से गूंजता रहा और वातावरण पूरी तरह भक्तिमय बना रहा। मंदिर में सुबह मंगला आरती के साथ ही दर्शन का सिलसिला शुरू हो गया था। दिनभर श्रद्धालु कतारों में खड़े होकर माता रानी के दर्शन करते रहे। दूर-दराज क्षेत्रों से आए भक्तों ने भी श्रद्धा और आस्था के साथ माता के चरणों में नतमस्तक होकर सुख-समृद्धि की कामना की। नवरात्र के दौरान मंदिर न्यास द्वारा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए व्यापक व सुनियोजित प्रबंध किए गए थे। दर्शन के लिए सुव्यवस्थित कतार व्यवस्था, बैरिकेडिंग, पेयजल, साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाई गईं। भीड़ अपेक्षाकृत कम रहने के कारण श्रद्धालुओं को सुगमता से और कम समय में दर्शन करने का अवसर मिला। मंदिर न्यास के अध्यक्ष व एसडीएम धर्मपाल चौधरी ने मंदिर परिसर का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य कर रहे हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए पुलिस बल और स्वयंसेवकों की पर्याप्त तैनाती की गई थी, जो श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन देने और व्यवस्था बनाए रखने में जुटे रहे। वहीं, प्रसाद वितरण और अन्य व्यवस्थाएं भी सुचारू रूप से संचालित होती रहीं। श्रद्धालुओं ने भी मंदिर न्यास और प्रशासन द्वारा किए गए प्रबंधों की सराहना की। उन्होंने कहा कि अपेक्षाकृत कम भीड़ के कारण उन्हें शांतिपूर्ण और सहज तरीके से माता के दर्शन करने का अवसर मिला। नवरात्रों के चलते मंदिर में भजन-कीर्तन और विशेष पूजा-अर्चना का क्रम लगातार जारी है। आगामी दिनों में श्रद्धालुओं की संख्या में फिर से बढ़ोतरी की संभावना को देखते हुए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है।

सेना की 6 डोगरा रेजिमेंट ने माता चिंतपूर्णी के चरणों में अर्पित किए पीतल के दो भव्य शेर

अनंत ज्ञान

चिंतपूर्णी। विश्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां चिंतपूर्णी के दरबार में आस्था का एक और अनुपम अध्याय जुड़ गया है। चैत्र नवरात्र के छठे दिन भारतीय सेना की 6 डोगरा रेजिमेंट की ओर से मंदिर में पीतल के दो विशाल और आकर्षक शेर भेंट किए गए हैं।

मंगलवार को रेजिमेंट के प्रतिनिधियों ने इन शेरों को मंदिर न्यास के अधिकारियों को सौंपा, जिन्हें अब विधिवत रूप से मंदिर परिसर में स्थापित किया जाएगा। इस विशेष सेवा कार्य का नेतृत्व रेजिमेंट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल रविंद्र सिंह रावत ने किया। उनकी देखरेख में इन मूर्तियों को विशेष रूप से तैयार करवाकर मां के दरबार तक पहुंचाया गया। रेजिमेंट की ओर से आए पूर्व सूबेदार राकेश कुमार ने इस दौरान पूरी प्रक्रिया की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यह कार्य कर्नल रावत के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ है व रेजिमेंट के जवानों के लिए मां के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने का यह एक विशेष अवसर है। ये शेर न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि कला और वजन की दृष्टि से भी भव्य हैं।

राकेश के अनुसार, एक शेर का वजन लगभग 220 से 230 किलोग्राम के बीच है। इन्हें पीतल की उच्च गुणवत्ता वाली धातु से तैयार किया गया है। इनकी चमक और बनावट मंदिर के प्रवेश द्वार की शोभा में चार चांद लगा देगी। इन्हें मंदिर के मुख्य द्वार (मेन गेट) पर स्थापित किया जाएगा, जहां से श्रद्धालु मां के दर्शनों के लिए प्रवेश करते हैं। यह पहली बार नहीं है, जब डोगरा रेजिमेंट ने इस तरह की भेंट दी हो। पूर्व सूबेदार राकेश कुमार ने बताया कि इससे पहले भी रेजिमेंट द्वारा जम्मू के ज्वाला माता मंदिर में दो शेर भेंट किए जा चुके हैं। इसके अलावा, बाबा बालक नाथ जी के मंदिर के लिए भी विशेष प्रतिमाएं (मोर और बाबा जी की मूर्ति) तैयार की गई हैं, जिन्हें जल्द ही वहां अर्पित किया जाएगा। इन शेरों को मंदिर अधिकारी संजीव प्रभाकर के माध्यम से मंदिर न्यास चिंतपूर्णी को विधिवत रूप से सौंपा गया। प्रशासन ने सेना की इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि यह न केवल मंदिर के सौंदर्यीकरण को बढ़ाएगा, बल्कि भारतीय सेना के जवानों की गहरी धार्मिक आस्था को भी प्रदर्शित करेगा।

राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले में कुश्ती प्रतियोगिता के विजेताओं को किया गया पुरस्कृत

दंगल में भूपेंद्र अजनाला बने विजेता

विजेता को पुरस्कृत करते मुख्यातिथि विनय कुमार। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, बिलासपुर। राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले के समापन अवसर पर आयोजित कुश्ती प्रतियोगिताओं में विजेता पहलवानों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व विधायक विनय कुमार ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की।

पुरुष ओपन कुश्ती/दंगल में भूपेंद्र अजनाला ने विजेता का खिताब हासिल किया, जबकि लालू (जम्मू-कश्मीर) उपविजेता रहे। बसंत (अमृतसर) ने तीसरा तथा बिल्लू (होशियारपुर) ने चौथा स्थान प्राप्त किया। महिला ओपन वर्ग में काजल (हरियाणा) विजेता रहीं, जबकि रानी (सोलन) उपविजेता रहीं। राधा ने तीसरा तथा बनिता ने चौथा स्थान हासिल किया। हिम कुमार वर्ग में सुमित (ऊना) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि शुभम (बिलासपुर) उपविजेता रहे। शौर्य (मंडी) ने तीसरा तथा ऋषिका (चांदपुर) ने चौथा स्थान प्राप्त किया। बिलासपुर कुमार वर्ग में शौर्य विजेता रहे, जबकि हसन उपविजेता रहे। गौरव ने तीसरा तथा हुसैन ने चौथा स्थान हासिल किया। मुख्यातिथि द्वारा विजेता व उपविजेता पहलवानों को नकद पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बिलासपुर केसरी में जुखाला का दबदबा

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। जुखाला के गसौड़ गांव के 13 वर्षीय जुड़वां भाई हसन खान व हुसैन खान ने राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले के दंगल में शानदार प्रदर्शन करते हुए बिलासपुर केसरी में क्रमशः उपविजेता और तीसरा स्थान हासिल किया। दोनों खिलाड़ी पहले भी तमिलनाडु में आयोजित अंडर-15 राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में पदक जीत चुके हैं। हसन ने 69 किग्रा वर्ग में और हुसैन ने 57 किग्रा वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। हनुमान अखाड़ा लखनपुर में कोच बलवीर चिल्ला के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण ले रहे इन दोनों भाइयों की सफलता से क्षेत्र में खुशी का माहौल है। कोच का कहना है कि दोनों में जबरदस्त समर्पण है और वे भविष्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच सकते हैं।

बहुरंगी स्मारिका का किया विमोचन

अनंत ज्ञान, बिलासपुर। राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले की चौथी व आखिरी सांस्कृतिक संध्या में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व विधायक विनय कुमार ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की, जबकि नगर व ग्राम नियोजन, आवास, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक व औद्योगिक प्रशिक्षण मंत्री राजेश धर्माणी विशेषातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर मेले की एक बहुरंगी स्मारिका का भी मुख्यातिथि ने विमोचन किया। इसके अतिरिक्त मिस कहलूर प्रतियोगिता के पहले तीन स्थान प्राप्त करने वालों को भी सम्मानित किया। मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष व उपायुक्त बिलासपुर राहुल कुमार ने मुख्यातिथि व विधायक का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक तिलक राज शर्मा, केके कौशल, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विवेक कुमार, जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष अंजना धीमान, एपीएमसी अध्यक्ष सतपाल वर्धन, हिमुडा निदेशक जितेंद्र चंदेल, निदेशक राज्य सहकारी बैंक सुनील शर्मा, पुलिस अधीक्षक संदीप धवल, अतिरिक्त उपायुक्त ओम कांत ठाकुर, एसडीएम डॉ. राजदीप सिंह, सहायक आयुक्त राजकुमार सहित मेला समिति से जुड़े अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जोल क्षेत्र में घरेलू गैस सप्लाई में अव्यवस्था, उपभोक्ताओं में भारी रोष

अनंत ज्ञान

बड़ूही। जिला ऊना के जोल क्षेत्र में घरेलू गैस सप्लाई को लेकर उपभोक्ताओं ने भारी असंतोष जताया है। प्रशासन द्वारा तय किए गए रूट और समय के बावजूद बंगाणा गैस एजेंसी नियमों का पालन नहीं कर रही है, जिससे लोगों को दिनभर सड़क पर इंतजार करना पड़ता है।

उपभोक्ताओं का कहना है कि गैस बुकिंग के लिए दिए गए नंबरों पर संपर्क करने पर कोई जवाब नहीं मिलता और बुकिंग का मैसेज भी नहीं आता। सिलेंडर गाड़ी तय समय पर नहीं पहुंचती, जबकि कर्मचारियों का व्यवहार भी कई बार अनुचित होता है और सिलेंडर फेंकने जैसी घटनाओं से दुर्घटना का खतरा रहता है। इसके अलावा, सिलेंडरों का वजन न जांचे जाने के कारण गैस की मात्रा को लेकर भी संदेह है। पंकज कुमार, कपिल कुमार, चरण दास, सोम नाथ, गोल्डी, कमलेश कुमारी और अन्य उपभोक्ताओं ने जिलाधीश ऊना से मामले में शीघ्र कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने सुझाव दिया कि जोल क्षेत्र की आपूर्ति नजदीकी चौकीमनयार स्थित आर्यन गैस एजेंसी से जोड़ दी जाए, ताकि समय पर और बेहतर सुविधा सुनिश्चित हो सके। इस संबंध में फूड एंड सप्लाई इंस्पेक्टर बंगाणा नरेश कुमार ने बताया कि गैस की कमी पिछली सप्लाई की कमियों के कारण हुई है, जिसे जल्द ही सुधारा जाएगा। उन्होंने कहा कि गैस एजेंसी बंगाणा के कर्मचारियों को उपभोक्ताओं के साथ सहयोगपूर्ण व्यवहार करने के निर्देश दिए गए हैं और भविष्य में अनियमितता दोहराने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उपभोक्ताओं ने प्रशासन से अपेक्षा जताई है कि जल्द से जल्द सुधार कर उन्हें राहत दी जाए और गैस आपूर्ति नियमित एवं सुरक्षित बनाई जाए।

बजट विकास और जनकल्याण का मजबूत रोडमैप: तृप्ता ठाकुर

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, बिलासपुर। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की नेशनल को-ऑर्डिनेटर तृप्ता ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश के बजट को दूरदर्शी, संतुलित व जनकल्याणकारी बताते हुए कहा कि यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास का मजबूत रोडमैप है।

उन्होंने कहा कि सरकार ने इस बजट के माध्यम से महिलाओं, युवाओं, किसानों व कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण पर विशेष फोकस किया है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने, युवाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने व किसानों की आय बढ़ाने के लिए ठोस प्रावधान किए गए हैं, जो प्रदेश की सामाजिक और आर्थिक संरचना को मजबूत करेंगे। शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में किए गए निवेश से आमजन को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। वहीं, आधारभूत ढांचे के विकास से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। यह बजट केवल घोषणाओं तक

सीमित नहीं है, बल्कि इसमें धरातल पर बदलाव लाने की स्पष्ट मंशा झलकती है। प्रदेश सरकार ने सीमित संसाधनों के बावजूद संतुलित बजट पेश कर यह साबित किया है कि जनहित सर्वोपरि है। यह बजट समाज के हर वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़ने की सोच को दर्शाता है और आत्मनिर्भर हिमाचल की दिशा में एक मजबूत कदम है। इस बजट के प्रभावी क्रियान्वयन से प्रदेश के विकास को नई दिशा मिलेगी और आम जनता को इसका सीधा लाभ पहुंचेगा।

हरोली पुलिस ने सुलझाई स्नैचिंग की वारदात

अनंत ज्ञान

टाहलीवाल। पुलिस थाना हरोली के अंतर्गत साहुबाल नामक स्थान पर बस का इंतजार कर रही दो महिलाओं के साथ हुई स्नेचिंग की वारदात को हरौली पुलिस ने अब पूरी तरह सुलझा लिया है । 15 फरवरी 2026 को शिकायत करता सोनिया निवासी बीटन अपनी जेठानी के साथ लगभग 11 बजे, साहूबाल में बस लेने के लिए खड़ी थी।

इसी दौरान दो अज्ञात बाइक सवारों ने महिला के कानों में पहनी बालियों को स्नैच करने के लिए प्रयास किया, लेकिन पहले प्रयास विफल रहने के उपरांत उन्होंने दोबारा प्रयास करके शिकायतकर्ता के हाथ में पकड़े हुए पर्स को ही छीन लिया व मौके से पंजाब की ओर भाग गए। महिलाओं ने आरोपियों को पहचान करने व पकड़ने के लिए एक राहगीर की सहायता भी ली, लेकिन आरोपियों के बारे में कोई भी जानकारी नहीं मिल पाई। इस पर शिकायतकर्ता ने पुलिस थाना हरोली में लिखित में शिकायत दर्ज करवाई। इस

पर पुलिस थाना हरोली में मामला दर्ज हुआ। अभियोग का अन्वेषण सहायक उपनिरीक्षक दीपक कुमार को सौंपी गई। दीपक कुमार ने पुलिस टीम के साथ मौके का निरीक्षण करने के बाद इलाके के सीसीटीवी फुटेज तीन दिन तक लगातार छाने। फुटेज के आधार पर तथा इलाके में तैनात किए गए मुखबिरों और फील्ड पर काम करने के बाद पुलिस ने दो आरोपियों की पहचान की। पुलिस थाना हरोली के प्रभारी सुनील कुमार संख्यान के नेतृत्व में एक पुलिस टीम ने गढ़शंकर के टूटू माजरा गांव में पहले आरोपी की पहचान करके आरोपी को गिरफ्तार किया। आरोपी से चुराया हुआ एक मोबाइल बरामद हो गया तथा बाइक की भी रिकवरी हुई। आरोपी को कल अदालत में पेश करके न्यायिक हिरास्त रिमांड में भेजा गया है। आरोपी की पहचान वरिंदर सिंह पुत्र स्वर्गीय कुलतार सिंह गांव टूटू मजारा तहसील गढ़शंकर जिला होशियारपुर उम्र 26 वर्ष के रूप में हुई है, जो अभी तक जेल में बंद है।

हरोली पुलिस लगातार दूसरे आरोपी को ट्रैक कर रही थी, सर्विलांस और ह्यूमन इंटेलिजेंस के माध्यम से हरौली पुलिस की टीम ने सहायक उपनिरीक्षक दीपक के नेतृत्व में पंजाब के टूटू मजारा में आरोपी के घर सुबह सवेरे दबिश देकर दूसरे आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया है, जिसकी पहचान हरजीत सिंह उर्फ बिल्ला पुत्र अमरजीत सिंह निवासी जैजो दोआबा तह गढ़शंकर जिला होशियारपुर पंजाब के रूप में हुई है, जिससे दूसरे मोबाइल की रिकवरी हो गई है। पुलिस अधीक्षक सचिन हीरामेठ ने बताया कि स्नैचिंग की वारदात को कड़ी मशक्कत के बाद सफलतापूर्वक ट्रेस आउट कर लिया गया है।

घुमारवीं के दकड़ी चौक में खड्डों से बढ़ा खतरा

अनंत ज्ञान, घुमारवीं। घुमारवीं क्षेत्र के दकड़ी (जाहु) चौक में सड़क पर बने गहरे खड्डों के कारण आए दिन हादसे हो रहे हैं। आज सुबह एक व्यक्ति, जो स्कूटी से हमीरपुर परीक्षा देने जा रहा था, दकड़ी चौक पर खड्डे की वजह से दुर्घटनाग्रस्त होकर बुरी तरह घायल हो गया। घायल व्यक्ति ने बताया कि दुर्घटना के बाद उसे मजबूरी में 3000 रुपए खर्च कर गाड़ी किराए पर लेकर अपने काम के लिए आगे जाना पड़ा। स्थानीय लोगों के अनुसार पिछले दो-तीन दिनों में एक दर्जन से अधिक दोपहिया वाहन चालक इन खड्डों के कारण हादसों का शिकार हो चुके हैं। बारिश में पूरा चौक पानी से भर जाता है, जिससे स्थिति समुद्र जैसी हो जाती है व खड्डे दिखाई नहीं देते। दुकानदारों का कहना है कि पानी व मिट्टी दुकानों के अंदर घुस जाती है, जिससे उनका व्यापार प्रभावित हो रहा है व रोजी-रोटी कमाना मुश्किल हो गया है। स्थानीय लोगों व व्यापारियों ने प्रशासन से मांग की है कि दकड़ी चौक के खड्डों को जल्द भरा जाए व जल निकासी की उचित व्यवस्था की जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

लोगों में सोलर एनर्जी की ओर बढ़ने लगा रुझान

अनंत ज्ञान

विकास शर्मा, चिंतपूर्णी। धार्मिक नगरी माता श्री चिंतपूर्णी में इन दिनों क्लीन व ग्रीन एनर्जी को लेकर एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है, जहां व्यावसायिक प्रतिष्ठान पारंपरिक बिजली की निर्भरता छोड़ सौर ऊर्जा (सोलर एनर्जी) की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहे हैं।

बिजली विभाग से प्राप्त आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अब तक क्षेत्र के 10 प्रमुख होटलों और 3 बड़ी धर्मशालाओं में सोलर पावर प्लांट सफलतापूर्वक स्थापित किए जा चुके हैं। बिजली विभाग के कनिष्ठ अभियंता (जेई) मनमोहन सिंह ने पुष्टि की है कि ये सभी 'ऑन-ग्रिड' सोलर सिस्टम हैं, जो न केवल पर्यावरण संरक्षण में मददगार साबित हो रहे हैं, बल्कि संचालकों को आर्थिक रूप से भी बड़ा संबल दे रहे हैं। वर्तमान में एक अन्य बड़े होटल की ओर से सोलर प्लांट लगाने का आवेदन विभाग को प्राप्त हुआ है, जिस पर प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। व्यावसायिक दृष्टि से सोलर प्लांट का सबसे बड़ा लाभ 'नेट मीटरिंग' के रूप में मिलता है। ऑन-ग्रिड सिस्टम होने के कारण दिन के समय जब धूप खिली होती है, ये प्लांट भारी मात्रा में बिजली

पैदा करते हैं। होटल व धर्मशालाएं अपनी जरूरत की बिजली का उपयोग करने के बाद शेष बची हुई बिजली को सीधे विद्युत बोर्ड के ग्रिड में भेज देते हैं। इससे होटल मालिकों को दोहरा फायदा होता है; एक तो उन्हें दिन में विभाग से बिजली नहीं लेनी पड़ती, और दूसरा, ग्रिड को भेजी गई अतिरिक्त बिजली उनके बिल में एडजस्ट हो जाती है, जिससे महीने के अंत में बिजली का बिल नाममात्र या शून्य के बराबर आता है। कमर्शियल यूनिट्स के लिए बिजली की दरें अधिक होने के कारण, यह बचत सालाना लाखों रुपयों में पहुंचती है, जिससे व्यवसाय की लाभप्रदता बढ़ जाती है। तकनीकी व भविष्य की दृष्टि से देखें तो एक बार सोलर प्लांट लगाने के बाद इसका रखरखाव बहुत कम होता है और इसकी कार्यक्षमता लगभग 25 से 30 वर्षों तक रहती है। यानी एक बार का निवेश अगले तीन दशकों तक मुफ्त या सस्ती बिजली की गारंटी देता है। प्राइवेट सेक्टर और होटल मालिकों के लिए यह इसलिए भी फायदेमंद है क्योंकि इससे न केवल कार्बन फुटप्रिंट कम होता है और प्रदूषण में कमी आती है, बल्कि 'ग्रीन होटल' की छवि बनने से पर्यटकों के बीच साख भी बढ़ती है। इसे लगवाने की प्रक्रिया भी अब काफी सरल हो गई है; इच्छुक संस्थान को सबसे पहले अपनी बिजली खपत के आधार पर लोड कैलकुलेट करवाना होता है, जिसके बाद बिजली विभाग में आवेदन के लिए) करना पड़ता है। विभाग की तकनीकी मंजूरी मिलने के बाद अधिकृत वेंडर के माध्यम से पैनल स्थापित किए जाते हैं और अंत में विभाग द्वारा 'नेट मीटर' लगाकर इसे ग्रिड से जोड़ दिया जाता है। इस पहल से चिंतपूर्णी न केवल धार्मिक पर्यटन बल्कि ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में भी एक मॉडल बनकर उभर रहा है।

प्रसाद के साथ माता चिंतपूर्णी के नववर्ष के कैलेंडर भी बांटे

अनंत ज्ञान, चिंतपूर्णी। विश्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां चिंतपूर्णी मंदिर में मंदिर अधिकारी संजीव प्रभाकर के आदेशों के बाद श्रद्धालुओं को माता रानी के नववर्ष के कैलेंडर वितरित किए गए। मंदिर परिसर में दर्शन करने पहुंचे श्रद्धालुओं को यह कैलेंडर मंदिर प्रशासन की ओर से श्रद्धा स्वरूप प्रदान किए गए, जिन्हें पाकर भक्तों में खासा उत्साह देखने को मिला। जानकारी के अनुसार मंदिर प्रशासन के पास नववर्ष के काफी संख्या में कैलेंडर उपलब्ध थे, जिन्हें वर्ष की शुरुआत में ही श्रद्धालुओं में वितरित किया जाना चाहिए था। हालांकि, उस समय यह वितरण नहीं हो पाया था, लेकिन अब नए मंदिर अधिकारी संजीव प्रभाकर की पहल के बाद इन कैलेंडरों को श्रद्धालुओं तक पहुंचाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। मंदिर में दर्शन करने आने वाले भक्तों को कैलेंडर भेंट कर मंदिर प्रशासन ने उन्हें माता रानी के आशीर्वाद का संदेश भी दिया। श्रद्धालुओं ने भी इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि मंदिर प्रशासन द्वारा दी गई यह छोटी सी भेंट उनके लिए यादगार और श्रद्धा का प्रतीक है। मंदिर परिसर में कैलेंडर वितरण के दौरान भक्तों में उत्साह का माहौल देखने को मिला।

डीसी ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। घागस स्थित अपना घर वृद्धाश्रम में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की सात दिवसीय आजीविका कार्यशाला संपन्न हुई। समापन अवसर पर उपायुक्त राहुल कुमार ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत कर वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए चल रही गतिविधियों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

तनवी ने यूजीसी नेट जेआरएफ में पाई सफलता

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। झंडूता क्षेत्र के मलराओं गांव की तनवी पाठक ने पहले ही प्रयास में यूजीसी नेट जेआरएफ परीक्षा पास कर जिले का नाम रोशन किया है। उन्होंने अंग्रेजी विषय में ऑल इंडिया स्तर पर 75वीं रैंक हासिल की। उनकी इस उपलब्धि से क्षेत्र में खुशी का माहौल है।

एसएसआरवीआईएम में हवन-यज्ञ के साथ सत्र का शुभारंभ

अनंत ज्ञान, ऊना। एसएसआरवीआईएम ऊना में शैक्षणिक सत्र 2026-27 का विधिवत हवन-यज्ञ के साथ शुभारंभ किया गया। विद्यार्थियों ने मंत्रोच्चारण में भाग लेकर वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। प्रबंध निदेशक सुमेश कुमार शर्मा और प्रधानाचार्य बृज बाला शर्मा ने छात्रों को अनुशासन, परिश्रम और सकारात्मक सोच के साथ जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में सभी उपस्थित लोगों के सुख, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की गई। यह आयोजन नए सत्र की शुभ और प्रेरणादायक शुरुआत साबित हुआ।

'फूल-मालाओं की फिजूलखर्ची' पर सवाल

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर। एक ओर हिमाचल प्रदेश आर्थिक संकट से जूझ रहा है। वहीं, दूसरी ओर नेताओं के स्वागत-सत्कार में हो रही फिजूलखर्ची पर अब सवाल उठने लगे हैं। विश्व मानव कल्याण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. तेज प्रताप पांडेय ने इस मुद्दे पर कड़ा प्रहार करते हुए इसे 'जनता के पैसे की खुली बर्बादी' करार दिया है। डॉ. पांडेय ने कहा कि प्रदेश की आर्थिक हालत किसी से छिपी नहीं है। सरकार कर्ज के बोझ तले दबी है, विकास कार्यों के लिए धन की कमी है, लेकिन इसके बावजूद नेताओं के स्वागत में फूल-मालाएं, पुष्प गुच्छ, शॉल व टोपी भेंट करने की परंपरा पर कोई रोक नहीं लगाई जा रही। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या यह दिखावटी संस्कृति प्रदेश की प्राथमिकता होनी चाहिए? उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि राज्य स्तरीय नलवाड़ी मेले में हर रोज अलग-अलग मुख्य अतिथियों के स्वागत में हजारों रुपए खर्च किए गए।

मनाली में अवैध स्पा सेंटर्स के खिलाफ सदन में उठाई आवाज

अनंत ज्ञान

मनाली। विधानसभा के बजट सत्र के दौरान मनाली के विधायक भुवनेश्वर गौड ने कुल्लू जिला और विशेषकर मनाली विधानसभा क्षेत्र में कुकुरमुत्ते की तरह खुल रहे अवैध स्पा सेंटर्स का गंभीर मुद्दा सदन के पटल पर रखा।

उन्होंने कहा कि सरकारी आंकड़ों में कुल्लू जिले में मात्र 17 स्पा बताए गए हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि अकेले मनाली शहर की हर गली-नुक्कड़ में करीब 170 से ज्यादा स्पा सेंटर चल रहे हैं, जब इन केंद्रों की पड़ताल की जाती है, तो पाया जाता है कि इनके पास कोई वैध रजिस्ट्रेशन तक नहीं है व इन बंद कमरों में हो रही अवैध गतिविधियां हमारी देवभूमि की संस्कृति और समाज पर अत्यंत बुरा प्रभाव डाल रही हैं। सदन के माध्यम से सरकार और विभाग से यह स्पष्ट करने की मांग की है कि इन स्पा सेंटर्स को रेगुलेट करने के लिए आखिर कौन सा विभाग जिम्मेदारी लेगा। वर्तमान में ये केवल लेबर डिपार्टमेंट के शॉप्स एंड कमर्शियल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट के तहत पंजीकृत हो रहे हैं, जबकि इनके संचालन की निगरानी स्वास्थ्य विभाग या आयुर्वेद विभाग द्वारा की जानी चाहिए।

विधायक ने मंत्री से यह भी जानना चाहा कि इन सेंटर्स के लिए सख्त एसओपी कब तक तैयार की जाएगी, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि स्वास्थ्य लाभ के नाम पर वहां असल में क्या सुविधाएं दी जा रही हैं और किस तरह का उपचार किया जा रहा है। गौड ने कहा कि देव भूमि में पर्यटन व व्यापार की आड़ में अवैध गतिविधियों को फलने-फूलने नहीं दिया जाएगा। विधायक ने सरकार से मांग की है कि इन केंद्रों पर कड़ी निगरानी रखी जाए व जो भी केंद्र नियमों के खिलाफ पाए जाएं, उनके खिलाफ जल्द से जल्द सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाए। जनहित और युवाओं के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए मेरी यह जवाबदेही सदन से सड़क तक जारी रहेगी।

जय सियाराम के जयकारों से गूंज उठी रघुनाथ जी की नगरी

रामनवमी के उपलक्ष्य पर वाद्ययंत्रों की थाप पर निकाली शोभायात्रा

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, कुल्लू। जिला मुख्यालय कुल्लू में मंगलवार को चैत्र नवरात्र व रामनवमी के उपलक्ष्य पर सत्संग सभा अखाड़ा बाजार की ओर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में वाद्ययंत्रों की थाप पर लोग नाचते-झूमते और श्रीराम का गुणगान करते हुए रामशिला स्थित हनुमान मंदिर से लेकर ढालपुर चौक तक पहुंचे।

इस दौरान भगवान रघुनाथ जी की नगरी देवभूमि कुल्लू जय सियाराम के जयकारों से गूंज उठी। वहीं, शोभायात्रा में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण व हनुमान की झांकी सभी के लिए आकर्षण का केंद्र रही। इस मौके पर सैकड़ों लोगों जिनमें विभिन्न महिला मंडलों के अलावा अन्य विभिन्न सामाजिक संगठनों के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभा के

कुल्लू में शोभायात्रा के दौरान निकाली गई झांकी। अनंत ज्ञान

अध्यक्ष राकेश कोहली व समाजसेवी राम सिंह ने बताया कि यह शोभायात्रा रामशिला से अखाड़ा बाजार, सरवरी बाजार होते ढालपुर प्रदर्शनी मैदान तक आयोजित हुई। उन्होंने बताया कि हर साल रामनवमी के उपलक्ष्य पर कुल्लू में शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक समरसता है। वहीं, भगवान रघुनाथ जी के मुख्य कारदार दानवेंद्र सिंह ने सभी को हिंदू नववर्ष, चैत्र नवरात्र और रामनवमी की बधाई देते हुए कहा कि राम के बिना हम कुछ नहीं हैं, 27 मार्च को रामनवमी है उस उपलक्ष्य पर यह शोभायात्रा निकाली गई। उन्होंने बताया कि इस शोभायात्रा में जिलेभर के लोगों ने संगठित होकर बढ़-चढ़कर भाग लिया, जो हमारे लिए खुशी का विषय है। लिहाजा, कुल्लू में इस बार बड़े स्तर पर रामनवमी से दो दिन पूर्व यह भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसके माध्यम से एकजुटता व आपसी समरसता का संदेश दिया गया।

राजस्थान के जवान पर एसएसबी शमशी में गिरा पेड़, मौत

अनंत ज्ञान, भुंतर। जिला कुल्लू के शमशी में एसएसबी प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षण लेने आए एक कांस्टेबल के ऊपर पेड़ गिर गया। इसके चलते युवक की मौत हो गई। वहीं, पुलिस ने मृतक के शव को अपने कब्जे में ले लिया है और अब इस मामले में आगामी कार्रवाई की जा रही है। पुलिस के द्वारा मृतक युवक के परिजनों को सूचित किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार एसएसबी शमशी में राजस्थान पुलिस के जवान के ऊपर बीती शाम के समय पेड़ गिरने से उसकी मौत हो गई है। मृतक राम सैनी उम्र 25 पुत्र मदन निवासी जयपुर, राजस्थान पुलिस राजस्थान में कॉन्स्टेबल था। वह यहां पर ट्रेनिंग के लिए आया था। सूचना मिलते ही पुलिस टीम भी ढालपुर अस्पताल पहुंची व उन्होंने मृतक के शव को अपने कब्जे में लिया, अब मृतक युवक के शव का पोस्टमार्टम ढालपुर अस्पताल में किया जा रहा है। एसपी कुल्लू मदनलाल कौशल ने बताया कि पुलिस की टीम ने मामला दर्ज कर लिया है। मृतक युवक के शव का पोस्टमार्टम किया जा रहा है।

तीन महीने में 323 टीबी मरीजों की पहचान 100 दिन का विशेष अभियान शुरू: डॉ. रंजीत

विश्व टीबी दिवस के अवसर पर प्रशिक्षु नर्सिंग छात्राओं के साथ सीएमओ व अन्य गणमान्य लोग। अनंत ज्ञान

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, कुल्लू। जिला कुल्लू में स्वास्थ्य विभाग ने पिछले तीन महीनों के दौरान टीबी के 323 मरीजों की पहचान की है।

यह जानकारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रंजीत ठाकुर ने मीडिया से बातचीत में दी। उन्होंने बताया कि अब टीबी उन्मूलन के लिए 100 दिनों का विशेष अभियान भी शुरू कर दिया गया है। डॉ. ठाकुर के अनुसार, वर्ष 2024 में जिले में 1554 टीबी मरीजों को नोटिफाई किया गया था, जबकि 2025 में यह संख्या घटकर 1430 रह गई। वहीं, 1 जनवरी 2026 से अब तक 323 नए मरीज सामने आ चुके हैं। उन्होंने बताया कि विभाग ने 72,511 संवेदनशील लोगों की स्क्रीनिंग का लक्ष्य निर्धारित किया था, जिसे शत-प्रतिशत पूरा कर लिया गया है, अब मंगलवार से नए चरण का 100 दिवसीय अभियान शुरू किया गया है। पंचायत स्तर पर चल रहे टीबी मुक्त अभियान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 2019 में 19 पंचायतें टीबी मुक्त घोषित हुई थीं। यह संख्या 2024 में बढ़कर 22 और 2025 में 35 तक पहुंच गई है। विश्व टीबी दिवस के मौके पर कुल्लू शहर में जागरूकता रैली भी निकाली गई, जिसके माध्यम से लोगों को टीबी के लक्षण, जांच और उपचार के प्रति जागरूक किया गया।

डॉ. रंजीत ठाकुर ने बताया कि विभाग का लक्ष्य टीबी से होने वाली मृत्यु दर में 90 प्रतिशत तक कमी लाना और मरीजों पर होने वाले निजी खर्च को शून्य तक लाना है।

न्यूज ब्रीफ

तहसीलदार कुल्लू व भुंतर को विशेष जिम्मेदारी

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू। निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (नगर पालिका)-एवं-उपमंडलाधिकारी (नागरिक), कुल्लू डॉ. जयबंती ठाकुर ने आदेश जारी कर कुल्लू और भुंतर नगर निकायों के लिए 'संशोधन प्राधिकारी' नियुक्त किए हैं। हिमाचल प्रदेश नगरपालिका निर्वाचन नियम, 2015 के के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तहसीलदार कुल्लू को नगर परिषद कुल्लू के वार्डों की मतदाता सूची के संबंध में दावे व आपत्तियां सुनने के लिए संशोधन प्राधिकारी नियुक्त किया गया है। तहसीलदार भुंतर को नगर पंचायत भुंतर के वार्डों की मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण के लिए संशोधन प्राधिकारी नियुक्त किया गया है। ये प्राधिकारी राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण के दौरान प्राप्त होने वाले दावों और आपत्तियों की सुनवाई करेंगे।

27 मार्च को होगा 'ड्रॉ ऑफ लॉट्स'

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू। हिमाचल प्रदेश नगर पालिका निर्वाचन नियम, 2015 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी (नगर पालिका) एवं उपायुक्त कुल्लू, अनुराग चंद्र शर्मा ने आगामी स्थानीय निकाय चुनावों के लिए सीटों के आरक्षण व रोटेशन की प्रक्रिया को लेकर अधिसूचना जारी की है। नगर परिषद कुल्लू, मनाली तथा नगर पंचायत भुंतर, बंजार और निरमंड के सदस्यों की सीटों के आरक्षण व रोटेशन का निर्धारण 'ड्रॉ ऑफ लॉट्स' (लॉटरी) के माध्यम से 27 मार्च दोपहर दो बजे कॉन्फ्रेंस रूम, बहुउद्देशीय भवन कुल्लू में गणमान्य नागरिकों और इस कार्य के लिए नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की उपस्थिति में किया जाएगा।

आनी में 28 मार्च को आयुष मेले का आयोजन

अनंत ज्ञान, आनी। उपमंडल मुख्यालय आनी में ग्राम पंचायत बखनाओं के राजा रघुवीर सिंह स्टेडियम मैदान में 28 मार्च को सुबह 11 बजे आयुष ग्राम कार्यक्रम के अंतर्गत आयुष मेले का भव्य आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में उपमंडलाधिकारी नागरिक आनी, लक्ष्मण सिंह कनेट मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे व मेले का विधिवत शुभारंभ करेंगे। इसकी जानकारी देते हुए कार्यकारी आयुष उपमंडल चिकित्सा अधिकारी आनी, डॉ. हरीश शर्मा ने बताया कि मेले में आम जनता के लिए कई स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं व जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मेले के दौरान निशुल्क चिकित्सा जांच शिविर, योग शिविर तथा औषधीय पौधों की प्रदर्शनी और वितरण किया जाएगा। साथ ही आयुर्वेदिक जीवन शैली के माध्यम से रोगों की रोकथाम के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। विशेषज्ञों द्वारा योग, प्राकृतिक चिकित्सा, ऋतु अनुसार खान-पान, दिनचर्या तथा पंचकर्म जैसे विषयों पर भी लोगों को जागरूक किया जाएगा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आयुष विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों से जनता को अवगत करवाना व लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है। इस दौरान शुगर, बीपी एवं हीमोग्लोबिन की जांच निशुल्क की जाएगी और जरूरतमंद मरीजों को दवाइयां भी मुफ्त उपलब्ध करवाई जाएंगी।

वरिष्ठ नागरिकों का आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण

अनंत ज्ञान, मनाली। 23 से 29 मार्च तक जिला कुल्लू के ओल्ड एज होम क्लाथ में सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'प्रोडक्टिव एजिंग' कार्यक्रम के अंतर्गत 7 दिवसीय आजीविका उन्मुख कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसका विधिवत शुभारंभ वरिष्ठ नागरिक सुभाष मेहंदीरता, सहायक अभियंता (सेवानिवृत्त) ने किया। कार्यशाला का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों को आजीविका गतिविधियों से जोड़कर आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है। प्रतिभागियों को मोमबत्ती निर्माण, पैकिंग, कपड़ों की रंगाई (डाइंग) और अन्य लघु कौशल गतिविधियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही मार्केटिंग और आय सृजन के टिप्स भी प्रदान किए जा रहे हैं। जिला कल्याण अधिकारी गिरधारी लाल शर्मा ने कहा कि विभाग वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए सतत कार्य कर रहा है और भविष्य में भी इस प्रकार की कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। कार्यक्रम एसआरएलएम और आरसेटी, हिमाचल प्रदेश के समन्वय से संचालित हो रहा है और वरिष्ठ नागरिकों ने इस पहल के प्रति उत्साह व्यक्त किया।

गुशैणी स्कूल भवन पर संकट, एक माह में समाधान नहीं, तो आंदोलन की चेतावनी

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, कुल्लू। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गुशैणी में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों ने स्कूल भवन की समस्या को लेकर कड़ा रुख अपनाया है। अभिभावकों ने एसडीएम कुल्लू अश्विनी कुमार से मुलाकात कर सरकार व शिक्षा विभाग को एक महीने का अल्टीमेटम दिया है।

उन्होंने स्पष्ट कहा है कि यदि तय समय के भीतर भवन की समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो घाटी की जनता आंदोलन करेगी। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि स्कूल भवन अक्तूबर 2025 में भारी बारिश के कारण पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। इसके बाद से करीब 472 बच्चे अढ़ाई किलोमीटर दूर एक निजी भवन में पढ़ाई कर रहे हैं। अभिभावकों ने बताया कि निजी भवन के मालिक के साथ केवल 31 मार्च 2026 तक का ही समझौता है। इसके बाद भवन खाली करना होगा, क्योंकि क्षेत्र में पर्यटन सीजन शुरू होने जा रहा है। 1 अप्रैल से बच्चों के सामने पढ़ाई का गंभीर संकट खड़ा हो जाएगा। इस स्थिति को लेकर अभिभावकों में भारी चिंता है। उन्होंने प्रशासन से सरकार और संबंधित विभाग को जल्द स्थायी समाधान निकालने की मांग की है, ताकि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो।

गुशैणी स्कूल के विद्यार्थियों के अभिभावकों का प्रतिनिधिमंडल एडीएम कुल्लू से समस्या बारे चर्चा करते हुए। अनंत ज्ञान

अरछंडी की बदहाल सड़कों को लेकर ग्रामीणों में रोष

अनंत ज्ञान

मोहन कपूर, पतलीकूहल। कुल्लू-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग से सटे अरछंडी क्षेत्र की सड़कों व नालों की खस्ताहाल स्थिति को लेकर स्थानीय जनता का गुस्सा सातवें आसमान पर है। स्थानीय लोगों का कहना है सड़क कई जगह जहां पूरी तरह से नाले में तब्दील हो चुकी है, जबकि जगह-जगह सड़क में गड्ढे पड़े हैं। इससे वाहनों को भारी नुकसान हो रहा है। समाजसेवी व पूर्व छात्र संगठन के अध्यक्ष मनोहर लाल ठाकुर ने समस्त ग्राम पंचायत अरछंडी के ग्रामीणों के साथ मिलकर सरकार व लोक निर्माण विभाग के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। ग्रामीणों का कहना है कि प्रशासन की अनदेखी के कारण क्षेत्र की जीवनरेखा मानी जाने वाली सड़कें अब हादसों को न्यौता दे रही हैं।

अरछंडी क्षेत्र सड़क की खस्ताहालत। अनंत ज्ञान

2023 की त्रासदी के बाद भी नहीं सुधरे हालात

ग्रामीणों ने बताया कि वर्ष 2023 में हुई भारी वर्षा के दौरान अरछंडी नाले पर बनी पुलिया पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी। विडंबना यह है कि आज तक इस पुलिया की सुध नहीं ली गई है। वर्ष 2025 में दोबारा नाला आने के कारण स्थिति और भी दयनीय हो गई है। राऊणी नाला से हिरनी नाला तक का पूरा क्षेत्र गड्ढों में तब्दील हो चुका है व बीच सड़क पर बड़े-बड़े खड्डे पड़ गए हैं। संगठन के अध्यक्ष मनोहर लाल ठाकुर ने कहा कि पर्यटन व फलों का सीजन आने वाला है, लेकिन सड़कों की स्थिति 'जस की तस' बनी हुई है। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि समय रहते सरकार व विभाग ने ध्यान नहीं दिया व जनता को सताना बंद नहीं किया, तो पूरा संगठन व आम जनमानस सड़कों पर उतरकर उग्र प्रदर्शन करने के लिए मजबूर होगा।

काइस आंगनबाड़ी पालना और क्रैच केंद्र में भरे जाएंगे रिक्त पद

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू। बाल विकास **परियोजना** अधिकारी, कटराईं खुशविंदर ठाकुर ने कहा कि मिशन शक्ति 'पालना' स्कीम के अंतर्गत ग्राम पंचायत काइस के आंगनबाड़ी पालना एवं कैच केंद्र में कैच वर्कर और कैच हैल्पर के रिक्त पदों को भरने के लिए अधिसूचना जारी की गई है। इन पदों के लिए केवल संबंधित कैच केंद्र के संग्रहण क्षेत्र की इच्छुक पात्र महिला उम्मीदवार ही आवेदन कर सकती हैं। आवेदन पत्र सादे कागज पर सभी वांछित दस्तावेजों की प्रतियों सहित 6 अप्रैल सायंकाल 5 बजे तक बाल विकास परियोजना अधिकारी कार्यालय, कटराईं में जमा किए जा सकते हैं। इन पदों के लिए साक्षात्कार 9 अप्रैल को प्रातः 11 बजे एसडीएम कुल्लू के कार्यालय में आयोजित किए जाएंगे। पात्रता के लिए प्रार्थी की आयु 18 से 35 वर्ष के बीच होनी चाहिए और परिवार की वार्षिक आय 50,000 रुपए से अधिक नहीं होनी चाहिए। शैक्षणिक योग्यता के तहत कैच वर्कर के लिए 12वीं (10+2) व कैच हैल्पर के लिए 10वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। चयन प्रक्रिया 25 अंकों की मेरिट के आधार पर होगी। इसमें शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, अनाथ/विधवा/तलाकशुदा स्थिति व साक्षात्कार के अंक शामिल हैं। प्रार्थी का नाम संबंधित आंगनबाड़ी केंद्र के सर्वेक्षण रजिस्टर व परिवार नकल में दर्ज होना अनिवार्य है।

मनाली में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या में हो रही भारी बढ़ोतरी: बीना

अनंत ज्ञान

एम बोकटापा, मनाली। पर्यटन नगरी मनाली के माल रोड पर भीख मांगने वाले बच्चों की बढ़ती संख्या को लेकर जिला बाल संरक्षण ने सख्त रुख अपनाया है। मंगलवार को जिला बाल संरक्षण अधिकारी बीना शर्मा के नेतृत्व में मनाली के विभिन्न ढाबों व होटलों का औचक निरीक्षण किया गया।

इसके साथ माल रोड पर भीख मांगने वाले बच्चों को तुरंत मनाली शहर को छोड़ने को कहा गया। मनाली में पत्रकारों से बातचीत करते हुए जिला बाल संरक्षण अधिकारी बीना शर्मा ने बताया कि पर्यटन सीजन शुरू होते ही मनाली में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या में भी भारी बढ़ोतरी होती है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि इन बच्चों को भीख न दें। उन्होंने कहा की लोग इन बच्चों को कभी आटा, चावल या कोल्ड ड्रिंक की बोतल दे देते हैं, लेकिन ये उस समान को दुकानों में ही बेच देते हैं व पैसा ले लेते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा काम करने के लिए उन के परिवार वाले भी शामिल होते हैं। उन्होंने कहा कि निरीक्षण के दौरान कुछ ढाबों व होटलों में बाल मजदूरी कर रहे बच्चों को भी देखा गया। उन बच्चों को चेतावनी देकर तुरंत घर वापस जाने को कहा गया है। मनाली व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजीव ठाकुर ने कहा कि भीख मांगने वाले लोगों को शाम को भूतनाथ में नशा करते हुए भी देखा गया है। उन्होंने मनाली के सभी दुकानदारों से आग्रह किया कि न ही इन्हे भीख दें व न ही इन से कोई सामान खरीदें। उन्होंने कहा कि मनाली में बाल मजदूरी रोकने पर भी व्यापार मंडल बाल संरक्षण विभाग के साथ है।

कुल्लू जिला बाल संरक्षण अधिकारी बीना शर्मा व अन्य गणमान्य लोग। अनंत ज्ञान

भीख मांगते पकड़ा बच्चा, मां के हवाले किया

टीम ने निरीक्षण के दौरान एक बच्चे को माल रोड में भीख मांगते हुए पकड़ा। हालांकि, बाद में बच्चे की मां के आग्रह पर मां को कड़ी हिदायत देने के बाद बच्चे को उनके हवाले कर दिया।

बच्चों की भीख मांगने की जानकारी मिली थी

चाइल्ड लाइन हेल्फ ग्रुप कुल्लू के प्रतिनिधि सुरेंद्र प्रकाश ने कहा कि उनकी टीम समय-समय पर छापेमारी कर रही है और बाल श्रम के खिलाफ काम कर रही है। उन्होंने बताया कि व्यापार मंडल मनाली की ओर से उन्हें छोटे बच्चों द्वारा भीख मांगने की जानकारी मिली थी। इस पर आज कार्रवाई की गई। उन्होंने दुकानदारों से आग्रह किया कि वो बाल मजदूरों से पर्यटकों द्वारा भीख में मागे सामान को वापस ने लें।

मजदूरों व नाबालिग बच्चों के कल्याण का जायजा लिया

अनंत ज्ञान ब्यूरो, केलांग। डीसी लाहौल-स्पीति किरण भड़ाना ने मंगलवार को करगा के समीप बीआरओ के श्रमिक शिविर का दौरा कर वहां कार्यरत मजदूरों व उनके नाबालिग बच्चों के कल्याण का जायजा लिया।

डीसी ने जिला बाल संरक्षण अधिकारी तथा उनकी टीम को निर्देश दिए कि श्रमिकों के बच्चों के लिए उचित शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने बीआरओ अधिकारियों को भी निर्देशित किया कि इन बच्चों को नजदीकी स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्र तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाए तथा उनका विधिवत नामांकन सुनिश्चित किया जाए। इसके अतिरिक्त, बच्चों की पहचान व आवश्यक दस्तावेजों से संबंधित दिशा-निर्देश भी जारी किए गए, ताकि उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके। इस दौरान जिला बाल संरक्षण अधिकारी डॉ. हीरा नंद, बाल कल्याण समिति के सदस्य हीरा लाल एवं जोगिंदर भी उपस्थित रहे।

पेट्रोल, डीजल पर विधवा व अनाथ सेस लगाकर जनता से उगाही करेगी सरकार: अमित सूद

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, कुल्लू। पेट्रोल व डीजल पर विधवा व अनाथ सैस लगाने के प्रदेश सरकार के फैसले पर कड़ा संज्ञान लेते हुए भारतीय जनता पार्टी जिला कुल्लू अध्यक्ष अमित सूद ने बड़ा हमला किया है।

उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान कांग्रेस सरकार का एक मात्र लक्ष्य केवल आम जनता की जेब से केवल धन उगाही तक रह गया है। उन्होंने कहा कि पूर्व भाजपा सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों पर लगने वाले करों में बहुत बड़ी कटौती कर प्रदेश की जनता को मंहगाई से बहुत बड़ी राहत दी थी, लेकिन सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री सुक्खू एक नहीं अनेक बार इनमें वृद्धि कर चुके हैं। पहले बिजली बिलों में मिल्क सैस व अब पेट्रोल डीजल पर नया सैस दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि पेट्रोल व डीजल में बढ़ोतरी से आम जरूरत की चीजों के दामों में बड़ा उछाल आएगा, जिससे मंहगाई में कई गुना वृद्धि के कारण रोजमर्रा की चीजें महंगी होंगी, जिसका सीधा असर हर परिवार के बजट पर पड़ेगा। उन्होंने आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि मात्र इस सैस को लगाने से ही प्रदेश सरकार करोड़ों रुपए की चपत प्रदेश की जनता को लगा रही है। प्रतिवर्ष प्रदेश में लगभग 120 से 150 करोड़ लीटर पेट्रोल व डीजल की खपत होती है व 5 रुपए सैस लगाने से कांग्रेस सरकार प्रतिवर्ष लगभग 600 से 700 करोड़ का बोझ जनता पर डाल रही है।

उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में विकास कार्य ठप पड़े हैं व सरकार लगातार एक के बाद एक जनविरोधी निर्णय ले रही है। उन्होंने प्रदेश सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि लगता है कि मुख्यमंत्री की सलाहकारों की फौज केवल मुख्यमंत्री को आम जनता के ऊपर एक के बाद एक कर लगाने की ही सलाह देती है, ताकि जनता की जेबों को काट कर वे अपनी जेबें भर सकें। उन्होंने कहा कि वर्तमान कांग्रेस सरकार हर मोर्चे के साथ साथ आर्थिक मोर्चे पर भी पूरी तरह विफल हो चुकी है जिसका खामियाजा प्रदेश की जनता को भुगतना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि अगर प्रदेश सरकार अपने इस निर्णय को वापिस नहीं लेती है, तो भाजपा आम जनता के साथ मिलकर आंदोलनात्मक रास्ता अपनाने को विवश होगी।

तीर्थन में आज से होगा शेर-ए-सराज मेमोरियल कप सीजन-3 का आगाज

अनंत ज्ञान

तीर्थन। जिला कुल्लू की तीर्थन घाटी में स्वर्गीय दिले राम शबाब की स्मृति में आयोजित होने वाली क्रिकेट प्रतियोगिता का तीसरा सत्र 25 मार्च से नागनी खेल मैदान में शुरू होगा।

प्रतियोगिता को लेकर सभी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई हैं। इसका आयोजन शेर ए सिराज युवक मंडल दाड़ी नागनी और तीर्थन संरक्षण व पर्यटन विकास संघ के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट जगत आईसीसी के वरिष्ठ अधिकारी अनुराग दहिया करेंगे, जो इन दिनों तीर्थन घाटी के निजी दौरे पर हैं। वे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद में मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं व क्रिकेट के वैश्विक प्रचार-प्रसार तथा बड़े टूर्नामेंटों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके मुख्यातिथि के रूप में आगमन से इस आयोजन को विशेष पहचान मिलने की उम्मीद है। उनके साथ पर्यटन संघ के अध्यक्ष एवं स्वर्गीय दिले राम शबाब के पोते वरुण भारती विशेषातिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। स्वर्गीय दिले राम शबाब बंजार क्षेत्र के पूर्व विधायक, प्रकृति प्रेमी, लेखक व समाजसेवी थे। वे 1967 से 1977 तक लगातार दो बार विधायक रहे व 'शेर-ए-सराज' के नाम से प्रसिद्ध थे।

तीर्थन घाटी को हाइडल परियोजनाओं से बचाने और पर्यटन को बढ़ावा देने में उनका अहम योगदान रहा है। वर्ष 2018 में उनके निधन के बाद स्थानीय युवाओं ने उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए इस प्रतियोगिता की शुरुआत की।प्रतियोगिता के मुख्य संचालक गोविंद सिंह ठाकुर ने बताया कि इस बार कुल 64 टीमें भाग ले रही हैं। खेल मैदान को समतल कर विस्तारित किया गया है ताकि खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रवेश शुल्क 5500 रुपये निर्धारित किया गया है। विजेता टीम को 1,11,111 रुपए नकद व ट्रॉफी, जबकि उपविजेता टीम को 55,555 रुपए नकद व कप प्रदान किया जाएगा। इसके अलावा खिलाड़ियों को मैन ऑफ द मैच, बेस्ट खिलाड़ी सहित कई आकर्षक पुरस्कार भी दिए जाएंगे।

कार्यक्रम: भाजपा मनाली मंडल का प्रशिक्षण वर्ग हुआ आयोजित

संगठन मजबूत करने पर दिया जोर

अनंत ज्ञान

मोहन कपूर, पतलीकूहल। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मनाली मंडल द्वारा मंगलवार को होटल शुभम में एकदिवसीय प्रशिक्षण वर्ग का सफल आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम संगठन की मजबूती व कार्यकर्ताओं के सशक्तिकरण की दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। भाजपा कार्यकर्ताओं ने इस अवसर पर विभिन्न सत्रों में भाग लेकर अपनी जिम्मेदारियों को और बेहतर ढंग से समझा। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा की वरिष्ठ नेत्री धनेश्वरी ठाकुर व कानून विधिक प्रकोष्ठ के जिला संयोजक खीमी राम ठाकुर उपस्थित रहे। धनेश्वरी ठाकुर ने संबोधन में कहा कि पार्टी का आधार मजबूत करना ही आने वाले चुनावों में सफलता की कुंजी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक ढांचे को सुदृढ़ करने तथा जन-जन तक पार्टी की नीतियां पहुंचाने का आह्वान किया। वहीं, खीमी राम ठाकुर ने कानूनी व विधिक प्रकोष्ठ के

भाजपा मनाली मंडल के प्रशिक्षण वर्ग का शुभारंभ करती हुई वरिष्ठ भाजपा नेत्री धनेश्वरी ठाकुर। अनंत ज्ञान

महत्व पर प्रकाश डालते हुए विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने सभी बीएलए (बूथ लेवल एजेंट) साथियों को उनके दायित्वों के प्रति जागरूक किया। खीमी राम ने बताया कि बीएलए ही पार्टी की सबसे छोटी इकाई हैं, जो बूथ स्तर पर मतदाताओं से सीधा संपर्क बनाए रखते हैं। उन्होंने कानूनी जागरूकता, चुनावी नियमों का पालन तथा विवाद निपटान की प्रक्रियाओं पर विशेष बल दिया। प्रशिक्षण वर्ग में बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं, मंडल पदाधिकारियों व युवा मोर्चा के सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी की। विभिन्न सत्रों में संगठन विस्तार, डिजिटल अभियान, मतदाता जागरूकता तथा पार्टी की उपलब्धियों पर चर्चा हुई। मनाली मंडल अध्यक्ष जोगिंदर मेहरा ने बताया कि इस तरह के प्रशिक्षण से कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस दौरान हिमाचल भाजपा प्रवक्ता अखिलेश कपूर, भाजपा मनाली मंडल महामंत्री देवेंद्र ठाकुर और कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बंजार की अनदेखी नहीं, यह सुनियोजित उपेक्षा, सरकार जवाब दे: सुरेंद्र शौरी

अनंत ज्ञान

बंजार। बंजार विधानसभा क्षेत्र के विधायक ने प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे 'असंतुलित, भेदभावपूर्ण व वास्तविकताओं से दूर' करार दिया है।

उन्होंने कहा कि बजट वक्तव्य भले ही 100 से अधिक पृष्ठों में विस्तृत आंकड़ों के साथ प्रस्तुत किया गया हो, लेकिन इसमें बंजार क्षेत्र का कोई उल्लेख तक नहीं है। न तो कोई नई योजना घोषित की गई व न ही कोई विशेष प्रावधान रखा गया, जिससे स्पष्ट होता है कि सरकार ने क्षेत्र को पूरी तरह नजरअंदाज किया है। विधायक ने आरोप लगाया कि यह बजट पूरे हिमाचल प्रदेश के बजाय कुछ चुनिंदा विधानसभा क्षेत्रों तक सीमित रह गया है, जहां करोड़ों की परियोजनाओं की घोषणाएं की गई है। इसके विपरीत, भौगोलिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण बंजार क्षेत्र को पूरी तरह उपेक्षित किया गया है। हाल ही में आई प्राकृतिक आपदा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि बंजार सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में रहा, जहां भारी जान-माल की हानि हुई, सैकड़ों परिवार विस्थापित हुए व कई गांवों का अस्तित्व तक समाप्त हो गया। इसके बावजूद बजट में न पुनर्वास की ठोस नीति दिखाई देती है और न ही प्रभावितों के लिए विशेष राहत पैकेज का प्रावधान है। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच-305 को क्षेत्र की जीवनरेखा बताते हुए कहा कि इस महत्वपूर्ण परियोजना का बजट में उल्लेख न होना सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल खड़ा करता है। साथ ही, जीभी, सैंज व तीर्थन घाटी जैसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों की अनदेखी को उन्होंने स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ अन्याय बताया। विधायक ने बजट को 'कर्ज, भ्रम व खोखली घोषणाओं का दस्तावेज' बताते हुए इसका विरोध किया व सरकार से बंजार क्षेत्र के लिए ठोस एवं समयबद्ध विकास योजनाएं लाने की मांग की।

बंजार कॉलेज में जल्द भरे जाएं रिक्त पद

अनंत ज्ञान, बंजार। बंजार विधानसभा क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालय में लंबे समय से रिक्त पड़े प्रवक्ता पदों को लेकर विधायक सुरेंद्र शौरी ने विधानसभा सत्र के दौरान शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर से मुलाकात की। शौरी ने कॉलेज में अंग्रेजी, केमिस्ट्री और संस्कृत विषयों के प्रवक्ता पद पिछले लगभग एक वर्ष से खाली होने का मुद्दा उठाया। विधायक ने बताया कि शिक्षकों की कमी के कारण छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है, जिससे शैक्षणिक गुणवत्ता गिर रही है व विद्यार्थियों का मनोबल टूट रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कॉलेज की छात्र संख्या लगभग 1100 से घटकर 600 रह गई है, जो स्थिति की गंभीरता को दर्शाती है। शौरी ने रिक्त पदों को प्राथमिकता के आधार पर भरने और अंतरिम रूप से निकटवर्ती महाविद्यालयों से शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति करने का आग्रह किया। शिक्षा मंत्री ने आश्वस्त किया कि सरकार जल्द ही इस विषय का समाधान करेगी। विधायक ने उम्मीद जताई कि त्वरित कार्रवाई से बंजार क्षेत्र के विद्यार्थियों का भविष्य सुरक्षित रहेगा।

छठे नवरात्र पर जयकारों से गूंजा मां शूलिनी मंदिर

माता शूलिनी मंदिर पहुंचे श्रद्धालु भजन-कीर्तन करते हुए।

अनंत ज्ञान, सोलन। हिमाचल प्रदेश के सोलन में चैत्र शुक्ल नवरात्रि के छठे दिन भी प्रसिद्ध मां शूलिनी मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहा। सुबह से ही मां के जयकारों के साथ कतारों में लगे। श्रद्धालु नवरात्रि के पावन अवसर पर मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठान (श्रीमद्भागवत पुराण) जारी है। शहर के अन्य मंदिरों में देवी दर्शन और पूजा हेतु श्रद्धालु पहुंचे रहे हैं। चैत्र शुक्ल नवरात्रि के छठे दिन मां दुर्गा के छठे स्वरूप माता कात्यायनी की पूजा का विधान है। मान्यता अनुसार, कात्य गोत्र के ऋषि कात्यायन की पुत्री के रूप में जन्म लेने के कारण इनका नाम कात्यायनी पड़ा। मां कात्यायनी को 'महिषासुर मर्दिनी' भी कहा जाता है और वे ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। आज के दिन भक्त विधिवत पूजा और व्रत कर मनचाहा जीवनसाथी, विवाह में बाधाओं का निवारण और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद मांगते हैं।

महामाया बाला सुंदरी मंदिर त्रिलोकपुर में महाभारत काल की तर्ज पर भोजनशाला

अनंत ज्ञान

एसपी जैरथ, नाहन। महामाया बाला सुंदरी मंदिर त्रिलोकपुर के दरबार में खाना महाभारत काल की भोजनशाला के समान बनता है। महामाया के दरबार में खाने की बात करें, तो आपके मन में कई सवाल हो सकते हैं, लेकिन महाभारत के एक प्रसंग से हमें पता चलता है कि उडुपी के राजा वासुदेव ने महाभारत के युद्ध के दौरान एक बड़ी भोजनशाला बनाई थी, जहां वह रोजाना हजारों सैनिकों के लिए भोजन बनाते थे। इस भोजनशाला में कौरव और पांडव दोनों पक्ष के

महामाया बाला सुंदरी मंदिर में देवी दर्शन को पहुंचे श्रद्धालु। अनंत ज्ञान

सैनिक साथ बैठकर भोजन करते थे। उडुपी का भोजन अपने स्वाद, सफाई और पोषण के लिए प्रसिद्ध था। महामाया के दरबार में भी शायद इसी तरह की व्यवस्था होगी, जहां भक्तों के लिए स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाती होगी।

महाभारत के युद्ध में भोजन व्यवस्था के रोचक तथ्य

उडुपी के राजा वासुदेव ने भोजनशाला का प्रबंधन संभाला था। वे भगवान कृष्ण की मदद से भोजन की मात्रा का सटीक अनुमान लगाते थे। उडुपी का भोजन स्वाद, सफाई व पोषण के लिए प्रसिद्ध था। राजा वासुदेव के अनुसार भगवान कृष्ण द्वारा खाई गई मूंगफली की संख्या से उन्हें अगले दिन युद्ध में मरने वाले सैनिकों की संख्या का अनुमान हो जाता था।

न्यूज ब्रीफ

शहीदों के सम्मान में राजगढ़ में पदयात्रा

अनंत ज्ञान, नाहन। देश भक्त भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहीदी दिवस के अवसर पर यूथ मीडिया क्लब राजगढ़ द्वारा श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 'मेरा युवा भारत' के सहयोग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम के तहत राजगढ़ में एक भव्य पदयात्रा निकाली गई, जिसमें युवाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पदयात्रा के दौरान देशभक्ति के नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा और शहीदों के बलिदान को भावपूर्ण तरीके से याद किया गया। आयोजित गोष्ठी में अमित क्रांति विकल्प सिंह ठाकुर ने भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के जीवन, विचारों और उनके महान बलिदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे शहीदों के आदर्शों को अपनाएं। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित लोगों ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

आयुष मेले में 180 लोगों का स्वास्थ्य जांचा

अनंत ज्ञान, राजगढ़। सेर जगास पंचायत के ग्राम कोटली में राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत एक दिवसीय आयुष मेले का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं और आयुष पद्धतियों की जानकारी प्राप्त की। उपमंडलीय आयुष अधिकारी डॉ. प्रियंका सूद के नेतृत्व में डॉ. कपिल, डॉ. संजीव शर्मा सहित अन्य चिकित्सकों की टीम ने आयुर्वेद, योग एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से रोगियों की जांच कर उपचार व परामर्श दिया। शिविर के दौरान जड़ी-बूटियों की विस्तृत जानकारी दी गई तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से स्वर्ण प्राशन संस्कार का आयोजन भी किया गया।मेले में रक्तचाप, मधुमेह और हीमोग्लोबिन की निःशुल्क जांच की गई, योग शिविर के माध्यम से नियमित योगाभ्यास के लाभ बताए गए और निःशुल्क औषधीय पौधों का वितरण किया गया। आयुष शिविर के दौरान कुल 180 मरीजों की जांच की गई, जिनमें से 135 मरीजों को निःशुल्क दवाइयां प्रदान की गईं। मेले के मुख्यातिथि उपमंडलाधिकारी राजगढ़ राजकुमार ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा कि आयुष शिविर आमजन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, क्योंकि इनके माध्यम से निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी मिलती है।

टीबी के लक्षणों व जांच के बारे में दी जानकारी

अनंत ज्ञान, अर्की। उपमंडल अर्की के खंड चिकित्सा कार्यालय के सभागार में विश्व क्षयरोग दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि एसडीएम अर्की निशांत तोमर ने भाग लिया। सर्वप्रथम खंड चिकित्सा अधिकारी अर्की मुक्ता रस्तोगी ने शॉल-टोपी व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। उन्होंने अपने संबोधन में टीबी के लक्षणों व जांच के बारे में विस्तृत जानकारी दी। एसडीएम अर्की निशांत तोमर ने अपने संबोधन में कहा कि आज भारतवर्ष लगभग पोलियो मुक्त हो चुका है। इसी तरह भारतवर्ष शीघ्र ही टीबी मुक्त होने की कगार पर है। इस मौके पर उन्होंने उन टीबी चैंपियन को टीबी मुक्त होने पर बधाई दी। एसडीएम निशांत तोमर ने उपस्थित लोगों से कहा कि लोगों को समय-समय पर अपनी जांच करवाते रहना चाहिए। इस मौके पर मंच संचालक डॉ. विजय कुमार शांडिल व मानव कल्याण समिति से सीडी बंसल व समाजसेवक रोशन लाल वर्मा नया सवेरा जनकल्याण समिति के संस्थापक व प्रधान एडवोकेट भीमसिंह चौहान सचिव प्रीतम सिंह व अन्य अस्पताल प्रबंधन उपस्थित रहा।

होम गार्ड वालंटियर मैनेजमेंट सिस्टम की शुरुआत का स्वागत

अनंत ज्ञान, दाड़लाघाट। होम गार्ड्स वेलफेयर एसोसिएशन हिमाचल प्रदेश ने राज्य सरकार द्वारा होम गार्ड वालंटियर मैनेजमेंट सिस्टम की शुरुआत का स्वागत करते हुए इसे एक महत्वपूर्ण एवं दूरगामी प्रभाव वाला कदम बताया है। एसोसिएशन के राज्य अध्यक्ष जोगिंदर सिंह चौहड़िया ने कहा कि यह डिजिटल पहल लंबे समय से होमगार्ड स्वयंसेवकों द्वारा उठाई जा रही पारदर्शी एवं न्यायसंगत ड्यूटी वितरण की मांग की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। उन्होंने कहा कि ड्यूटी, ट्रेनिंग, छुट्टी एवं तैनाती से संबंधित प्रक्रियाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने से न केवल पारदर्शिता बढ़ेगी, बल्कि स्वयंसेवकों के बीच विश्वास भी सुदृढ़ होगा। उन्होंने आगे कहा कि यदि इस प्रणाली को प्रभावी रूप से पूरे प्रदेश में लागू किया जाता है, तो इससे प्रशिक्षित होम गार्ड स्वयंसेवकों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित होगा तथा लंबे समय से चली आ रही असमान ड्यूटी वितरण की समस्या का समाधान संभव होगा। इस पहल के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू, डीजी होम गार्ड्स हिमाचल प्रदेश एवं विभाग की पूरी टीम का आभार व्यक्त किया।

महेश गुप्ता बने श्री सनातन चैरिटेबल वेलफेयर सोसायटी के नए अध्यक्ष

अनंत ज्ञान, नाहन। श्री सनातन चेरिटेबल वेलफेयर सोसायटी नाहन के अध्यक्ष पद पर महेश गुप्ता को तैनात किया गया है। सोसायटी का वर्ष पूरा होने पर सर्वप्रथम सचिव राजीव शर्मा ने इस वर्ष की वित्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। सोसायटी द्वारा पिछले वर्ष के कार्यों की जानकारी दी गई। पुरानी कार्यकारिणी को भंग करके नई कार्यकारिणी का सर्वसम्मति से चयन किया गया, जिसमें अध्यक्ष महेश गुप्ता, सचिव राजीव शर्मा, उपाध्यक्ष संजीव (संजू), उपाध्यक्ष निशा अग्रवाल, कोषाध्यक्ष राजीव गुप्ता, कानूनी सलाहकार मनोज, सदस्य शांति देवी, रूपिंदर ठाकुर, प्रदीप शर्मा, जीत राम शर्मा, राजेश भार्गव, सोनिया, जगमोहन, सुबोध शर्मा, परवीन सेमवाल, इन्द्रा चावरिया, निर्मला देवी, नीरू, रजत शर्मा, अनिल शर्मा, मानव संत, उमेश संत, मुख्य सलाहकार समिति के सदस्य राकेश अरोड़ा, सुदीप तिवारी का चयन हर्ष ध्वनि से किया गया।

विश्व क्षय रोग दिवस पर संगोष्ठी आयोजित

अनंत ज्ञान, सोलन। सोलन जिला के टीबी सेल द्वारा विश्व क्षय रोग दिवस के उपलक्ष्य पर लोगों को क्षय रोग उन्मूलन के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से गत दिवस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अजय पाठक ने की। डॉ. अजय पाठक ने कहा कि सोलन को क्षय रोग मुक्त बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षय रोग का शीघ्र निदान, पूर्ण उपचार, निरंतर प्रयास, जन जागरूकता और सामुदायिक भागदारी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष विश्व क्षय रोग दिवस का थीम 'हां हम टीबी खत्म कर सकते हैं' रखा गया है।

अल्पसंख्यक कल्याण, दिव्यांग सशक्तिकरण व सामाजिक न्याय पर व्यापक समीक्षा

अनंत ज्ञान, नाहन। उपायुक्त सिरमौर प्रियंका वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित त्रैमासिक समीक्षा बैठक में अल्पसंख्यक वर्ग के लिए प्रधानमंत्री नया-15 सूत्रीय कार्यक्रम, जिला स्तरीय दिव्यांगता समिति, स्थानीय स्तरीय समिति तथा अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत गठित समितियों के कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में बताया गया कि जिला सिरमौर की कुल जनसंख्या 5,29,855 है, जिसमें 53,025 लोग अल्पसंख्यक वर्ग से संबंधित हैं, जो कुल जनसंख्या का लगभग 10.01 प्रतिशत है। उपायुक्त ने जानकारी दी कि जिला एवं तहसील कल्याण कार्यालयों के माध्यम से पात्र लाभार्थियों को आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण सहायता प्रदान की जा रही है। 1 दिसंबर, 2025 से 20 मार्च, 2026 तक 34 लाभार्थियों को 1 करोड़ 72 लाख 50 हजार रुपए की राशि सरल ऋण के रूप में दी जा चुकी है।

जिला में होटल-रेस्तरां में व्यापक स्तर पर होगी व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की जांच

सोलन में नियम तोड़ने वालों पर बरती जाएगी सख्ती

अनंत ज्ञान

आर मोहन चौहान, सोलन। वैश्विक स्तर पर एलपीजी की किल्लत को लेकर जिला खाद्य आपूर्ति विभाग सोलन सतर्क है। व्यावसायिक गैस की कालाबाजारी रोकने के लिए विभाग जिला भर में होटल, रेस्तरां और ढाबों में व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की जांच के लिए विशेष अभियान चलाए हुए हैं। घरेलू सिलेंडर के दुरुपयोग और सुरक्षा नियमों के उल्लंघन को रोकने के लिए विभाग द्वारा जांच अभियान चलाया जा रहा है। इस कदम का उद्देश्य केवल अधिकृत व्यावसायिक सिलेंडरों की खपत सुनिश्चित करना है। जिला मुख्यालय में विभागीय टीम ने विभिन्न प्रतिष्ठानों का दौरा कर सिलेंडर उपयोग, सुरक्षा मानक और दस्तावेजों की बारीकी से जांच की। विभाग ने चेतावनी दी कि घरेलू सिलेंडरों का व्यावसायिक इस्तेमाल पूरी तरह प्रतिबंधित है। ऐसे मामले में कड़ी कार्रवाई होगी।

व्यावसायिक सिलेंडरों की जांच के लिए चलाया विशेष अभियान। अनंत ज्ञान

व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में घरेलू सिलेंडरों का उपयोग अवैध

व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में घरेलू सिलेंडरों का उपयोग करना अवैध है। यह सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है, खासकर जब सिलेंडरों की कमी से व्यवसाय प्रभावित हो सकती है। इसी के चलते खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग और संबंधित एजेंसियां संयुक्त रूप से होटलों, ढाबों और अन्य वाणिज्यिक स्थलों की औचक निरीक्षण कर रही है।

कारोबारियों को नियम पालन के निर्देश

विभागीय टीम ने कई जगहों पर कारोबारियों को नियम पालन के निर्देश दिए गए और गैस सिलेंडरों के सुरक्षित उपयोग व सावधानियों पर जागरूक किया गया। अभियान का उद्देश्य जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करना व दुर्घटनाएं रोकना है। जिला खाद्य नियंत्रक श्रवण कुमार ने कहा, 'विभाग लगातार नजर रखे हुए है। नियम तोड़ने वालों पर सख्ती बरती जाएगी। इंडियन ऑयल के प्रतिनिधि सौरभ ने जोड़ा कि व्यावसायिक सिलेंडर अलग हैं। केवल अधिकृत एजेंसियों से ही लें और सुरक्षा मानकों का पालन करें। विभाग ने भविष्य में और सख्त चेकिंग का ऐलान किया। इससे होटल संचालकों में खलबली मच गई, जबकि आमजन ने इसे सुरक्षा के लिहाज से सराहनीय कदम बताया।

ददाहू मंडी की जमीन पर अवैध कब्जों का मामला पहुंचेगा एसडीएम कोर्ट

अनंत ज्ञान

नाहन। ददाहू स्थित कृषि ऊपज मंडी समिति की जमीन पर अवैध कब्जों का मामला अब न्यायालय में पहुंचेगा। मंडी समिति द्वारा करीब एक दर्जन से अधिक कथित कब्जाधारियों के जवाबों को असंतोषजनक पाए जाने के बाद

◆ एक दर्जन से अधिक कब्जाधारियों के जवाब असंतोषजनक

मामले को एसडीएम कोर्ट नाहन में भेजने की तैयारी पूरी कर ली है। मंडी समिति के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने बताया कि उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप कार्रवाई करते हुए लगभग एक वर्ष पूर्व कब्जाधारियों को नोटिस जारी कर जवाब दाखिल करने को कहा गया था। लंबे समय के बाद संबंधित लोगों द्वारा अपने जवाब प्रस्तुत किए गए, लेकिन निर्धारित मानकों के अनुसार कोई भी जवाब संतोषजनक नहीं पाया गया।

उन्होंने बताया कि अब पूरे मामले को कानूनी प्रक्रिया के तहत एसडीएम कोर्ट नाहन में विचाराधीन किया जाएगा, जहां अवैध कब्जों को लेकर अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

क्या कहते हैं कब्जाधारी

कब्जाधारियों का कहना है कि 1970 के दशक में गिरी नदी में आई बाढ़ के बाद प्रभावित लोगों को यह जमीन रहने के लिए उपलब्ध कराई गई थी। हालांकि राजस्व रिकॉर्ड में कब्जे की स्थिति स्पष्ट नहीं होने के कारण मामला और जटिल हो गया है। मंडी समिति का कहना है कि न्यायालय के माध्यम से ही अब इस पूरे प्रकरण का समाधान निकाला जाएगा, ताकि सरकारी भूमि को कब्जा मुक्त कराया जा सके।

पेट्रोल-डीजल पर टैक्स बढ़ोतरी जनता पर बोझ, सरकार तुरंत वापस ले सेस : रीना

अनंत ज्ञान

राजगढ़। पच्छाद विधानसभा क्षेत्र की विधायक रीना कश्यप ने प्रदेश सरकार द्वारा पेट्रोल और डीजल पर लगाए गए अतिरिक्त टैक्स और सेस का कड़ा विरोध करते हुए इसे जनविरोधी फैसला बताया है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी जनता की आवाज़ बनकर इस निर्णय का विरोध करती रहेगी और सरकार को तुरंत इसे वापस लेना चाहिए। रीना कश्यप ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर प्रति लीटर करीब 5 रुपए तक अतिरिक्त सेस लगाकर आम आदमी पर सीधा आर्थिक बोझ डाल दिया है। उनका कहना है कि इस फैसले से प्रदेश में महंगाई और बढ़ेगी, जिसका सबसे अधिक असर किसान, बागवान, ट्रांसपोर्टर, छोटे व्यापारी तथा आम उपभोक्ताओं पर पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी का सीधा प्रभाव रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं पर पड़ता है। विधायक ने कहा कि ट्रांसपोर्ट लागत बढ़ने से प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली सरकार अपने आर्थिक कुप्रबंधन को छिपाने के लिए जनता पर टैक्स का अतिरिक्त बोझ डाल रही है। रीना कश्यप ने सरकार से मांग की कि पेट्रोल-डीजल पर लगाया गया अतिरिक्त सेस तुरंत वापस लिया जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने इस फैसले को वापस नहीं लिया तो भारतीय जनता पार्टी सड़क से लेकर सदन तक आंदोलन करने से पीछे नहीं हटेगी।

सुक्खू सरकार ने बजट में रखा समाज के हर वर्ग के हितों का ध्यान : चौहान कृष्णा

अनंत ज्ञान

दाड़लाघाट। प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू द्वारा प्रस्तुत बजट को सराहनीय बताते हुए जिला सोलन कांग्रेस पार्टी के पूर्व सचिव चौहान कृष्णा ने कहा कि इसमें समाज के हर वर्ग के हितों का ध्यान रखा गया है। उन्होंने कहा कि बजट में विशेष रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने पर फोकस किया गया है, जो प्रदेश के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम है। चौहान कृष्णा ने कहा कि बजट में किसान, बागवान, महिलाएं, युवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पर्यटन सहित विभिन्न क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने खासतौर पर प्राकृतिक खेती से जुड़े उत्पादों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी को ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि अदरक का एमएसपी 30 रुपए प्रति किलोग्राम तय किया गया है, जो पहली बार हुआ है। इसके अलावा प्राकृतिक गेहूं का एमएसपी 60 से बढ़ाकर 80 रुपए, मक्की का 40 से बढ़ाकर 50 रुपए व हल्दी का एमएसपी 90 से बढ़ाकर 150 रुपए किया है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होगी।

◆ बजट में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने पर फोकस

मछुआरों को भी बजट में बड़ी राहत दी गई है। पहले 15 प्रतिशत रॉयल्टी को घटाकर साढ़े सात प्रतिशत किया गया था, जिसे अब कम कर केवल एक प्रतिशत कर दिया गया है। इससे इस वर्ग को सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पशुपालकों और दुग्ध उत्पादकों, सड़कों के विकास व रखरखाव, इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, शहरी क्षेत्रों के विकास और पर्यटन को बढ़ावा देने जैसे क्षेत्रों में भी बजट प्रभावी साबित होगा।

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत सिरमौर के लिए स्वीकृत हुईं 11 सड़कें

अनंत ज्ञान, नाहन। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना सिरमौर जिला में कारगर साबित हो रही है। दुर्गम जिला के कई इलाके योजना के तहत सड़क सुविधा से जुड़ रहे हैं। योजना के चौथे चरण के तहत जिले में 11 नई सड़कों को मंजूरी मिली है, जिनका निर्माण कार्य जल्द शुरू हो जाएगा। लोक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता अरविंद कुमार शर्मा ने बताया कि स्वीकृत सड़कों पर करीब 90 करोड़ रुपए की राशि खर्च की जाएगी। उन्होंने बताया कि इन 11 सड़कों में से 5 सड़कें पांवटा साहिब, 3 शिलाई, 1 नाहन, 1 पच्छाद और 1 राजगढ़ निर्माण के लिए टेंडर प्रक्रिया भी पूरी कर ली गई है।

दून विधानसभा में भाजपा के दोनों मंडलों की संगठनात्मक कार्यशाला का आयोजन

अनंत ज्ञान

बीबीएन। दून विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा संगठनात्मक कार्यों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से मंगलवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्षा डेजी ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठन की मजबूती, विस्तार और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डेजी ठाकुर ने कहा कि संगठन द्वारा सौंपे गए दायित्वों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना प्रत्येक कार्यकर्ता की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की वर्तमान कांग्रेस सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि सरकार हर मोर्चे पर असफल रही है। पूर्व विधायक परमजीत सिंह ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र के सभी बूथों पर समितियों का गठन किया जा चुका है, जो संगठन को मजबूत करने के साथ अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान देंगी। मंडल अध्यक्ष मान सिंह ने कहा कि कार्यकर्ताओं के सहयोग से अब तक पार्टी के सभी कार्य सफलतापूर्वक पूरे किए गए हैं।

दून विधानसभा भाजपा के दोनों मंडलों की सगठनात्मक कार्यशाला में मख्यातिथि महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष डेजी ठाकुर के साथ कार्यकर्ता स्वागत करते हुए। अनंत ज्ञान

बजट में 3586 करोड़ रुपए की कटौती से प्रदेश में थमेंगे विकास के पहिए : रावत

अनंत ज्ञान

नाहन। सिरमौर भाजपा जिला प्रवक्ता प्रताप सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू सरकार ने राहुल गांधी कांग्रेस का शानदार इकोनामिक खटाखट वाला बजट प्रस्तुत किया है। रावत ने बताया कि मुख्यमंत्री ने 2027 के बजट में 3 हजार 5 सौ 86 करोड़ रुपए की कटौती की गई है, जिससे प्रदेश में विकास के पहिए पूरी तरह से थम जाएंगे। रावत ने कहा कि यह इतिहास में पहली बार हुआ है जब किसी मुख्यमंत्री ने बजट बढ़ाने की बजाय बजट को घटाया है इतना ही नहीं विधायकों के वेतन में 20% एवं अधिकारियों के वेतन में 30% की कटौती की गई है। यह इतिहास में पहला मौका है जब विधायक को एवं अधिकारियों के वेतन में भारी कटौती की गई है। इतना ही नहीं कर्मचारियों का भी 13% डीए सरकार अभी तक नहीं दे पाई है।

रावत ने बताया कि प्रदेश में जो भी विकास कार्य हो रहे हैं वे सारे कार्य केंद्र सरकार के पैसे से हो रहे हैं। प्रदेश सरकार के बजट में विकास करने के लिए कोई भी पैसे नहीं है, जबकि विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने प्रदेश की जनता को विकास के बड़े-बड़े सपने दिखाए थे, लेकिन घटते बजट ने विकास के सारे सपने धराशाई कर दिए हैं।

बद्दी के किशनपुरा में होटल के कमरे में मृत मिला बिहार का युवक

अनंत ज्ञान

बीबीएन/सोलन। जिला सोलन के औद्योगिक क्षेत्र बद्दी के तहत किशनपुरा स्थित एक होटल में ठहरे 27 वर्षीय युवक की रहस्यमयी परिस्थितियों में मौत हो गई है। मृतक की पहचान प्रत्यूष (27) पुत्र रविंद्र, निवासी गांव दुधवाल, जिला समस्तीपुर, बिहार के रूप में हुई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और परिजनों को सूचित कर दिया गया है।

जानकारी के अनुसार प्रत्यूष अपनी कंपनी के एक अन्य सहयोगी के साथ आधिकारिक ऑडिट कार्य के सिलसिले में बद्दी आया हुआ था। वे दोनों पिछले चार दिनों से किशनपुरा के एक निजी होटल में ठहरे हुए थे। सोमवार रात को दोनों ने साथ में खाना खाया और अपने कमरे में सोने चले गए। मंगलवार सुबह जब काफी देर तक प्रत्यूष नहीं उठा, तो उसके साथी ने उसे जगाने का प्रयास किया। प्रत्यूष को बेसुध हालत में देख साथी कर्मचारी ने तुरंत कंपनी अधिकारियों को इसकी सूचना दी। आनन-फानन में उसे नालागढ़ अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही मानपुरा पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। पुलिस ने होटल के रिकॉर्ड खंगाले और उस कमरे का सूक्ष्म निरीक्षण किया, जहां युवक ठहरा हुआ था। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इतनी कम उम्र में प्रत्यूष की मौत हृदय गति रुकने से हुई या इसके पीछे कोई अन्य कारण था। मानपुरा पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की असली वजह का खुलासा हो पाएगा।

खेती कम पैदावार के बीच कीमतों में उछाल, किसानों में फिर जगी उम्मीद

मटर के दाम बढ़ने से राजगढ़ के किसानों को मिली राहत

अनंत ज्ञान

बीआर चौहान, राजगढ़। मटर के दाम में उछाल आने से राजगढ़ क्षेत्र के किसानों के चेहरे पर रौनक लौटी है। बीते दिनों सोलन, राजगढ़ और सनौरा की मंडियों में मटर औसतन 28 रुपए बिका था जबकि मंगलवार को सोलन व राजगढ़ मंडी में मटर के दाम 38 रुपए प्रतिकिलोग्राम रहे। गौर रहे कि मध्यप्रदेश सहित अन्य राज्यों से मटर की भारी आवक होने से राजगढ़ क्षेत्र में उत्पादित किए जाने वाला मटर कम दाम पर बिका। हालांकि राजगढ़ क्षेत्र में भी मटर की फसल अंतिम चरण पर चल रही है अर्थात आगामी दो सप्ताह में खत्म हो जाएगी।

किसानों का कहना है कि अगेती मटर की फसल ओलावृष्टि से मटर की फलियां का रंग सफेद गई थी और अब पछेती मटर की फसल के भाव में बढ़ोतरी होने से कुछ उम्मीद जागी है।

सब्जी मंडियों में पहुंचा पहाड़ी मटर और किसान मटर भरते हुए। अनंत ज्ञान

विनोद कुमार आढ़ती राजगढ़ का कहना है कि बीते कुछ दिनों से मटर के दाम स्थिर चल रहे हैं। चूंकि अन्य राज्यों से मटर की आवक काफी हो रही है। इनका कहना है कि मैदानी इलाकों में मटर की फसल खत्म होने लगी है, जिससे अब हिमाचल प्रदेश के किसानों को मटर के अच्छे दाम मिलने की आशा है।

प्रगतिशील किसान कुशल तोमर और लेखराम कश्यप ने बताया कि सर्दियों में इस वर्ष कम बारिश होने से मटर की फसल की पैदावार औसतन हुई है। मटर की फसल इस बार तय समय से करीब एक पखवाड़ा पहले तैयार हो गई थी।

ट्रांस्पोर्टर प्रदीप कुमार ने बताया कि इस बार मटर का मंडियों में रेट काफी कम हैं, जिससे किसान परेशान है। उन्होने बताया कि गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष मटर की फसल कुछ कम हुई है।

परमाणु हथियार रखने का फैसला सही था: किम जोंग

एजेंसी, प्योंगयांग

नॉर्थ कोरिया के सुप्रीम लीडर किम जोंग उन ने देश के पास परमाणु हथियार होने को लेकर खुशी जताई है। सरकारी मीडिया के मुताबिक उन्होंने कहा कि अमेरिका और इसराइल के ईरान पर किए गए हमले साबित करते हैं, कि उनके देश का परमाणु हथियार रखने का फैसला सही था। किम ने कहा कि पश्चिम एशिया में चल रहा युद्ध दिखाता है कि आज की दुनिया में सिर्फ मजबूत सैन्य ताकत ही किसी देश को सुरक्षित रख सकती है।

उन्होंने यह बयान सोमवार को संसद में लंबे भाषण के दौरान दिया। अपने भाषण में किम ने दक्षिण कोरिया के प्रति सख्त रुख दोहराया और कहा कि वह अपने देश की परमाणु ताकत को और मजबूत करेंगे, ताकि अमेरिका को रोका जा सके। किम जोंग उन का यह भाषण मंगलवार को लिखित रूप में जारी हुआ है। इसमें उन्होंने कहा कि 2019 में ट्रम्प के साथ बातचीत टूटने के बाद परमाणु हथियार बढ़ाने का फैसला उनका सबसे सही कदम था। किम ने कहा कि नॉर्थ कोरिया अब अमेरिका के खिलाफ एकजुट मोर्चे में और ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाएगा। हालांकि उन्होंने ट्रम्प का नाम सीधे नहीं लिया, लेकिन यह जरूर कहा कि उनके विरोधी टकराव चाहते हैं या शांति, यह उन पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि नॉर्थ कोरिया हर स्थिति के लिए तैयार है। किम ने देश को आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाने, ज्यादा परमाणु हथियार और उन्हें ले जाने वाली मिसाइलें बनाने पर जोर दिया। किम ने यह भी कहा कि परमाणु हथियारों की वजह से नॉर्थ कोरिया अब ज्यादा सुरक्षित है और इसी वजह से वह अपने संसाधनों का इस्तेमाल आर्थिक विकास के लिए भी कर पा रहा है। (अनंत ज्ञान)

पश्चिम एशिया की स्थिति चिंताजनक भारत पर पड़ सकता है असर : मोदी

प्रधानमंत्री ने दुनिया के सभी पक्षों से इस लड़ाई को जल्द से जल्द सुलझाने की अपील की

एजेंसी, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को लोकसभा में सदस्यों को पश्चिम एशिया में हो रहे घटनाक्रम और भारत पर उनके संभावित असर के बारे में जानकारी दी थी। उन्होंने स्थिति को 'चिंताजनक' बताया। उन्होंने आज राज्यसभा में भी इस मुद्दे पर बयान दिया। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि चल रहे संघर्ष से पहले कभी नहीं हुई चुनौतियां पैदा हुई हैं, जो न केवल आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी हैं, बल्कि मानवीय भी हैं।

उन्होंने कहा कि देश की कच्चे तेल और गैस की जरूरत का एक बड़ा हिस्सा युद्ध से प्रभावित क्षेत्र से पूरा होता है। यह लड़ाई तीन हफ्ते से ज्यादा समय से चल रही है। इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था और लोगों की जिंदगी पर बहुत बुरा असर पड़ा है और इसीलिए दुनिया सभी पक्षों से इस लड़ाई को जल्द से जल्द सुलझाने की अपील कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि यह इलाका बाकी दुनिया के साथ भारत के व्यापार के लिए एक अहम ट्रेड रूट के तौर पर बहुत जरूरी बना हुआ है।

प्रधानमंत्री मोदी ने मध्य पूर्व में मौजूदा हालात, ऊर्जा ढांचा पर हमले, होर्मुज स्ट्रेट में स्वतंत्र आवाजाही में बाधा को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने देश के अंदर पेट्रोल, डीजल, गैस और फर्टिलाइजर्स के स्टॉक और सप्लाई को लेकर भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस दौरान मैंने पश्चिम एशिया के देशों के नेताओं से दो राउंड बात की, उन देशों के नेताओं ने भारतीयों की सुरक्षा का विश्वास दिलाया है।

हालांकि, दुर्भाग्य से कुछ भारतीयों की मृत्यु हुई है। उन्होंने कहा कि प्रभावित देशों में मौजूद भारतीय मिशन वहां गए भारतीय पर्यटकों और वहां रह रहे लोगों के साथ 24 घंटे जुड़ा हुआ है और उनकी मदद कर रहा है।

प्रधानमंत्री ने बताया कि युद्ध शुरू होने से लेकर अबतक 3 लाख 75 भारतीय सुरक्षित लौटे हैं। ईरान से 1000 भारतीय सुरक्षित लौटे हैं। इनमें 700 से अधिक मेडिकल पढ़ाई करने वाले युवा हैं. इन देशों में सीबीएसई ने 10वीं और 12वीं की परीक्षा रद्द कर दी है। (अनंत ज्ञान)

पश्चिम एशिया में हो रहे हमले पूरी दुनिया के लिए खतरनाक : राजनाथ

एजेंसी, नई दिल्ली

◆ रक्षा मंत्री ने तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा घटनाओं पर की चर्चा

पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध के बीच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान और तीनों सेनाओं के प्रमुखों के साथ बैठक करके भारत की रक्षा तैयारियों पर चर्चा की। बैठक में हाल की वैश्विक और क्षेत्रीय सुरक्षा घटनाओं की समीक्षा की गई। रक्षा मंत्री ने कहा कि पश्चिम एशिया में हो रहे हमले न सिर्फ भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चिंता की बात है।

बैठक में डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) के चेयरमैन डॉ. समीर कामत, वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अमरप्रीत सिंह, सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी और शीर्ष अधिकारियों ने पश्चिम एशिया में बदलते हालात पर चर्चा की। सुरक्षा समीक्षा बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भारत की रक्षा तैयारियों का आकलन किया। पश्चिम एशिया में चल रहा संघर्ष अब चौथे हफ्ते में है और होर्मुज जलमार्ग से होने वाला व्यापार ठप है। अमेरिका-इसराइल के संयुक्त हमले में 28 फरवरी को ईरान के 86 साल के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामनेई की मौत के बाद तनाव बढ़ गया है। जवाबी कार्रवाई में ईरान ने कई खाड़ी देशों में इसराइली और अमेरिकी संपत्तियों को निशाना बनाया, जिससे पानी के रास्ते में और रुकावटें आईं और अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार के साथ-साथ वैश्विक आर्थिक स्थिरता पर भी असर पड़ा। (अनंत ज्ञान)

सेंसेक्स 1372 अंक चढ़ा, निफ्टी में भी 400 अंकों की तेजी

बैंकिंग और ऑटो सेक्टर के शेयरों में सबसे ज्यादा खरीदारी

एजेंसी, मुंबई

शेयर बाजार में मंगलवार को तेजी रही। सेंसेक्स 1372 अंक (1.89%) की तेजी के साथ 74,068 पर कारोबार कर रहा है। वहीं निफ्टी में भी 400 अंक (1.78%) की तेजी है, ये 22,912 पर पहुंच गया।

बैंकिंग और ऑटो शेयर्स में सबसे ज्यादा खरीदारी रही। बाजार में यह उछाल 1 बजे के आस-पास अल अरबिया की उस रिपोर्ट के बाद आया है, जिसमें दावा किया गया है कि मोजतबा खामेनेई अमेरिका के साथ बातचीत करने के लिए सहमत हो गए हैं। हालांकि, ईरान की ओर से अभी तक इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। घरेलू शेयर बाजार में तेजी की एक वजह ग्लोबल मार्केट से मिले अच्छे संकेत भी रहे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमलों को 5 दिन के लिए अस्थायी रूप से रोकने का ऐलान किया है, जिसका असर भारतीय बाजार पर दिखा। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी है। ब्रेंट क्रूड आज 4% बढ़कर 104 डॉलर प्रति बैरल के पार कारोबार कर रहा है। (अनंत ज्ञान)

बिल पेश होने से पहले गुजरात विधानसभा में जोरदार हंगामा

एजेंसी, नई दिल्ली। गुजरात विधानसभा में सोमवार को पेट्रोल-डीजल की कथित कमी के मुद्दे पर जोरदार हंगामा देखने को मिला। इसी बीच राज्य सरकार यूनिफॉर्म सिविल कोड बिल पेश करने की तैयारी में है, जिस पर सियासी घमासान और तेज हो गया है। असल में कांग्रेस नेता अमित चावड़ा पेट्रोल की कमी का मुद्दा उठा रहे थे। वहीं, बीजेपी की ओर कहा गया कि कांग्रेस यूसीसी के मुद्दे से भटकाने के लिए ये मामला उठा रही है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अमित चावड़ा राज्य में पेट्रोल डीजल की कमी और पेट्रोल पंपों पर लगी लंबी कतारों का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि इस संबंध में उन्होंने नियम 108 के तहत नोटिस भी दिया है। इस पर विधानसभा अध्यक्ष शंकर चौधरी ने स्पष्ट किया कि इस मुद्दे पर नियम 116 के तहत नोटिस को मंजूरी दे दी गई है और इस पर कल चर्चा कराई जाएगी सरकार की ओर से उप मुख्यमंत्री हर्ष सांघवी ने जवाब देते हुए कहा कि राज्य में कहीं भी सप्लाई की कोई दिक्कत नहीं है और सरकार ने लोगों से अपील की है। (अनंत ज्ञान)

◆ विपक्ष ने उठाया पेट्रोल पंपों पर लगी लंबी लाइनों का मुद्दा

दिल्ली की बेटियों के लिए साइकिल फ्री बस, महिलाओं को 2500 रुपए

एजेंसी, दिल्ली

◆ मुख्यमंत्री रेखा ने पेश किया 1,03,700 करोड़ का बजट

दिल्ली सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए 1,03,700 करोड़ का बजट पेश किया है। बजट में विकास कार्यों के अलावा प्रदूषण और महिलाओं, युवाओं पर भी विशेष फोकस रखा गया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली सरकार के स्कूलों में कक्षा 9 की 1.30 लाख बेटियों को मुफ्त साइकिलें उपलब्ध कराने का ऐलान किया है। इस योजना के लिए 90 करोड़ आवंटित किए गए हैं। वहीं 10वीं के मेधावी छात्रों को लैपटॉप देने की घोषणा की गई है।

महिला सुरक्षा को 50 करोड़ रुपए की निधि: दिल्ली सरकार ने अपने बजट में महिला सुरक्षा को प्राथमिकता दी है। इसके लिए 50 करोड़ रुपए की विशेष निधि आवंटित की गई है। सरकार शहर के अंधेरे स्थानों की पहचान करेगी। इन जगहों पर नई लाइटें और संवेदक लगाए जाएंगे। इन लाइटों को आधुनिक बनाया जाएगा। सीएम रेखा गुप्ता ने बजट में छात्र-छात्राओं को लेकर भी बड़े ऐलान किए हैं। सीएम ने 10वीं कक्षा के मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटॉप देने की घोषणा की है। इसके लिए बजट में 10 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। (अनंत ज्ञान)

आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना के दायरे में ट्रांसजेंडर

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के अनुसार, दिल्ली सरकार ट्रांसजेंडरों को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना के दायरे में लाने के लिए 202 करोड़ रुपये आवंटित करेगी। दिल्ली सरकार नए 750 आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर 1,500 करोड़ रुपये आवंटित करेगी। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि पूर्व आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा अधूरे छोड़े गए सात आईसीयू अस्पतालों को 150 करोड़ रुपये की लागत से पूरा किया जाएगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार मानसून के दौरान जलभराव को रोकने के लिए अथक प्रयास कर रही है। सिंचाई विभाग को 610 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

मणिपुर में भारत-म्यांमार सीमा के पास 10 उग्रवादी गिरफ्तार

एजेंसी, इंफाल

मणिपुर के तेंगनौपाल जिले में सुरक्षा बलों ने भारत-म्यांमार सीमा के पास से प्रतिबंधित संगठन पीआरईपीएक (आरए) के 10 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस की ओर से मंगलवार को जारी एक बयान में यह जानकारी दी गई। बयान में कहा कि गिरफ्तार उग्रवादियों में पांच नाबालिग शामिल हैं। इसमें बताया गया है कि इन्हें मोरेह थाना क्षेत्र में सीमा स्तंभ 77 और 82 के बीच के इलाके से पकड़ा गया।

बयान में कहा गया कि पांचों नाबालिगों के खिलाफ किशोर न्याय अधिनियम के तहत उचित कार्रवाई की जा रही है। दो साल पहले जातीय हिंसा भड़कने के बाद से सुरक्षा बल मणिपुर में तलाश अभियान संचालित कर रहे हैं। मई 2023 से मेइती और कुकी-जो समुदाय के बीच जातीय संघर्ष में 260 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। (अनंत ज्ञान)

प्रतिबंधित संगठनों केसीपी और केवाईकेएल के तीन कैडर गिरफ्तार

एजेंसी, इंफाल। मणिपुर में सुरक्षाबलों और पुलिस ने संयुक्त अभियान चलाते हुए प्रतिबंधित संगठनों केसीपी और केवाईकेएल के तीन सक्रिय कैडरों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई राज्य के अलग-अलग जिलों में की गई। मणिपुर पुलिस मुख्यालय द्वारा मंगलवार को जारी आधिकारिक बयान के अनुसार, सोमवार को पहले अभियान में इंफाल पूर्वी जिले के लामलाई पुलिस थाना क्षेत्र के फकनुंग इलाके से केसीपी (नोंगद्रेनखोम्बा गुट) के सक्रिय सदस्य आरामबम इंगोचा मैतेई उर्फ अचोउबा (26) को गिरफ्तार किया। वह इंफाल पूर्वी जिले के ताखेल माखा लेइकाई का निवासी है। लामलाई थाना क्षेत्र के चाना मयाई लेइकाई से केसीपी (अपुनबा गुट) के एक अन्य सक्रिय कैडर अथोकपम बिक्रमजीत सिंह उर्फ टोलामु (22) को उसके घर से पकड़ा गया। (अनंत ज्ञान)

खेत में चारा लेने गई महिला से दुष्कर्म का प्रयास, जेठानी ने बचाई

अनंत ज्ञान, चंडीगढ़। सदर थाना क्षेत्र के एक गांव में दिनदहाड़े एक महिला के साथ दुष्कर्म के प्रयास का मामला सामने आया है। आरोपी ने खेत में महिला को अकेली देख दबोच लिया, लेकिन पास ही काम कर रही जेठानी के समय पर पहुंचने से बड़ी वारदात टल गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पीड़िता ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह मंगलवार को रोजाना की तरह खेत में पशुओं के लिए चारा लेने गई थी। उसी दौरान गांव का ही रहने वाला शिवजी नामक युवक वहां आ गया। आरोपी ने पीछे से वार करते हुए महिला को पकड़ लिया व उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। महिला ने जब खुद को छुड़ाने का प्रयास किया, तो आरोपी ने उसे और उसके पति को जान से मारने की धमकी देकर डराने की कोशिश की। गनीमत रही कि पीड़िता की जेठानी भी कुछ ही दूरी पर चारा काट रही थी। महिला की चीख-पुकार सुनकर जेठानी तुरंत मौके पर पहुंची। अपनी ओर किसी को आता देख आरोपी घबरा गया और महिला को छोड़ वहां से फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते ही सदर थाना पुलिस ने कार्रवाई शुरू की। थाना प्रभारी सुंदरपाल ने मंगलवार को बताया कि पीड़िता की शिकायत के आधार पर आरोपी शिवजी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस की टीमें आरोपी की गिरफ्तारी के लिए दबिश दे रही हैं, उसे जल्द ही सलाखों के पीछे भेजा जाएगा।' इस घटना के बाद से गांव में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर रोष व्याप्त है। पुलिस ने पीड़िता को निष्पक्ष जांच और सख्त कार्रवाई का भरोसा दिया है।

मोदी व नायब सरकार के लिए नागरिकों के हित सर्वोपरि : मोहनलाल बड़ौली

अनंत ज्ञान

चंडीगढ़। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा है कि सफीदों विधानसभा में चार अप्रैल को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की विशाल रैली होगी।

इस रैली में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन करेंगे और क्षेत्र को कई महत्वपूर्ण सौगातें भी देंगे। यह रैली इलाके के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली मंगलवार को पिल्लूखेड़ा मंडी में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। इससे पहले उन्होंने सफीदों हलके में विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमो में भी शामिल हुए। मोहन लाल बड़ौली ने अंतरराष्ट्रीय परिस्थितयों और खाड़ी देशों में बनी युद्ध जैसी स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि इस वैश्विक संकट के बीच देश की ऊर्जा सुरक्षा मोदी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। बड़ौली ने कहा कि प्रदेश में गैस सुचारू रूप से उपभोक्ताओं को मिल रही है। पीएम मोदी ने संसद में देशवासियों खासकर किसानों को भी आश्वस्त किया है कि किसी भी तरह की परेशानियां नहीं आने दी जाएगी। मोदी सरकार वैश्विक शांति और अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में भाजपा सरकार हरियाणा के समग्र विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी जो संकल्प लेती है उसे संकल्पित होकर पूरा करती है। नायब सैनी सरकार प्रदेश को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बड़ौली ने कहा कि हरियाणा की नायब सैनी सरकार पारदर्शिता से काम कर रही है। हरियाणा देश का ऐसा पहला राज्य है जहां किसानों की 24 फसलों को एमएसपी पर खरीदा जा रहा है। युवाओं को बिना पर्ची और बिना खर्ची के मैरिट के आधार पर सरकारी नौकरियां मिल रही है। उन्होंने कहा कि गरीब, महिलाएं, युवा और किसानों को समृद्ध और सशक्त करना भाजपा सरकार का संकल्प है। बड़ौली ने कहा कि चार अप्रैल को होने वाली मुख्यमंत्री नायब सैनी की रैली इस क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक रैली साबित होगी।

गैस की कालाबाजारी पर छापेमारी, 32 सिलेंडर जब्त

अनंत ज्ञान, चंडीगढ़। खाद्य व नागरिक आपूर्ति विभाग की टीम ने सेक्टर-12 स्थित निजी अस्पताल के सामने ओपन पार्किंग में छापेमारी कर 32 गैस सिलेंडर जब्त किए। विभाग को गुप्त सूचना मिली थी कि उक्त स्थान पर घरेलू गैस सिलेंडरों की अवैध रूप से कालाबाजारी की जा रही है। सूचना मिलते ही एएफएसओ सुनील कुमार, निरीक्षक जितेंद्र कुमार और जोगेंद्र की संयुक्त टीम का गठन किया गया, जिसने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की। जिला खाद्य व नागरिक आपूर्ति विभाग डॉ. अशोक रावत ने मंगलवार को बताया कि छापेमारी के दौरान टीम ने 31 भरे हुए घरेलू सिलेंडर, एक खाली सिलेंडर, दो पांच किलो के खाली सिलेंडर तथा एक दस किलो का भरा हुआ सिलेंडर बरामद किया। टीम ने मौके पर पाया कि यहां भरे बड़े सिलेंडर से छोटे सिलेंडर में गैस भरी जा रही थी। सभी सिलेंडरों को मौके से जब्त कर लिया गया। इस मामले में आरोपी निरंजन, निवासी लक्ष्मण विहार, को मौके से हिरासत में लिया गया है। संबंधित पुलिस थाना द्वारा आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है। डॉ. अशोक रावत ने कहा कि आवश्यक वस्तुओं, विशेषकर घरेलू गैस सिलेंडरों की कालाबाजारी किसी भी स्थिति में सहन नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की अवैध गतिविधियां न केवल कानून का उल्लंघन हैं, बल्कि आम नागरिकों के अधिकारों का भी हनन करती हैं। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन ऐसे मामलों को लेकर पूरी तरह सतर्क है और लगातार निगरानी रखी जा रही है।

शक्तिपीठ नयना देवी मंदिर की भजन संध्या में पंजाबी गायक रोशन प्रिंस ने लगाई हाजिरी

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री नयना देवी मंदिर में चल रहे नवरात्र महोत्सव के दौरान आयोजित भजन संध्या में मशहूर पंजाबी गायक रोशन प्रिंस ने अपनी हाजिरी लगाकर श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर कर दिया।

मंदिर न्यास द्वारा नवरात्र के पावन अवसर पर प्रतिदिन भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अलग-अलग कलाकार माता के भजनों की प्रस्तुति दे रहे हैं। इसी क्रम में पांचवें नवरात्र की रात्रि को रोशन प्रिंस ने माता रानी के चरणों में अपनी प्रस्तुति दी। मंदिर पहुंचने पर एसडीएम व मंदिर न्यास के अध्यक्ष धर्मपाल ने उन्हें माता की चुनरी भेंट कर सम्मानित किया, जबकि मंदिर पुजारी हरीश शर्मा ने उन्हें प्रसाद प्रदान किया।

पत्रकारों से बातचीत में रोशन प्रिंस ने कहा कि मंदिर न्यास द्वारा आयोजित यह भजन संध्या एक सराहनीय पहल है, जो श्रद्धालुओं को भक्ति के रंग में रंग रही है। उन्होंने कहा कि माता के दरबार में हाजिरी लगाना उनके लिए सौभाग्य की बात है और उन्होंने माता रानी से सभी भक्तों के सुख-समृद्धि की कामना की।

सीएम की विकास रैली से क्षेत्र के विकास को मिलेगी नई दिशा : विधायक रामकुमार

अनंत ज्ञान

चंडीगढ़। सफीदों विधानसभा क्षेत्र के विधायक रामकुमार गौतम ने कहा कि सरकार प्रदेश के हर क्षेत्र के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है और चार अप्रैल को रैली के माध्यम से सफीदों क्षेत्र को भी कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लाभ मिलेगा। यह रैली हलका सफीदों के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

सभी कार्यकर्ता व जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्रों की प्रमुख समस्याओं और मांगों को चिन्हित कर उनकी एक व्यवस्थित सूची तैयार करके उन्हें सौंपें, ताकि यह सूची रैली के दौरान मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके और क्षेत्र की आवश्यकताओं को प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जा सके। विधायक रामकुमार गौतम मंगलवार को विधानसभा के गांवों टीटोखेड़ी, करसिंधु, अंटा, बड़ौद, बसीनी, खातला, भुसलाना, डिडवाड़ा, निम्नाबाद, साहनपुर, सरनाखेड़ी सहित लगभग एक दर्जन गांवों में पहुंच कर गांववासियों से मांग पत्र लिया और आगामी चार अप्रैल को सफीदों की नई अनाजमंडी में मुख्यमंत्री नायब सैनी की विकास रैली का निमंत्रण दिया।

विधायक रामकुमार गौतम ने कहा कि सभी के सहयोग और सामूहिक प्रयासों से यह रैली न केवल सफल होगीए बल्कि क्षेत्र के विकास को भी नई दिशा देगी। मुख्यमंत्री द्वारा इस अवसर पर क्षेत्र के लिए करोड़ों रुपये की विकासात्मक परियोजनाओं की सौगात दी जाएगी। सरकार का उद्देश्य प्रत्येक गांव की व्यवहारिक मांगों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करना है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों से अधिक से अधिक लोगों को रैली स्थल तक लाने की व्यवस्था करें ताकि यह कार्यक्रम ऐतिहासिक और सफल बन सके।

विधायक रामकुमार गौतम ने कहा कि सरकार बिना किसी भेदभाव के सभी गांवों में विकास कार्य करवा रही है और भविष्य में भी इस दिशा में कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी। यदि कहीं कोई कार्य अधूरा है या सुधार की आवश्यकता है तो उसे प्राथमिकता से पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा विकासकार्यों को और अधिक गति प्रदान करने के लिए लगातार नई-नई योजनाए बनाई जा रही है।

कांग्रेस नेताओं में मुख्यमंत्री बनने का भूत सवार : बृजेंद्र

अनंत ज्ञान

चंडीगढ़। पूर्व सांसद व कांग्रेसी नेता बृजेंद्र सिंह ने कहा कि प्रदेश के सारे कांग्रेस नेताओं पर मुख्यमंत्री बनने का भूत चढ़ा हुआ है, जब तक यह भूत नहीं उतरेगा, भाजपा से लड़ाई नहीं लड़ पाएंगे।

बृजेंद्र सिंह मंगलवार को अपनी सद्भावना यात्रा के सिरसा विधानसभा क्षेत्र में पहुंचने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। बृजेंद्र सिंह जिला बार एसोसिएशन में भी पहुंचे, जहां बार एसोसिएशन के प्रधान गंगा राम ढाका ने स्वागत किया। बृजेंद्र सिंह ने सद्भावना यात्रा पर पार्टी के ही कुछ नेताओं द्वारा दूरी बनाने के सवाल पर कहा कि कोई नेता चाहे आया या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह यात्रा हरियाणा के राजनीतिक मानचित्र पर स्थापित हो गई है और वे आमजन के लिए सडक़ पर लड़ाई लड़ रहे हैं। पार्टी नेता राहुल गांधी से मुलाकात के सवाल पर उन्होंने कहा कि यात्रा के बारे में राहुल गांधी से चर्चा हुई है और उन्हें सब पता है कि यात्रा में किस-किस की भागीदारी हो रही हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि वे चुगली करने के आदी नहीं हैं। राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस के कुछ विधायकों द्वारा क्रॉस वोटिंग के सवाल पर उन्होंने कहा कि पार्टी के एक चौथाई विधायकों द्वारा जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से दगा किया है उसके पीछे वजह क्या है और वे विरोध में क्यों हैं, इसकी जिम्मेवारी भी पार्टी के जिम्मेदार लोगों को लेनी चाहिए। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि साधारण से चुनाव में भी भाजपा ने जानबूझकर तीसरा उम्मीदवार खड़ा किया, क्योंकि औछी राजनीति करना भाजपा की आदत बन गई है। भाजपा को पता था कि बिकने वाले लोग खड़े हैं और भाजपा हमेशा खरीददारी के लिए पैसों के बोरियों के मुंह खोल देती हैं। इस सद्भावना यात्रा में जिलाध्यक्ष संतोष बैनीवाल, राम कुमार खैरेकां, पूर्व डायरेक्टर प्रेम शर्मा, आनंदवीर गिल्लाखेड़ा, विजय खैरेकां सहित अनेक पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे।

टीबी उन्मूलन की राह पर तेजी से अग्रसर ऊना

अनंत ज्ञान

ऊना। स्वास्थ्य व परिवार कल्याण विभाग जिला ऊना द्वारा क्षेत्रीय अस्पताल ऊना में जिला स्तरीय विश्व क्षय रोग दिवस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अतिरिक्त उपायुक्त महेंद्र पाल गुर्जर ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने इस जिला स्तरीय विश्व क्षय रोग दिवस के उपलक्ष्य पर निक्षय वाहन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। उन्होंने कहा कि जिला ऊना क्षय रोग नियंत्रण के लिए अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिला में आशा वर्करों के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सरकार के दिशा निर्देशों के अंतर्गत विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसमें टीमें घर-घर जाकर लोगों को क्षय रोग के बारे में जागरूक किया जाएगा और क्षय रोग के संभावित रोगियों का क्षय रोग की जांच के लिए चयनित कर, संभावित रोगियों के एक्सरे जांच व बलगम के नमूने गांव-गांव में निक्षय वाहन के माध्यम एकत्रित किए जाएंगे। अतिरिक्त उपायुक्त ने कहा कि जिला में टीबी जांच की दर में बड़े पैमाने पर बढ़ोतरी की गई है और यह प्रसन्नता का विषय है जिला ऊना टीबी मुक्त भारत के तहत सभी श्रेणियों में नम्बर वन पर है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में जिले के पांच अस्पतालों में अत्याधुनिक तकनीक से क्षय रोग की जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि क्षय रोगियों की शीघ्र पहचान, समयबद्ध उपचार और पोषण सहायता को प्राथमिकता देते हुए विभाग लगातार निगरानी कर रहा है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संजय मनकोटिया ने बताया कि विश्व क्षय रोग दिवस वर्ष 1982 से हर साल 24 मार्च को मनाया जाता है।

इसका उद्देश्य टीबी (तपेदिक) पर नियंत्रण की दिशा में हासिल की गई उपलब्धियों को याद दिलाना और उनका सम्मान करना है। उन्होंने जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ विशाल ठाकुर व क्षयरोग नियंत्रण के लिए कार्य कर रहे समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को जिला ऊना में क्षयरोग कार्यक्रम में बेहतर सेवाएं देने के लिए बधाई दी। उन्होंने बताया की जिला ऊना ने वर्ष 2025 में 31029 संभावित रोगियों की जांच की गई व जिला में 796 क्षय रोगी दर्ज किए गए जिनका उपचार निशुल्क विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों के अंतर्गत किया जा रहा है। उन्होंने क्षय रोग नियंत्रण के लिए आमजन को इस अभियान में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया ताकि क्षय रोगियों की जल्द से जल्द पहचान की जा सके व शीघ्र अति शीघ्र उपचार भी सुनिश्चित किया जा सके और किसी भी रोगी की जान को बचाया जा सके जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ. विशाल ठाकुर ने विश्व टीबी दिवस के अवसर पर बताया कि, हम टीबी उन्मूलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हैं और टीबी मुक्त भारत की दिशा में सामूहिक प्रयासों को सुदृढ़ करते हैं। यह दिन शीघ्र निदान, संपूर्ण उपचार, पोषण संबंधी सहायता और सामुदायिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करता है। निक्षय मित्र जैसी पहलों के माध्यम से व्यक्तियों और संगठनों को टीबी रोगियों को पोषण और मनोसामाजिक सहायता प्रदान करके उनका समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उपचार के परिणाम और स्वास्थ्य लाभ में सुधार होता है।

स्पोर्ट्स विंडो

आईपीएल : आकाशदीप और एडवर्ड्स की जगह दुबे और पेन विकल्प

एजेंसी, नई दिल्ली। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने 28 मार्च से शुरू हो रहे आईपीएल से पहले चोटिल आकाश दीप और जैक एडवर्ड्स की जगह सौरभ दुबे और डेविड पेन को शामिल किया है। भारतीय तेज गेंदबाज आकाश दीप चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हैं। वह बेंगलुरू में उत्कृष्टता केंद्र में बीसीसीआई की मेडिकल टीम की देखरेख में रहेंगे। आईपीएल मीडिया बयान में कहा गया,'' बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सौरभ केकेआर में आकाश की जगह लेंगे। वह 30 लाख रुपए में केकेआर से जुड़ेंगे।'' विदर्भ के 28 वर्ष के सौरभ ने अभी आईपीएल में पदार्पण नहीं किया है। वह पहले एसआरएच का हिस्सा थे। इस बीच इंग्लैंड के तेज गेंदबाज पेन को एसआरएच ने जैक एडवर्ड्स की जगह लिया है जो पैर की चोट के कारण बाहर हैं। उन्हें पहले एसआरएच ने तीन करोड़ रूपये में खरीदा था। वह डेढ करोड़ रुपए में एसआरएच से जुड़ेंगे। (अनंत ज्ञान)

इंडोर चैंपियनशिप में नया अनुभव, नई चुनौती

राष्ट्रीय इंडोर एथलेटिक्स में खिलाड़ियों अधिकारियों ने सीखा तालमेल का पाठ

एजेंसी, भुवनेश्वर। देश में पहली बार आयोजित राष्ट्रीय इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप का शुरुआती सत्र खिलाड़ियों और अधिकारियों के लिए सीखने का अहम मौका बनकर उभरा। नए माहौल, घुमावदार 200 मीटर ट्रैक और अलग तकनीकी परिस्थितियों के बीच सभी को खुद को ढालना पड़ा। अंडर-20 शॉटपुट में स्वर्ण जीतने वाले ओमकार प्रसाद नंदा ने फिसलन भरे लकड़ी के 'थ्रोइंग सर्कल' पर संतुलन बनाए रखने के लिए पुराने जूतों का इस्तेमाल किया। उनका मानना है कि इंडोर सर्कल आउटडोर के सीमेंट सर्कल से अलग होता है, जहां पकड़ बनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। वहीं, कर्नाटक की धाविका सी प्रियंका ने सीनियर महिला 3000 मीटर में स्वर्ण जीतते हुए बताया कि 200 मीटर का अधिक घुमावदार ट्रैक एथलीट्स की रणनीति और धैर्य की कड़ी परीक्षा लेता है। अधिकारियों के लिए भी यह आयोजन नया अनुभव रहा। इंडोर स्पर्धाओं में मौसम या हवा का असर नहीं होता, लेकिन सीमित जगह और अलग माप तकनीक जैसी चुनौतियां सामने आती हैं। कुल मिलाकर, यह चैंपियनशिप भारतीय एथलेटिक्स के लिए नए दौर की शुरुआत का संकेत है।

युकी भांबरी-माइकल वीनस मियामी ओपन के पहले दौर में हारे

एजेंसी, मियामी। भारत के युकी भांबरी और न्यूजीलैंड के उनके जोड़ीदार माइकल वीनस मियामी ओपन के पहले दौर में जॉन पैट्रिक स्मिथ और सैंडर्स एरेंड्स से हारकर बाहर हो गए। युकी और वीनस को अंतिम 32 के मुकाबले में आस्ट्रेलिया

के स्मिथ और नीदरलैंड के एरेड्स ने एक घंटे 52 मिनट में 4-6, 7-5, 15-13 से हराया। इन दोनों जोड़ियों के बीच यह पहला ही मुकाबला था। युकी इस महीने की शुरुआत में आंद्रे गोरानसन के साथ इंडियन वेल्स के सेमीफाइनल में पहुंचे थे। (अनंत ज्ञान)

एंड्रिया बोटेज का खूबसूरत अंदाज

कनाडा। एंड्रिया बोटेज एक कनाडाई शतरंज खिलाड़ी, कंटेंट क्रिएटर, डीजे और ट्विच स्ट्रीमर हैं। वह चैंपियन शतरंज खिलाड़ी एलेक्जेंड्रा बोटेज की बहन भी हैं।

आईपीएल से पहले राजस्थान रॉयल्स की टीम को मिला नया मालिक

15 हजार करोड़ में बिकी राजस्थान रॉयल्स

एजेंसी, नई दिल्ली

भारतीय मूल के अमेरिकी बिजनेसमैन ने खरीदी टीम, 18 साल में 24 गुना बढ़ी कीमत

आईपीएल की पहली चैंपियन राजस्थान रॉयल्स को नए मालिक मिल गए हैं। पिछले कुछ महीनों से चली आ रही प्रक्रिया के बाद आखिरकार 1.63 बिलियन डॉलर यानि करीब 15,289 करोड़ रुपए की रिकॉर्ड बोली के साथ राजस्थान रॉयल्स की बिक्री फाइनल हो गई है। भारतीय मूल के अमेरिकी बिजनेसमैन काल सोमानी और उनके कॉन्सोर्टियम ने फ्रेंचाइजी के लिए ये सबसे बड़ी बोली लगाई है, जिसे मंजूर कर लिया गया है। साल 2008 में जब राजस्थान रॉयल्स को खरीदा गया था, तब इसकी कीमत सिर्फ 67 मिलियन डॉलर थी, जो उस समय लगभग 260-270 करोड़ रुपए के आसपास बैठती थी। अगर उसी 67 मिलियन डॉलर को आज की वैल्यू में देखा जाए, तो यह करीब 628 करोड़ रुपए बनता है। अब 2026 में यही फ्रेंचाइजी करीब 1.63 बिलियन डॉलर (लगभग 15,289 करोड़ रुपए) में बिकी है। यानी, मौजूदा वैल्यू की तुलना 2008 की आज की कीमत (628 करोड़ रुपए) से करें, तो राजस्थान रॉयल्स की कीमत में करीब 24 गुना का उछाल आया है।

शेन वॉर्न की कप्तानी में राजस्थान रॉयल्स ने आईपीएल का पहला सीजन 2008 में जीता था, लेकिन उसके बाद टीम का प्रदर्शन नीचे जाने लगा। उसके बाद से टीम सिर्फ एक बार 2022 में फाइनल में पहुंची है। तब गुजरात टाइटंस के खिलाफ फाइनल मुकाबले में उसे हार मिली। फ्रेंचाइजी को 2016 और 2017 में बैन भी होना पड़ा था। (अनंत ज्ञान)

कौन हैं काल सोमानी?

काल सोमानी टेक्नोलॉजी और निवेश जगत का बड़ा नाम हैं। उन्होंने एड-टेक, डेटा प्राइवेसी, एआई गवर्नेंस और स्पोर्ट्स टेक जैसे क्षेत्रों में कई वैश्विक कंपनियां खड़ी की हैं। इस डील के साथ उनका खेल जगत में निवेश और मजबूत हो गया है। काल सोमानी पहले से ही राजस्थान रॉयल्स में इन्वेस्टर थे। 2021 में उन्होंने फ्रेंचाइजी में एंट्री ली थी। सोमानी ने तब कहा था- हमें इस निवेश में बहुत बड़ी संभावना दिख रही है और हम आईपीएल के भविष्य को लेकर उत्साहित हैं।

आईसीसी महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग

मंधाना दूसरे स्थान पर कायम 14वें स्थान पर पहुंची हरमनप्रीत

एजेंसी, दुबई

भारत की सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने आईसीसी महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय में बल्लेबाजों की रैंकिंग में अपना दूसरा स्थान बरकरार रखा है जबकि कप्तान हरमनप्रीत कौर मंगलवार को यहां जारी नवीनतम रैंकिंग में 14वें स्थान पर पहुंच गईं। मंधाना के अलावा आक्रामक बल्लेबाज शेफाली वर्मा शीर्ष 10 में शामिल दूसरी भारतीय खिलाड़ी है। उन्होंने अपना छठा स्थान बरकरार रखा है, जबकि जेमिमा रोड्रिग्स संयुक्त 11वें स्थान पर बनी हुई हैं।

गेंदबाजी विभाग में स्पिन ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा एक पायदान ऊपर चढ़कर तीसरे स्थान पर पहुंच गईं, जबकि तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ठाकुर छठे स्थान पर बनी हुई हैं। तेज गेंदबाज अरुंधति रेड्डी शीर्ष 10 से बाहर होकर 11वें स्थान पर खिसक गई है। दीप्ति ऑलराउंडरों की रैंकिंग में भी तीसरे नंबर पर पहुंच गई हैं।

ऑस्ट्रेलिया की सलामी बल्लेबाज जॉर्जिया वोल पहली बार बल्लेबाजी रैंकिंग के शीर्ष 10 में शामिल हुईं, जबकि न्यूजीलैंड की स्टार सोफी डिवाइन के दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लगातार दो अर्धशतकों ने उन्हें सूची में दो स्थान ऊपर18वें स्थान पर पहुंचने में मदद की।

रवांडा की 15 वर्षीय फैनी उटागुशिमानिंदे टी20 अंतरराष्ट्रीय में अपने पदार्पण मैच में (घाना के खिलाफ) शतक लगाने वाली दुनिया की पहली महिला खिलाड़ी बनी। यही नहीं वह पुरुष और महिला क्रिकेट में खेल के सबसे छोटे प्रारूप में शतक लगाने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी भी बनी। इससे उन्होंने 66वें स्थान पर रैंकिंग में प्रवेश किया है। (अनंत ज्ञान)

साउथ अफ्रीका सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान

पहली बार 2 खिलाड़ियों को टीम में मिली जगह

एजेंसी, नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के शुरू होने के दिन जैसे-जैसे नजदीक आ रहा है, वैसे-वैसे और रोमांच बढ़ता जा रहा है। इस लीग के चढ़ते रोमांच के बीच भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारत और साउथ अफ्रीका के बीच होने वाले टी20 सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए साउथ अफ्रीका का दौरा करने वाली है, जिसके लिए टीम इंडिया की घोषणा की गई है। इस 15 सदस्यीय टीम में 2 खिलाड़ियों को पहली बार जगह मिली है, जबकि इस टीम की कमान हरमनप्रीत कौर के हाथों में ही होगी। भारतीय महिला क्रिकेट टीम को अप्रैल 2026 में साउथ अफ्रीका का दौरा करना है, जिसके लिए टीम का चयन किया गया है। इस दौरे पर 2 खिलाड़ियों कश्वी गौतम और अनुष्का शर्मा को पहली बार टी20 टीम में जगह मिली है। इन दो नए खिलाड़ियों के अलावा साउथ अफ्रीका दौरे की टी20 टीम में बाकी पुराने खिलाड़ी ही शामिल हैं। (अनंत ज्ञान)

भारतीय टीम

हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, जेमिमा रौड्रिग्स, दीप्ति शर्मा, रिचा घोष, अरुंधति रेड्डी, रेणुका ठाकुर, क्रांति गौड़, श्रीचरणी, श्रेयांका पाटिल, काशवी गौतम, भारती फुलमाली, उमा छेत्री, अनुष्का शर्मा।

विवादों में घिरे आरसीबी के तेज गेंदबाज यश दयाल आईपीएल में नहीं खेलेंगे

एजेंसी, बेंगलुरु

विवादों में घिरे तेज गेंदबाज यश दयाल आगामी आईपीएल सत्र में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम से नहीं जुड़ेंगे, लेकिन फ्रेंचाइजी के साथ उनका अनुबंध जारी रहेगा। यह जानकारी टीम के क्रिकेट निदेशक मो बोबाट ने मंगलवार को दी।

इस 28 वर्षीय खिलाड़ी पर कथित यौन शोषण के दो मामले दर्ज हैं। इसमें एक मामला नाबालिग से जुड़ा हुआ है। उन्होंने आरसीबी के लिए 2025 आईपीएल फाइनल में खेलने के बाद से कोई प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है। आरसीबी ने उस फाइनल में जीत दर्ज कर पहली बार खिताब अपने नाम किया था।

सत्र की शुरुआत से पहले आयोजित प्रेस वार्ता में बोबाट ने कहा, 'मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूं कि यश टीम के साथ नहीं जुड़ेंगे। वे इस समय व्यक्तिगत परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। हमने अब तक उनका पूरा समर्थन किया है और यह खिलाड़ियों को रिटेन या रिलीज करने के फैसले में भी दिखता है।'

उन्होंने कहा, 'हम उन्हें टीम में बनाए रखना चाहते थे और वे अनुबंध के तहत बने हुए हैं। निकट भविष्य में भी उनका अनुबंध जारी रहेगा।' हाल ही में विवाह करने वाले दयाल पर एक नाबालिग सहित दो महिलाओं द्वारा यौन शोषण के आरोप लगाए गए हैं। बोबाट ने बताया कि फ्रेंचाइजी ने उनके साथ संवाद बनाए रखा है।

उन्होंने कहा, 'हम नियमित रूप से उनसे संपर्क में हैं। आज भी मेरी उनसे बात हुई, लेकिन फिलहाल यह तय किया गया है कि उनके और फ्रेंचाइजी, दोनों के हित में यही है कि वे टीम से न जुड़ें।' बोबाट ने स्पष्ट किया कि वह इस मामले पर फिलहाल और कोई टिप्पणी नहीं करेंगे। दयाल को हालांकि फ्रेंचाइजी का समर्थन जारी रहेगा और उनसे संवाद बना रहेगा। बोबाट ने टीम संयोजन पर कहा कि आरसीबी के पास दयाल की कमी पूरी करने के लिए पर्याप्त विकल्प मौजूद हैं। उन्होंने रासिख सलाम, अभिनंदन सिंह और मंगेश यादव का उल्लेख करते हुए कहा कि ये तीनों अच्छे विकल्प हैं और तैयारी शिविर में शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। (अनंत ज्ञान)

बिलासपुर के मनोज ठाकुर 'खेलो इंडिया' ट्राइबल गेम्स के नोडल अधिकारी नियुक्त

अनंत ज्ञान

ब्यूरो, बिलासपुर। युवा सेवाएं एवं खेल विभाग बिलासपुर के कोच एवं राज्य खेल छात्रावास के प्रभारी अंतरराष्ट्रीय हैंडबॉल कोच मनोज ठाकुर खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स के नोडल अधिकारी नियुक्त हुए। युवा सेवाएं एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 25 अप्रैल से 3 मार्च तक छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित राष्ट्रीय खेलो ट्राइबल इंडिया का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें हिमाचल प्रदेश के विभिन्न खेलों के खिलाड़ी भाग ले रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में मनोज ठाकुर बतौर हिमाचल प्रदेश के राज्य नोडल अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं देंगे। मनोज ठाकुर ने खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में बतौर राज्य नोडल अधिकारी चयन हेतु युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के निदेशक शिवम प्रताप सिंह, अतिरिक्त निदेशक हितेश आजाद एवं हेडक्वार्टर खेल अधिकारी अनुराग वर्मा का आभार प्रकट किया है।

खेलो इंडिया हिमाचल प्रदेश के राज्य नोडल अधिकारी मनोज ठाकुर ने बताया कि पहली बार आयोजित हो रहे नेशनल खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में स्विमिंग, वेट लिफ्टिंग, आर्चरी, फुटबॉल, हाकी इत्यादि खेलो का आयोजन भारत देश के ट्राइबल खिलाड़ियों के लिए किया जा रहा है।

पिछले तीन महीने मेरी कप्तानी का सबसे कठिन दौर रहा: बेन स्टोक्स

एजेंसी, लंदन

इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स ने पिछले तीन महीने को अपनी कप्तानी का सबसे कठिन दौर बताया, लेकिन यह भी दोहराया कि वह कोच ब्रेंडन मैकुलम के साथ मिलकर टीम को फिर से तैयार करने के लिये प्रतिबद्ध हैं। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने पुष्टि की कि एशेज सीरीज 1.4 से हारने के बावजूद स्टोक्स, मैकुलम और प्रबंध निदेशक रॉब की पद पर बने रहेंगे।

स्टोक्स ने अपनी, की और मैकुलम की तस्वीर इंस्टाग्राम पर साझा करते हुए एक भावुक खुले पत्र में लिखा,''इंग्लैंड का कप्तान बनना एक खिलाड़ी के लिए सबसे बड़ा सम्मान है और मैं इसे हलके में नहीं लेता । इसके अपने उतार-चढ़ाव हैं। यह आपको मुस्कुराने के मौके देता है तो रूलाता भी है।''

उन्होंने लिखा,''कई बार लगता है कि आपके जीवन में बस यही चीज बची है। पिछले तीन महीने कप्तानी के मेरे सफर का सबसे कठिन दौर रहा। इसने कई तरह से मेरी परीक्षा ली और मुझे यकीन है कि हर कप्तान के जीवन में ऐसा दौर आता है।'' उन्होंने कहा कि वह मैकुलम और की के साथ मिलकर फिर टीम तैयार करेंगे।

उन्होंने कहा,''बाज, रॉब और मेरे भीतर टीम को आगे ले जाने की इच्छा और जुनून है । हम अपना सब कुछ झोंक देंगे। हमें पता है कि हमने गलतियां की है लेकिन अब उनसे सबक लेकर आगे बढ़ेंगे। सफलता से ज्यादा आप असफलता से सीखते हैं।'' (अनंत ज्ञान)

सैफ अंडर-20 चैंपियनशिप के लिए मालदीव पहुंची भारतीय फुटबॉल टीम

एजेंसी, माले

भारत की अंडर-20 पुरुष फुटबॉल टीम सैफ चैंपियनशिप में भाग लेने यहां पहुंच गई है और पहले मैच में वीरवार को पाकिस्तान से खेलेगी। इस मैच के बाद ग्रुप बी में भारतीय टीम का सामना 28 मार्च को बांग्लादेश से होगा। दोनों मैच नेशनल स्टेडियम में खेले जाएंगे। ग्रुप-ए में मालदीव, श्रीलंका, नेपाल और भूटान की टीमें हैं। दोनों ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल खेलेंगी जो एक अप्रैल को होगा। फाइनल तीन अप्रैल को खेला जाएगा। भारत के अंडर 20 मुख्य कोच महेश गवली ने कहा,''यह काफी अहम और प्रतिष्ठित टूर्नामेंट है। सभी टीमें काफी प्रतिस्पर्धी है और हमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।'' (अनंत ज्ञान)

भारतीय टीम

गोलकीपर : अल्साबित एसटी, प्रणव सुंदरमन, सूरज सिंह
डिफेंडर : बूंगसोन सिंह टी, जोडरिक अब्रांचेस, करीश सोराम, मालेमंगांबा सिंह थोकचोम, मोहम्मद कैफ, रोशन सिंह थांगजाम, उशाम सिंह , याइफारेम्बा चिंगाखाम
मिडफील्डर : अनिकेत यादव, डैनी मेतेइ लैशराम, गुरनाज सिंह ग्रेवाल, मोहम्मद अरबाश, रिषिकांता मेतेइ लैशराम, रिषि सिंह एन
फॉरवर्ड : उमंग दोडुम, प्रशान जाजो, रोहेन सिंह, विशाल यादव, सैमसन ए, तनबीर डे।

आरसीबी ने भीड़ प्रबंधन सुधारने में सात करोड़ का किया निवेश

एजेंसी, बेंगलुरु। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में दर्शकों की सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए करीब 7 करोड़ रुपए का निवेश किया है। यह कदम 4 जून 2025 को हुए जश्न के दौरान भगदड़ की घटना के बाद उठाया गया, जिसमें 11 लोगों की जान गई थी।

आरसीबी के सीईओ राजेश मेनन के अनुसार, स्टेडियम में एआई आधारित सीसीटीवी सिस्टम, बैगेज स्कैनर और एक केंद्रीकृत कमांड सेंटर स्थापित किया गया है, जो रियल-टाइम निगरानी और त्वरित अलर्ट प्रदान करेगा। इन कैमरों की फुटेज तक पुलिस की भी सीधी पहुंच होगी, जिससे सुरक्षा और नियंत्रण मजबूत होगा। नए समझौते के तहत कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) मुख्य आयोजक होगा और सभी मानक संचालन प्रक्रियाओं को लागू करेगा। प्रवेश-निकास व्यवस्था सुधारी गई है, गेट समय से पहले खोले जाएंगे तथा दर्शकों को मेट्रो और प्री-बुक्ड पार्किंग की सुविधा दी जाएगी, जिससे मैच के दौरान भीड़ प्रबंधन अधिक सुचारु रहेगा। (अनंत ज्ञान)

पहल

एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में 11 सीटें रहेंगी हमेशा खाली

बेंगलुरु भगदड़ के पीड़ितों को दी अनोखी श्रद्धांजलि

एजेंसी, बेंगलुरु

फाइल फोटो

कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में पिछले साल हुए दर्दनाक भगदड़ हादसे में जान गंवाने वाले 11 लोगों की स्मृति में एक अनूठी पहल की गई है। एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में अब हर मैच के दौरान 11 सीटें हमेशा खाली रखी जाएंगी। इसके साथ ही स्टेडियम परिसर में एक स्मारक पट्टिका स्थापित की जाएगी और हर मुकाबले से पहले एक मिनट का मौन भी रखा जाएगा।

यह निर्णय रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ ने संयुक्त रूप से लिया है। यह पहल 4 जून 2025 को स्टेडियम के बाहर हुई भगदड़ में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि देने के उद्देश्य से की जा रही है। उस हादसे में 11 लोगों की मौत हुई थी, जबकि 50 से अधिक लोग घायल हुए थे। घटना उस समय हुई थी जब आरसीबी की आईपीएल में पहली जीत के बाद बड़ी संख्या में प्रशंसक जश्न मनाने स्टेडियम के बाहर जुट गए थे। भीड़ नियंत्रण की कमी के चलते हालात बिगड़ गए और भगदड़ मच गई। नए फैसले के तहत, स्टेडियम में निर्धारित 11 सीटें किसी भी मैच, चाहे वह आईपीएल हो या अंतरराष्ट्रीय मुकाबला, के लिए कभी बेची नहीं जाएंगी। इसके अलावा, स्टेडियम के प्रवेश द्वार के पास एक स्मारक पट्टिका लगाई जाएगी, जहां पीड़ितों के नाम अंकित होंगे।

केएससीए के अध्यक्ष वेंकटेश प्रसाद ने कहा कि यह कदम केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का प्रतीक भी है। उनके मुताबिक, 'इस घटना को भुलाया नहीं जा सकता, लेकिन इससे सीख लेकर आगे बढ़ना जरूरी है। पीड़ितों को सम्मान देना हमारा कर्तव्य है। बताया जा रहा है कि यह स्मारक इंग्लैंड के हिल्सबरो मेमोरियल से प्रेरित होगा, जहां 1989 की त्रासदी में मारे गए फुटबॉल प्रशंसकों की याद में स्थायी स्मारक बनाया गया था। इस बीच, हादसे के बाद सुरक्षा कारणों से कुछ समय के लिए स्टेडियम में बड़े आयोजनों पर रोक लगा दी गई थी। जांच समिति ने इसे अस्थायी रूप से असुरक्षित घोषित किया था। हालांकि, हाल ही में कर्नाटक सरकार ने सुरक्षा सुधारों के बाद यहां फिर से मैचों के आयोजन की अनुमति दे दी है।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड द्वारा जारी आईपीएल-2026 के शुरुआती शेड्यूल के अनुसार, 28 मार्च को इसी स्टेडियम में आरसीबी और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच मुकाबला खेला जाएगा। यह पहल न केवल खेल जगत में संवेदनशीलता का उदाहरण है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि बड़ी घटनाओं के बाद संस्थाएं जिम्मेदारी के साथ आगे आ सकती हैं। (अनंत ज्ञान)

अभ्यास मैच के दौरान 11 नंबर की जर्सी पहनेंगे आरसीबी के खिलाड़ी

आरसीबी के खिलाड़ी पिछले साल टीम की जीत के जश्न के दौरान भगदड़ में मारे गए 11 लोगों की याद में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी सत्र में मैच से पहले अभ्यास के दौरान 11 नंबर की जर्सी पहनेंगे। आरसीबी ने पिछले साल पहली बार आईपीएल ट्रॉफी जीती थी। इस जीत के जश्न के लिए चार जून को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में समारोह का आयोजन किया गया था। सुरक्षा की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण भगदड़ मच गई जिसमें 11 लोगों की जान चली गई थी। इसके बाद आरसीबी को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था। आरसीबी के सीईओ राजेश मेनन ने मंगलवार को पत्रकारों से कहा, ''मैच वाले दिन खिलाड़ी अभ्यास के दौरान 11 नंबर की जर्सी पहनेंगे। मैच के दौरान वे अपनी जर्सी नंबर में ही नजर आएंगे। अभ्यास के दौरान सभी खिलाड़ियों की पीठ पर जर्सी नंबर 11 लिखा होगा।''

अनंत ज्ञान
दैनिक समाचार पत्र
'अनंत ज्ञान' की प्रति प्राप्त करने समाचार, विज्ञापन, शुभकामना संदेश एवं निविदा प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें।
''अनंत ज्ञान – आपकी आवाज, आपका समाचार पत्र''

शिमला	सत्यदेव भारद्वाज, ब्यूरो चीफ , मो. 70181-60595
धर्मशाला	राजेश कुमार, जिला प्रभारी, मो. 98164-48474
सोलन	मोहन चौहान, जिला प्रभारी , मो. 94181-57519
मंडी	अनिल शर्मा, ब्यूरो चीफ, मो. 94189-80288
हमीरपुर	विक्रम ठटवालिया, ब्यूरो चीफ, मो. 94180-03422
बिलासपुर	अरुण डोगरा, जिला प्रभारी , मो. 90159-09310
चंबा	राहुल सहगल, वरिष्ठ संवाददाता , मो. 78278-66759
ऊना	राजेश शर्मा, ब्यूरो चीफ , मो. 98163-96500
कुल्लू एवं लाहौल/स्पीति	कमलेश वर्मा, जिला प्रभारी, मो. 86298-97600
पठानकोट	अशोक ठाकुर, विशेष संवाददाता , मो. 94184-85666
चंडीगढ़/मोहाली	गुरनाम सागर, स्टाफ रिपोर्टर , मो. 99153-26615

Head Office:- Plot No.8, Phase-II, Ind. Area Nagrota Bagwan, Distt. Kangra (H. P.)- 176047
Contact: 01892-299098, 98168-75517
Email: anantgyaanmedia@gmail.com